सोशल मीडिया से जुड़ें

DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 229, नई दिल्ली, रविवार 26 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 ...'प्रतिहार षष्ठी या सूर्य षष्ठी (छठ पूजा)' के अवसर पर अवकाश घोषित
06 परीक्षा में नवाचार के समांतर चुनौतियां
08 दो आईईडीज़ और एक पिस्तौल सहित आतंकवादी मॉड्यूल का मुख्य संचालक गिरफ्तार

राष्ट्रीय सहकारी संगठनों का साझा सपना – भारत टैक्सी

[सशक्त ड्राइवर, भरोसेमंद सेवा – भारत टैक्सी का नया अध्याय]

भारत की सड़कों पर सहकारिता की एक नई क्रांति जन्म ले रही है, जो मेहनतकश ड्राइवरों को सशक्त बनाएगी, यात्रियों को किफायती और सुरक्षित सवारी का भरोसा देगी, और सामाजिक-आर्थिक समानता की दिशा में एक मजबूत कदम उठाएगी। 'भारत टैक्सी' – यह सिर्फ एक सेवा नहीं, बल्कि एक मिशन है, जो ओला-उबर जैसे दिग्गजों को चुनौती देगा और सहकारिता के सिद्धांतों पर नई इबारत लिखेगा। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्च 2025 के वादे ने अब ठोस आकार लिया है। 'सहकार टैक्सी' के रूप में शुरू हुआ यह सपना अब 'भारत टैक्सी' बनकर नवंबर 2025 में सॉफ्ट लॉन्च के लिए तैयार है, और दिसंबर से दिल्ली व गुजरात में अपनी रफ्तार पकड़ेगा। ऐप-आधारित सेवा के साथ-साथ प्रीपेड बूथों के जरिए यह समावेशी, सस्ती और विश्वसनीय सवारी का वादा करता है।

'भारत टैक्सी' सहकारिता की एक ऐसी मिसाल है, जो राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी), भारतीय कृषक उर्वरक सहकारी लिमिटेड (इफको), गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (जीसीएमएमएफ) और आठ अन्य सहकारी संस्थाओं के साझा संकल्प से जन्मी है। जून 2025 में पंजीकृत इस बहु-राज्य सहकारी कैब कोऑपरेटिव लिमिटेड को 300 करोड़ रुपये की स्वावलंबी पूंजी का बल प्राप्त है, जो बिना सरकारी हिस्सेदारी के आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। इसका ध्येय स्पष्ट है – ड्राइवरों को उनकी मेहनत का पूरा फल देना और यात्रियों को किफायती, पारदर्शी व विश्वसनीय सेवा प्रदान करना। जहां ओला-उबर जैसे प्लेटफॉर्म 20-30% कमीशन वसूलते हैं, 'भारत टैक्सी' बिना कमीशन या न्यूनतम कमीशन के साथ ड्राइवरों की आय को बढ़ावा देगी। सर्ज प्राइसिंग का बोझ न होने से यह सेवा हर वर्ग के लिए सस्ती होगी। चाहे सुबह की भागदौड़ हो, शादी का मौसम हो, या बारिश की रात, किराया हमेशा स्थिर रहेगा। यह न केवल यात्रियों को आर्थिक राहत देगा, बल्कि ड्राइवरों को अनिश्चितता से मुक्ति दिलाकर उनके जीवन में स्थिरता लाएगा।

'भारत टैक्सी' की सबसे बड़ी शक्ति इसकी समावेशी सोच है, जो तकनीक और परंपरा का अनूठा संगम रचती है। यह ऐप-आधारित सेवा होते हुए भी उन लोगों को गले लगाती है, जो डिजिटल दुनिया से कम वाकिफ हैं। एयरपोर्ट, मेट्रो स्टेशन, रेलवे स्टेशन और बस अड्डों पर प्रीपेड बूथ स्थापित किए जाएंगे, जहां स्मार्टफोन के बिना भी बुकिंग आसान होगी। यह सुविधा बुजुर्गों, ग्रामीण यात्रियों और तकनीकी रूप से कम सक्षम लोगों के लिए एक वरदान होगी। टू-व्हीलर, कार, ऑटो-रिक्शा से लेकर लग्जरी गाड़ियों तक की व्यापक रेंज, प्रति ट्रिप या आठ घंटे के पैकेज में उपलब्ध होगी, जो हर जरूरत को पूरा करेगी। सुरक्षा के लिए जीपीएस ट्रैकिंग, इमरजेंसी बटन और सत्यापित ड्राइवरों की व्यवस्था इसे निजी ऑपरेटरों से कहीं अधिक भरोसेमंद बनाएगी। आईआईएम बेंगलुरु द्वारा मांग का गहन अध्ययन सुनिश्चित करेगा कि यह सेवा देश के कोने-कोने तक पहुंचे। दिल्ली और गुजरात से शुरू होकर, यह क्रांति चरणबद्ध रूप से पूरे भारत को जोड़ेगी।

'भारत टैक्सी' की आत्मा इसके ड्राइवर हैं, जो इस मिशन की रीढ़ बनकर सहकारिता की नई मिसाल गढ़ रहे हैं। अब तक दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश से 614 ड्राइवर इस क्रांति का हिस्सा बन चुके हैं—दिल्ली से 254, गुजरात से 150, महाराष्ट्र से 110 और उत्तर प्रदेश से 100। ये ड्राइवर न केवल वाहन चलाएंगे, बल्कि सहकारी समिति के सदस्य के रूप में इसके संचालन में हिस्सेदारी करेंगे और भविष्य में डायरेक्टर स्तर तक पहुंचकर सच्चे उद्यमी बन सकेंगे। इस योजना का ध्येय ड्राइवरों को उनकी मेहनत का पूरा हक दिलाना और यात्रियों को सुरक्षित, किफायती सेवाएं प्रदान करना है। सहकारी समिति ड्राइवरों का नेटवर्क मजबूत करने के लिए अन्य संगठनों से गठजोड़ बढ़ा रही है, ताकि यह मॉडल न्यूनतम कमीशन और अधिकतम मुनाफे के साथ ड्राइवरों को सशक्त बनाए। तेलंगाना गिग एंड प्लेटफॉर्म वर्कर्स यूनियन जैसे संगठनों ने इसे ड्राइवर-केंद्रित दृष्टिकोण बताकर इसका जोरदार स्वागत किया है।

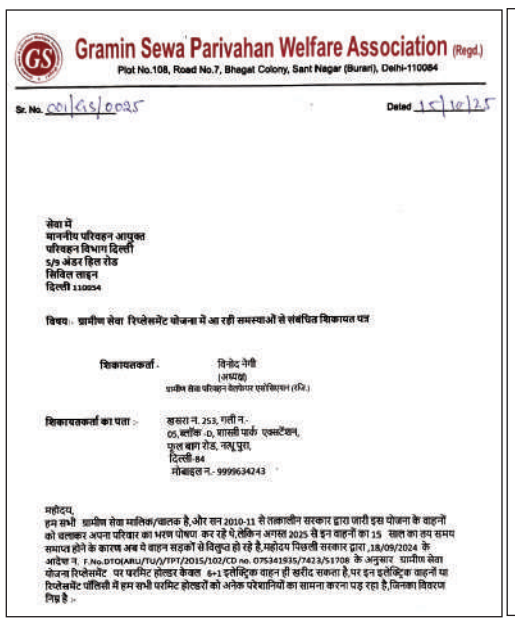

हालांकि, राह आसान नहीं है। ओला-उबर जैसे दिग्गजों का विशाल ग्राहक आधार, मजबूत तकनीकी ढांचा और आक्रामक मार्केटिंग 'भारत टैक्सी' के लिए चुनौती खड़ी करते हैं। इस प्रतिस्पर्धा में टिकने के लिए न केवल तकनीकी उत्कृष्टता, बल्कि व्यापक जन-जागरूकता और ड्राइवरों का अटूट भरोसा जीतना जरूरी होगा। दिसंबर 2025 में ऐप लॉन्च की तैयारियां जोरों पर हैं, और टेक पार्टनर का चयन जल्द पूरा होगा। फिर भी, शुरुआती दौर में तकनीकी खामियां या सीमित ड्राइवर नेटवर्क मांग को पूरा करने में बाधा बन सकते हैं। प्रीपेड बूथों का रखरखाव और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच भी चुनौतीपूर्ण होगा। बावजूद इसके, आईआईएम बेंगलुरु की सटीक मार्केटिंग रणनीति और सहकारी संगठनों का मजबूत नेटवर्क 'भारत टैक्सी' को बाजार में स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा। सहकारी मॉडल की ताकत इसे बाजार की अस्थिरताओं से मुक्त रखेगी, जो इसे दीर्घकालिक सफलता का प्रबल दावेदार बनाती है।

'भारत टैक्सी' पारदर्शिता और सामाजिक न्याय का एक प्रखर प्रतीक है, जो ड्राइवरों को शोषण से मुक्ति दिलाएगी और यात्रियों को किफायती, सुरक्षित सवारी का भरोसा देगी। इसका असली इम्तिहान तब होगा, जब यह सड़कों पर दौड़ेगी और ओला-उबर जैसे दिग्गजों के वर्चस्व को चुनौती देगी। क्या यह ड्राइवरों का अटूट विश्वास जीत पाएगी? क्या यह लाखों यात्रियों की उम्मीदों पर खरा उतरेगी? ये सवाल समय के साथ जवाब पाएंगे, लेकिन एक सचाई निर्विवाद है—'भारत टैक्सी' सहकारिता की एक नई मशाल है। यह महज एक परिवहन सेवा नहीं, बल्कि लाखों ड्राइवरों को सशक्त उद्यमी बनाने और यात्रियों को भरोसेमंद विकल्प देने का एक क्रांतिकारी मिशन है। दिसंबर 2025 से दिल्ली और गुजरात की सड़कों पर शुरू होने वाली यह यात्रा जल्द ही पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोएगी। यह न केवल मंजिलों तक ले जाएगी, बल्कि समृद्धि, समानता और आत्मनिर्भरता की नई राहें खोलेगी। तो, क्या आप इस ऐतिहासिक क्रांति की सवारी के लिए तैयार हैं?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

ग्रामीण सेवा मुद्दों को लेकर आने वाली परेशानियों के निदान के लिए परिवहन आयुक्त को दिया ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आप सभी भाइयों को सूचित करना चाहते है,, ग्रामीण सेवा से संबंधित कई मुद्दों जैसे केवल इलेक्ट्रिक श्रेणी के साथ C N G में भी रजिस्टर्ड करने की प्रक्रिया,,जो समय पर अपने वाहन के परमिट जमा नहीं करा पाए,वे अब कैसे अपने वाहन के कागज जमा करे,जो समय पर परमिट भी जमा न करा पाए और अपना वाहन भी स्क्रैप करा दिए उनके बारे में,चालानों के बारे में हमारी संस्था ग्रामीण सेवा परिवहन वेलफेयर एसोसिएशन (रजि) ने माननीय परिवहन आयुक्त को दिनांक 15 नवंबर 2025 एक ज्ञापन TPT /2025/42460 दिया था,जो अब SCOT-3 को कार्यवाही के लिए फॉरवर्ड हो गया है,, और माननीय M L O टैक्सी यूनिट को भी दिनांक 24 नवंबर 2025 को ज्ञापन न. 6450/DTO/TU/24/10/2025 दिया है, उम्मीद है जल्दी इन मुद्दों पर कार्यवाही होगी,,,आप सभी से विनती है,यदि कोई भी ग्रामीण सेवा चालक/परिचालक परिवहन मुख्यालय जाए तो कृपया उपरोक्त पत्रों का अपडेट जरूर ले,,,और एक बार संबंधित अधिकारियों से इस बारे में जरूर मिले

विनोद नेगी (अध्यक्ष)
ग्रामीण सेवा परिवहन वेलफेयर एसोसिएशन (रजि)

Gramin Sewa Parivahan Welfare Association (Regd.)
Plot No.108, Road No.7, Bhagat Colony, Sant Nagar (Burari), Delhi-110084

Sr. No. 001/GS/0025 Dated 15/10/25

सेवा में
माननीय परिवहन आयुक्त
परिवहन विभाग दिल्ली
5/9 अंडर हिल रोड
सिविल लाइन
दिल्ली 110054

विषय:- ग्रामीण सेवा रिप्लेसमेंट योजना में आ रही समस्याओं से संबंधित शिकायत पत्र

शिकायतकर्ता :- विनोद नेगी (अध्यक्ष) ग्रामीण सेवा परिवहन वेलफेयर एसोसिएशन (रजि.)

शिकायतकर्ता का पता :- खसरा न. 253, गली न.- 05, ब्लॉक -D, शास्त्री पार्क एक्सटेंशन, फूल बाग रोड, नत्थू पुरा, दिल्ली-84 मोबाइल न.- 9999634243

महोदय,
हम सभी ग्रामीण सेवा मालिक/चालक है,और सन 2010-11 से तत्कालीन सरकार द्वारा जारी इस योजना के वाहनों को चलाकर अपना परिवार का भरण पोषण कर रहे थे,लेकिन अगस्त 2025 से इन वाहनों का 15 साल का तय समय समाप्त होने के कारण अब ये वाहन सड़कों से विलुप्त हो रहे है,महोदय पिछली सरकार द्वारा ,18/09/2024 के आदेश न. F.No.DTO(ARU/TU/)/TPT/2015/102/CD no. 075341935/7423/51708 के अनुसार ग्रामीण सेवा योजना रिप्लेसमेंट पर परमिट होल्डर केवल 6+1 इलेक्ट्रिक वाहन ही खरीद सकता है,पर इन इलेक्ट्रिक वाहनों या रिप्लेसमेंट पॉलिसी में हम सभी परमिट होल्डरों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है,जिनका विवरण निम्न है :-

डॉ. राजकुमार यादव बने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के स्टार प्रचारक

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में निभाएंगे अहम भूमिका, पार्टी नेतृत्व ने जताया विश्वास

परिवहन विशेष न्यूज, राउरकेला - समाजसेवी एवं ओडिशा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव को पार्टी ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए घोषित स्टार प्रचारकों की सूची में शामिल किया है। इस निर्णय के साथ पार्टी नेतृत्व ने डॉ. यादव पर पूर्ण विश्वास जताते हुए कहा है कि वे बिहार में पार्टी संगठन के विस्तार और जनसंपर्क अभियान को सशक्त दिशा प्रदान करेंगे। डॉ. यादव लंबे समय से छात्र, युवा और श्रमिक वर्ग के मुद्दों पर सक्रिय रहते आए हैं। सड़क सुरक्षा, भ्रष्टाचार विरोधी नीति, श्रमिक कल्याण और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में उनकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। पार्टी सूत्रों के अनुसार, बिहार चुनाव में उनकी जनसंपर्क क्षमता, संगठनात्मक पकड़ और सशक्त वक्तृत्व शैली पार्टी को नई गति प्रदान करेगी। डॉ. यादव ने अपनी नियुक्ति पर कहा "राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री श्री अजित दादा पवार और राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सांसद श्री प्रफुल पटेल जी ने जो विश्वास मुझ पर जताया है, उसके लिए मैं आभारी हूँ। बिहार की जनता तक पार्टी की नीति, न्याय और विकास का संदेश पहुँचाना मेरा संकल्प है।" सूत्रों के मुताबिक, डॉ. यादव जल्द ही बिहार के विभिन्न जिलों में जनसभाओं और प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से प्रचार अभियान की शुरुआत करेंगे। उनके नेतृत्व में पार्टी को व्यापारियों, छात्रों और युवाओं में नई ऊर्जा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

SCAN ME

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

लाभ पंचमी आज

लाभ पंचमी के दिन व्यवसाय से जुड़े लोग मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करते हैं। इस दिन विशेष रूप से बहीखातों और लेखा-जोखा आदि की पूजा की जाती है। माना जाता है कि इस दिन की गई पूजा से साधक के सौभाग्य में वृद्धि होती है और उसे मां लक्ष्मी का आशीर्वाद मिलता है। इतना ही नहीं, दिन को किसी नए काम की शुरुआत के लिए शुभ माना गया है।

लाभ पंचमी का शुभ मुहूर्त

==========

कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि 26 अक्टूबर को ब्रह्म मुहूर्त 3 बजकर 48 मिटन पर शुरू हो रही है। वहीं इस तिथि का समापन 27 अक्टूबर को सुबह 6 बजकर 4 मिनट पर होगा। ऐसे में उदया तिथि के अनुसार, इस बार लाभ पंचमी रविवार, 26 अक्टूबर को मनाई जाएगी।

लाभ पंचमी पूजा मुहूर्त - सुबह 6 बजकर 29 मिनट से सुबह 10 बजकर 13 मिनट तक

लाभ पंचमी का महत्व

==========

लाभ पंचमी का पर्व दीपावली के पांचवें पड़ता है। यह तिथि व्यवसायी लोगों के लिए खास महत्व रखती है। नई दुकान, व्यवसाय या फैक्ट्री शुरु करने के लिए इस दिन को अत्यंत शुभ माना गया है। इसी के साथ लाभ पंचमी पर नए खाता-बही का शुभारंभ करना भी काफी शुभ माना गया है।

इस दिन नए बहीखातों पर शुभ-लाभ और स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर उनका उद्घाटन भी किया जाता है। कई साधक इस दिन पर व्रत भी करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इससे आगामी वर्ष में व्यापार में वृद्धि के योग बनते हैं। साथ ही लाभ पंचमी की पूजा से व्यापार में उन्नति, सौभाग्य, परिवार में सुख-शांति और सभी प्रकार के कष्टों के निवारण होता है।

लाभ पंचमी की पूजा विधि

==========

लाभ पंचमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत हो जाएं। इसके बाद सूर्य देव को अर्घ्य देने के बाद पूजा स्थल पर भगवान गणेश, शिव जी और देवी लक्ष्मी की मूर्ति स्थापित करें। गणेश जी को चंदन, सिंदूर, फूल और दूर्वा आदि अर्पित करें। भगवान शिव की पूजा में बेलपत्र, धतूरे के फूल और सफेद वस्त्र अर्पित करें। लक्ष्मी जी की पूजा में हलवा और पूड़ी का भोग लगाएं और समृद्धि व सफलता की प्रार्थना करें। अंत में आरती करें और सभी लोगों में पूजा का प्रसाद बांटें।

धन और सौभाग्य का दिन है लाभ पंचमी

===

लाभ पंचमी का नाम 'लाभ' यानी आर्थिक और भौतिक फायदा और 'पंचमी' यानी पांचवीं तिथि से मिलकर बना है। यह पर्व दीपावली उत्सव का समापन करता है और समृद्धि, सौभाग्य और ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है। शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा से जीवन में आर्थिक स्थिरता, बाधा-मुक्ति और कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

इस श्लोक ('लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।') के मुताबिक जिनके हृदय में भगवान निवास करते हैं, उन्हें सदा लाभ और विजय प्राप्त होती है। गुजरात में लाभ पंचमी को गुजराती नववर्ष का पहला कार्यदिवस माना जाता है। इस दिन दीपावली के बाद बंद दुकानें और व्यवसाय दोबारा खोले जाते हैं। व्यापारी खाता-बही पर 'श्री', 'स्वास्तिक' और 'ॐ' अंकित कर पूजन करते हैं, ताकि वर्ष भर लाभ और समृद्धि बनी रहे।

धनवान बनने के लिए एक-एक कण का संग्रह करना पडता है और गुणवान बनने के लिए एक-एक क्षण का सदुपयोग करना पड़ता है।

होश रहे कि इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों-जन्म तक काम आता है। जीवन को छोटी-छोटी खुशियों में ही जी लिया जाये तो बेहतर है क्योंकि बड़ी-बड़ी खुशियों के इंतजार में तो जिंदगी निकल जाती है। ध्यान रहे कि चरित्र एक वृक्ष है और प्रतिष्ठा/यश/सम्मान उसकी छाया लेकिन विडंबना यह है कि वृक्ष का ध्यान बहुत कम लोग रखते है और छाया सबको चाहिए। कुछ लोग अपनी अकड़ की वजह से कीमती रिश्ते खो देते हैं और कुछ लोग रिश्ते बचाते-बचाते अपनी कदर खो देते हैं।

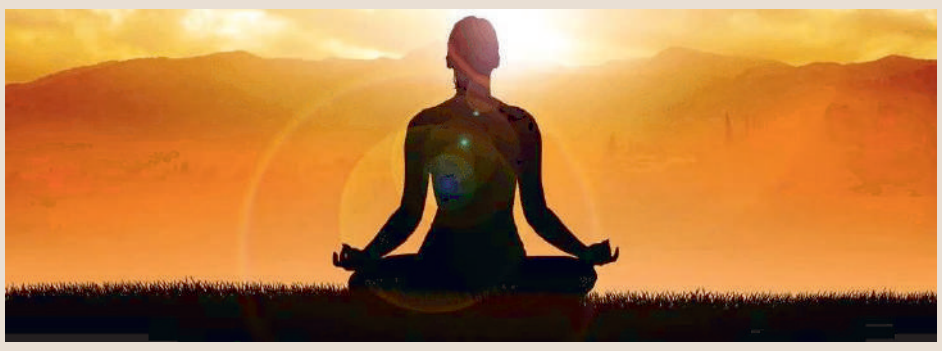

जोड़ों की कट-कट और दर्द का रहस्य और उसका आयुर्वेदिक समाधान

कभी झुकने पर कट-कट की आवाज, बैठने पर घुटनों में दर्द, या सुबह उठते ही कमर और गर्दन में जकड़न महसूस होती है? तो समझिए — शरीर आपको संधि दोष (Joint Imbalance) का संकेत दे रहा है!

कारण क्या है? आयुर्वेद के अनुसार, यह सब "वात दोष" के बढ़ने से होता है। जब वात असंतुलित हो जाता है, तो वह जोड़ों के स्नेह (lubrication) को सुखा देता है। यही कारण है कि शरीर में कट-कट, दर्द और अकड़न महसूस होती है।

लक्षण

1. कमर, गर्दन और घुटनों में दर्द
2. शरीर झुकाने पर आवाज आना
3. चलने-फिरने में जकड़न
4. सीढ़ियाँ चढ़ते समय घुटनों में जलन या कमजोरी
5. थकान या कमजोरी महसूस होना

आयुर्वेदिक दवा और उपाय.

1. योगराज गुग्गुलः- वात दोष को शांत करता है, संधियों में स्नेह (oiliness) बढ़ाता है। सेवन विधि. 2-2 गोली दिन में दो बार गुनगुने पानी से भोजन के बाद।

2. महारास्नादि काढ़ाः- नसों और जोड़ों की जकड़न को दूर करता है, रक्तसंचार सुधरता है। सेवन विधि. 2 चम्मच काढ़ा बराबर गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में 2 बार।

3. अश्वगंधा चूर्ण + शुद्ध शिलाजीतः- यह संयोजन जोड़ों को मज़बूती और नई ऊर्जा देता है। सेवन विधि.. 1 चम्मच अश्वगंधा + 1 चुटकी शिलाजीत, दूध के साथ रात में सोने से पहले।

4. संधिवात तेल या महाबल तेल से मालिशः- रोज़ सुबह-शाम हल्के हाथों से दर्द वाले स्थान पर 10 मिनट तक मालिश करें।फिर हल्का गुनगुना पानी से स्नान करें।

भोजन और जीवनशैली.

ठंडी चीज़ें (ठंडा पानी, बर्फ, ठंडी दही) से बचें।

रोज़ हल्का व्यायाम करें — सूर्य नमस्कार, त्रिकोणासन, भुजंगासन लाभकारी हैं।

भोजन में मेथी, लहसुन, तिल का तेल, गुनगुना दूध शामिल करें।

देर रात जागना और तनाव दोनों से बचें।

विशेष घरेलू नुस्खा.

मेथी दाना + हल्दी + अजवाइन

इन्हें बराबर मात्रा में पीसकर रोज़ 1 चम्मच गुनगुने पानी से लें।

इससे जोड़ों में तेलीयता बढ़ती है और दर्द में प्राकृतिक आराम मिलता है।

आयुर्वेद कहता है — "जहाँ स्नेह है, वहाँ स्थिरता है।"

इसलिए शरीर को तेल, विश्राम और सही आहार दें। कट-कट की आवाज़ भी शांत होगी और जीवन फिर से लचीला और स्फूर्तिदायक बनेगा।

आयुर्वेद अपनाएं स्वस्थ जीवन पाएं.

आत्मबल

आश्रय, मनुष्य को निःसत्व (hollow) कर देता हैं और आशा, अशक्त (weak) कर देती है, इसलिये अपने आत्मबल पर जीना आरम्भ कीजिए। हमारा, हमसे अच्छा साथी और चिंतक कोई नहीं है। ढूँढोगे तो हर नियति की मार्ग मिल जाएगा, सोचोगे तो हर बात का कारण मिल जाएगा। आप कभी भी किसी के बारे में कोई धारणा दृढ़ न कर लेना, क्योंकि जब उसका समय बदल जायेगा, तब आपकी राय भी बदल जायेगी। समय और अवधि कैसी भी हो, कट ही जाती है.. समय को, अपने समय से बीतने में, समय नही लगता और सामने वाले का साहस देखकर ईश्वर को भी अपना निर्णय बदलने में समय नही लगता।

हम सभी परमात्मा की सुंदर और विशेष रचनाएँ हैं।जिनका लक्ष्य है अपने जीवन में ऐसे बेहतरीन कार्य करना जो हमारे और दूसरों के लिए लाभकारी हों.

पीड़ा कितनी भाग्यशाली है जिसे पाकर लोग, अपनों को याद करते है और धन कितना अभागा है जिसे पाकर लोग अधिकतर अपनों को भूल जाते हैं। परामर्श हारे हुए का, अनुभव जीते हुए का और समझ स्वयं की, मनुष्य को कभी जीवन मे हारने नहीं देती।

!!!...Be Selective With Your Battles. Sometimes, Peace is Better Than Being Right...!!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

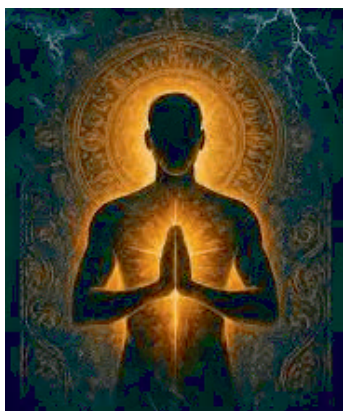

नेचुरोपैथी हर रोग का मूल कारण समझकर उसका प्राकृतिक समाधान देती है।

यह लेख लोगों को सोचने पर विवश कर देगा कि दवाओं से नहीं, प्रकृति से उपचार संभव है।

हर रोग का इलाज –
नेचुरोपैथी के पास

"रोग कभी शत्रु नहीं होता, वह तो हमारे जीवन की गलतियों का दर्पण है।"

यह वाक्य नेचुरोपैथी की आत्मा है।

आज हर घर में कोई न कोई रोग से पीड़ित है—डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, थायराइड, कब्ज, मोटापा, अवसाद, त्वचा रोग... और हम दवाओं पर निर्भर होकर जीने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन सवाल ये है कि...

क्या दवाएँ वाकई ठीक कर रही हैं, या बस दबा रही हैं?

नेचुरोपैथी कहती है:
शरीर स्वयं वैद्य है।

जब शरीर बीमार होता है, तो वह संकेत देता है कि कहीं कुछ गड़बड़ है—

जैसे जीवनशैली, खान-पान, सोच-विचार...

और यदि इन कारणों को नहीं बदला गया, तो दवाओं के सहारे भी स्वास्थ्य संभव नहीं।

अब आइए देखें, नेचुरोपैथी कैसे बड़े-बड़े रोगों को जड़ से ठीक करने की क्षमता रखती है.?

---

1. डायबिटीज (मधुमेह):

इंसुलिन नहीं, अनुशासन चाहिए

नेचुरोपैथी में डायबिटीज को "लाइफस्टाइल डिसऑर्डर" माना गया है।

शरीर की कोशिकाएँ जब विषाक्त हो जाती हैं और पाचन तंत्र सुस्त हो जाता है, तो ग्लूकोज का उपयोग रुक जाता है।

इलाज:

ताजे फल-सब्जियाँ, अंकुरित आहार
सूर्यस्नान, वायुपान, जल उपवास
योग और प्राणायाम से अग्नि शक्ति को जागृत करना
पेट की गीली पट्टी, मृत्तिका लेप

---

2. कब्ज और पेट के रोग:

रोगों की जड़...

पेट ठीक नहीं तो कुछ भी ठीक नहीं। कब्ज से गैस, सिरदर्द, त्वचा रोग, बवासीर, मोटापा, थकावट आदि सब जन्म लेते हैं।

इलाज:

रात को गुनगुना नींबू पानी
फाइबरयुक्त आहार और ताजे फल
एनिमा थेरेपी
मिट्टी की पट्टी और भाप स्नान

---

3. त्वचा रोग:

भीतर की गंदगी, बाहर का संदेश

एक्ने, एक्जिमा, सोरायसिस जैसे रोग शरीर में जमे टॉक्सिन के कारण होते हैं। जब लिवर और आंतें साफ नहीं होतीं, तो शरीर त्वचा के माध्यम से उसे बाहर निकालता है।

इलाज:

नीम और त्रिफला का प्रयोग
उपवास और फलाहार
मिट्टी लेप और ठंडी पट्टी
जल चिकित्सा और धूप स्नान

---

4. हाई ब्लड प्रेशर:

तनाव नहीं, संतुलन चाहिए

उच्च रक्तचाप केवल नमक से नहीं बढ़ता, यह मन और शरीर के असंतुलन से आता है।

नेचुरोपैथी कहती है कि—
शांति और सादगी सबसे बड़ी दवा है।

इलाज:

गहरी साँसों वाला प्राणायाम
सेंधा नमक और कच्चे भोजन का सेवन
पैर की गर्म पट्टी, रीढ़ की ठंडी पट्टी
मेडिटेशन और शांत वातावरण

---

5. मोटापा:

भूख नहीं, भ्रम है

मोटापा भोजन की मात्रा से नहीं, उसकी गुणवत्ता और पाचन की शक्ति से जुड़ा है। जब शरीर जमी हुई गंदगी से भरा होता है, तो वज़न बढ़ता है।

इलाज:

सप्ताह में एक दिन उपवास या फलाहार
सूर्य नमस्कार और चलना
मिट्टी और जल चिकित्सा
संतुलित और सात्विक आहार

---

6. मानसिक रोग:

शरीर नहीं, मन की सफाई

डिप्रेशन, एंग्जायटी, अनिद्रा—
ये सब हमारी जीवनशैली, सोच और वातावरण का परिणाम हैं।

दवा तो केवल तात्कालिक राहत देती है, जड़ तक नहीं जाती।

इलाज:

मौन साधना और ध्यान
सूर्योदय में भ्रमण
शरीर की सफाई से मन की शांति
धूप स्नान, सादगीपूर्ण जीवन

नेचुरोपैथी:

रोग नहीं, रोगी का इलाज करती है

यह पद्धति व्यक्ति को उसके पूरे स्वरूप में देखती है—

शरीर, मन और आत्मा।

यही कारण है कि नेचुरोपैथी से असली इलाज संभव है।

रोगों को मिटाने का एकमात्र रास्ता—
प्राकृतिक जीवनशैली में वापसी।

तो आइए, रोगों से लड़ना छोड़ें और प्रकृति से जुड़ें।

दवा नहीं, दिशा बदलें।

नेचुरोपैथी अपनाएँ, जीवन में सच्चा आरोग्यम्-पाएँ।

मुर्दों की राख से पिंडदान तक: नागा साधुओं की अजीबोगरीब दुनिया के रहस्य जो आप नहीं जानते

नागा साधुओं की रहस्यमयी दुनिया: तपस्या, भस्म और अद्भुत शक्तियां

नागा साधुओं को देखकर अक्सर लोग डर जाते हैं या उनसे दूरी बना लेते हैं, क्योंकि उनकी दुनिया रहस्यमयी और अजीब प्रतीत होती है। लेकिन नागा साधु बनने की प्रक्रिया किसी साधारण साधना से कहीं ज्यादा कठिन है। उनके आशीर्वाद से बड़े से बड़े कर्म कटते हैं और व्यक्ति मोक्ष की ओर अग्रसर होता है।

1. परिवार के जीवित सदस्यों का पिंडदान नागा साधु बनने से पहले व्यक्ति की जांच-पड़ताल होती है। उसके बाद उसे अपने परिवार का पिंडदान करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि साधु बनने के बाद उसका सारा संसार उसका परिवार बन जाता है, इसलिए यह फर्ज पहले ही पूरा कराया जाता है।

2. कामवासना पर नियंत्रण निवस्त्र रहकर तपस्या करने वाले नागा साधुओं के लिए कामवासना को साधना सबसे बड़ा तप माना जाता है। यह बेहद कठिन प्रक्रिया है, जिसे मास्टर करने में सालों लग जाते हैं।

3. हिमालय में वर्षों की तपस्या नागा साधु सालों तक भूखे-प्यासे जंगलों और हिमालय में तपस्या करते हैं। जब उनकी कामवासना शांत होती है, तब वे अपनी ऊर्जा का सही दिशा में प्रयोग करते हैं।

4. भूत और भविष्य की दृष्टि इन साधुओं में वह शक्ति होती है कि वे व्यक्ति का भूत और भविष्य देख सकते हैं। हालांकि, यह क्षमता वे आम लोगों से छुपाते हैं। कई बार वे मदद भी करते हैं, और उनके दर्शन मात्र से जन्मों-जन्मों के पाप कर्म कट जाते हैं।

5. भस्म और रुद्राक्ष नागा साधुओं की शक्ति का रहस्य उनकी भस्म और रुद्राक्ष में निहित है। भस्म कभी-कभी मुर्दों की राख होती है और रुद्राक्ष असली और शक्तिशाली होते हैं। यह नकारात्मक शक्तियों को दूर रखने में मदद करते हैं।

नागा साधु कभी किसी को श्राप नहीं दे सकते और न ही किसी से नफरत कर सकते हैं। सालों की तपस्या और साधना ही उन्हें साधु बनाती है। अगर आपको कभी अचानक नागा साधु मिल जाए, तो उनके आशीर्वाद लेना बिलकुल न भूलें।

बार-बार पेशाब आना और पेशाब में जलन – होम्योपैथी से प्राकृतिक आराम!

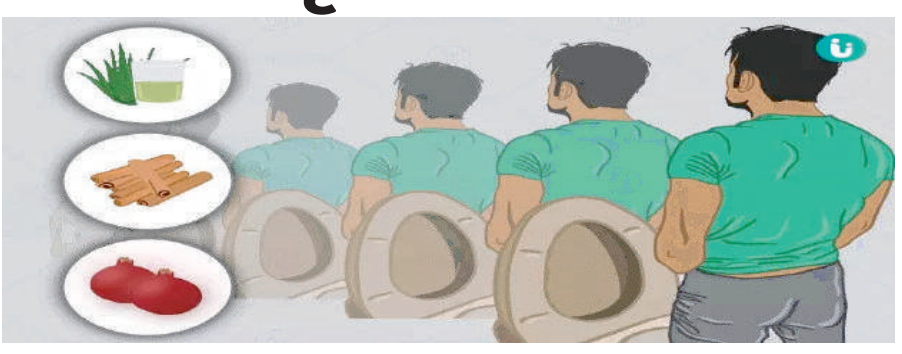

अगर पेशाब करते समय तेज़ जलन महसूस हो, बार-बार पेशाब जाने का दबाव बने, या मूत्राशय खाली होने के बाद भी अधूरा लगे – तो यह मूत्र संक्रमण (UTI), सूजन या पेशाब की नलियों में हल्की इंफ्लेमेशन का संकेत हो सकता है। ऐसी स्थिति में होम्योपैथिक दवाएँ बेहद सुरक्षित, प्रभावी और बिना साइड इफेक्ट के राहत देती हैं।

1. Cantharis – जलती हुई पेशाब के लिए सबसे फर्स्ट चॉइस दवा

लाभ:

1. पेशाब में आग जैसी जलन और दर्द,
2. हर 5–10 मिनट में पेशाब की इच्छा होना,
3. पेशाब करते समय या बाद में चुभन और जलन।

उपयोग (How to Use): शक्तिः 30C, मात्राः 3–4 बार, 4–5 बूंद या 2 गोली जीभ पर रखें।

इलाज क्यों असरदार? यह मूत्राशय (Bladder) और पेशाब की नलियों की सूजन को शांत करता है और तुरंत आराम दिलाता है। हर घर की होम्योपैथी किट में ज़रूर होनी चाहिए।

2. Sarsaparilla – पेशाब के आखिरी हिस्से में जलन हो तो यही दवा

लाभः

1. पेशाब शुरू होने में दिक्कत और अंत में तेज़ जलन,
2. धार बहुत पतली निकलना या रुकना,
3. पानी जैसा पेशाब लेकिन जलन बहुत तेज़।

उपयोगः शक्तिः Mother Tincture (Q), मात्राः 10 बूंद आधा कप पानी में मिलाकर, दिन में 2–3 बार।

खासियतः यह पेशाब की नलियों के निचले हिस्से की सूजन को कम करती है और दर्द को तुरंत शांत करती है।

3. Apis Mellifica – जलन के साथ सूजन और पेशाब रुकना

लाभः

1. पेशाब कम निकलना या रुक-रुक कर निकलना,
2. जलन के साथ सूजन महसूस होना,
3. ठंडा लगाने से आराम और गर्म चीज़ों से बढ़ती तकलीफ।

उपयोगः शक्तिः 30C, मात्राः दिन में 2–3 बार, 4 बूंद या 2 गोली।

असर कैसे करता है? Apis शरीर की इन्फ्लेमेशन (सूजन) को कम करता है, मूत्राशय को शांत करता है और जलन में तुरंत राहत देता है।

क्यों ये दवाएँ घर में होनी चाहिए?

1. UTI और जलन अचानक शुरू होती है – ये तुरंत राहत देती हैं।
2. एंटीबायोटिक के मुकाबले बिना साइड इफेक्ट के काम करती हैं।
3. इम्यून सिस्टम को मजबूत कर दोबारा समस्या होने से रोकती हैं।

प्रकृति के नियम

खाना जो हम खाते हैं, 24 घण्टे के अंदर शरीर से बाहर निकल जाना चाहिए, वरना हम बीमार हो जायेंगे।
पानी जो हम पीते हैं, 04 घण्टे के अंदर शरीर से बाहर निकल जाना चाहिए, वरना हम बीमार हो जायेंगे ।
हवा जो हम सांस लेते हैं, कुछ सेकंड में ही वापस बाहर निकल जानी चाहिए, वरना हम मर ही जायेंगे ।
लेकिन यदि हम पुरानी बातों को बार बार याद करते रहेंगे और अपने अंदर दिन, महीने और सालों तक रखे रहते हैं । यदि इन पुरानी बातों को समय समय पर अपने अंदर से नहीं निकालेंगे तो एक दिन निश्चित ही हम मानसिक रोगी बन जायेंगे । निर्णय आपको लेना है की पुरानी बातों को भुला कर आप स्वास्थ्य रहना चाहते हैं या बार बार याद करके शरीर को रोगी बनाना है। यह निर्णय आपको लेना है क्योंकि शरीर आपका है ।

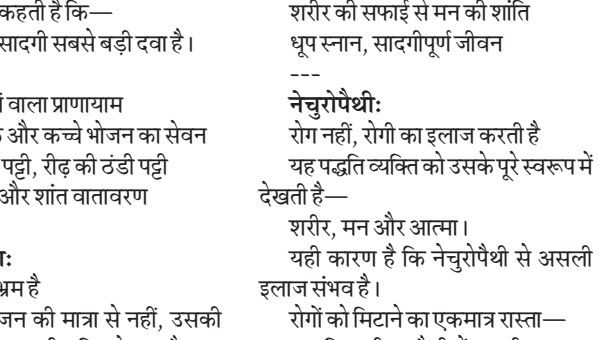

मस्तिष्क को उत्तेजित करने वाले व्यायाम और शारीरिक व्यायाम मिलकर डिमेंशिया को रोक सकते हैं

यह एक ऐसा रहस्य है जो विज्ञान की नवीनतम खोजों से उजागर हो रहा है! कल्पना कीजिए, आप का मस्तिष्क एक विशाल महासागर की तरह है, जहां विचारों की लहरें निरंतर बहती रहती हैं। जब आप पहेलियां सुलझाते हैं, नई भाषा सीखते हैं या संगीत बजाते हैं, तो यह मस्तिष्क की कोशिकाओं को मजबूत बनाता है, स्मृति को तेज करता है और अल्जाइमर जैसी बीमारियों से बचाव करता है। साथ ही, दौड़ना, योग या वजन उठाना जैसे शारीरिक व्यायाम रक्त प्रवाह बढ़ाते हैं, मस्तिष्क में ऑक्सीजन पहुंचाते हैं और सूजन को कम करते हैं। नवीनतम शोध, जैसे कि NIH की 2025 की स्टडी, बताते हैं कि व्यायाम मस्तिष्क की कोशिकाओं को अल्जाइमर से बचाने में मदद करता है, जबकि NPR की रिपोर्ट में 60 वर्ष के बाद जीवनशैली बदलाव से सोचने-समझने की क्षमता में सुधार दिखाया गया है। यह संयोजन न केवल डिमेंशिया के जोखिम को 20% तक कम करता है, बल्कि जीवन को अधिक जीवंत और सशक्त बनाता है – एक सच्चा अमृत जो उम्र के साथ चमकता रहता है!

छत्तीसगढ़ ड्राइवर्स महासंघ के मुखिया की बंद (स्ट्राइक) पर सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

छत्तीसगढ़ ड्राइवर्स महासंघ के मुखिया के द्वारा वाहन बंदी और उनके द्वारा बंदी के लिए किए गए चालकों के साथ दुर्व्यवहार के कारण पूरे देश के ड्राइवर समाज में गहरा आक्रोश व्याप्त है।

बिना पूर्व सूचना और सहमति के किसी भी राज्य में वाहन बंदी करना और ड्राइवर भाइयों के साथ दुर्व्यवहार करना अत्यंत निंदनीय और अनैतिक कृत्य है।

ड्राइवर समाज इस देश की रीढ़ है — उन्हें सम्मान और गरिमा के साथ जीने का अधिकार संविधान ने दिया है।

जो व्यक्ति ड्राइवरों के साथ अपमानजनक व्यवहार करता है, वह किसी भी स्तर पर ड्राइवर समाज का प्रतिनिधित्व या नेतृत्व करने के योग्य नहीं है।

नेतृत्व की वास्तविक योग्यता एक सच्चा नेता वही है जो

1. ड्राइवर समाज के हितों की रक्षा करे,
2. उनके सम्मान की रक्षा करे, और
3. अपने आचरण से समाज में विश्वास जगाए।

जो व्यक्ति समाज के लोगों के साथ दुर्व्यवहार करे या उनके अधिकारों की अनदेखी करे, वह नेतृत्व की कुर्सी पर बैठने का नैतिक अधिकार खो देता है।

आह्वान आइए, हम सब मिलकर

ड्राइवर समाज के सम्मान और गरिमा की रक्षा करें, और उन सभी ताकतों का विरोध करें जो हमारे समाज के हितों और एकता के लिए हानिकारक हैं।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति
"देश के 24 करोड़ ड्राइवरों की आवाज़"

हैदराबाद-बेंगलुरु स्लीपर बस में भीषण आग

नवदीप सिंह

19 लोगों की जलकर मौत हो गई। पिछले महीने ही जैसलमेर में भी ऐसी ही स्लीपर बस में आग लगी थी, जिसमें 20 लोगों ने जान गंवाई थी। अब समय आ गया है कि ज़िला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA) केवल स्कूल, कॉलेज, होटल और अस्पताल तक सीमित न रहे — बल्कि 1. बस ऑपरेटरों पर भी आपदा प्रबंधन प्लान और सेफ़्टी ऑडिट को सख़्ती से लागू करे।

2. हर साल जितनी मौतें बड़ी आपदाओं में नहीं होतीं, उससे ज़्यादा तो बस आग में झुलसकर हो रही हैं। इस तरह के लापरवाह बस ऑपरेटरों पर कार्रवाई ज़रूरी है। हमने पहले शटल बसों (4000 से अधिक) के लिए सेफ़्टी ऑडिट चेकलिस्ट तैयार की थी — कोई भी ज़िलाधिकारी चाहें तो मैं वह साझा करने को तैयार हूँ। अब यह मौत का सिलसिला रुकना ही चाहिए।

सार्थक संवाद-बेईमान होने से असफल होना ज्यादा अच्छा है- डॉ सविता चड्ढा

प्रस्तुति- डॉ. शंभू पंवार

बीस प्लैटिनम जुबली मना चुकी देश की अग्रणी साहित्यक संस्था अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति ने सार्थक संवाद की एक गरिमामयी श्रृंखला चलाई हुई है, जिसमें देश-विदेश के मूर्धन्य साहित्यकारों से सार्थक संवाद किया जाता है जिसका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण भी किया जाता है। इस बार प्रस्तुत है साहित्य की बहुआयामी प्रतिभा डॉ. सविता चड्ढा से प्रख्यात साहित्यकार/पत्रकार पंडित सुरेश नीरव की विचारपूर्ण बातचीत।

प्रश्न- सविता जी आप एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं यह सभी जानते हैं इस लिए इस मुद्दे पर मैं प्रश्न नहीं पूछूंगा। मैं पूछंगा वह प्रश्न जो कभी आपसे पूछे ही नहीं गए और अगर पूछे भी गए हों तो उन पर कभी उतनी चर्चा नहीं हुई, जितनी होनी चाहिए थी। तो मेरा पहला प्रश्न है कि क्या आपने कभी किसी से प्यार किया है?

उत्तर: प्यार तो किया, कब किया आपने पूछा है। तो जब मैं कालेज में पढ़ती थी तब किया। हुआ यूँ कि एक प्रेस फोटोग्राफर हमारे कालेज का फंक्शन कवर करने आये थे। मुझे पहले वर्ष के उस फंक्शन में चार बार पुरस्कार लेने स्टेज पर जाना हुआ था। उन प्रेस फोटोग्राफर का नाम सुभाष चड्ढा था और उनसे ही बाद में मेरी शादी भी हुई।

प्रश्न- क्या आपने कोई प्रस्ताव किया था या आपको प्रस्ताव किया गया था?

उत्तर: जब हम दोनों की पहली मुलाकात हुई तो चड्ढा साहेब ने दो-चार बात करने के बाद ही मुझसे कह दिया कि " हमें दोस्ती तभी रखनी होगी अगर हम शादी करेंगे।" ऐसे प्रश्न की मुझे आशा भी नहीं थी इस उस समय मेरी उम्र भी केवल 17 वर्ष की थी। मैंने उसी समय ही 'हां' बोल दिया और इस तरह हमारी मित्रता शुरू हो गई।

प्रश्न: आपकी उस वक्त उम्र क्या थी और क्या आप तब प्रेम कविताएँ लिखती थीं क्योंकि वह उम्र ही शायराना होती है?

उत्तर: वर्ष 1970 में, 16 वर्ष की उम्र में हायर सेकेंडरी करने के बाद ही मैंने कॉलेज में दाखिला लिया था और एक वर्ष के पश्चात ही मेरी मुलाकात सुभाष जी से हुई।। उस समय तो पढ़ाई का जुनून था तो प्रेम कविताएं वगैरह तो नहीं लिखी लेकिन जब पढ़ाई का लक्ष्य पूरा कर लिया और 19 वर्ष में मेरी नौकरी सरकारी पर्यटन मंत्रालय में लग गई तब सुभाष जी से मिलने के बाद अपने आप ही कविताएं बनने लगीं। मेरा पहला काव्य संग्रह 'योग-वियोग' के नाम से ही प्रकाशित हुआ था जिसमें मेरी सारी प्रेम कविताएं थी। यह बात अलग है कि समाज के भय से मैंने उन प्रेम कविताओं को कृष्ण और राधा के योग-वियोग के रूप में प्रस्तुत किया था।

प्रश्न- साहित्य के अलावा आप की रुचि और किन क्षेत्रों में रही है?

उत्तर: मुझे कॉलेज के दिनों में खेलों में बहुत रुचि रही, जब कॉलेज में मुझे चार पुरस्कार मिले थे उसमें से तीन खेलों के लिए थे और एक कमर्शियल ज्योग्राफी में डिस्टिंक्शन के लिए था। शॉट पुट, जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, ये मेरे प्रिय खेल रहे हैं। उदासी में मुझे संगीत सुनना बेहद पसंद है। अपने स्कूल टाइम में, एन सी सी के शिविरों में भाग लेना और स्कूल और कालेज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने में मेरी बेहद रुचि रही

प्रश्न: क्या इसमें भी आपको ट्राफी या पुरस्कार मिले हैं?

उत्तर: जी हां उन पुरस्कारों को और प्रमाण पत्र को मैंने संभाला हुआ है।

प्रश्न: आपकी 53 पुस्तकें प्रकाशित हैं जिसमें कविता संग्रह से कहानी संग्रहों की संख्या ज्यादा है। आप मूलत: अपने को कविता में अधिक सहज मानती हैं या कहानी-उपन्यास में।

उत्तर: लेखन की सारी विधाएं मुझे बहुत प्रिय है। मुझे कहानी लिखकर भी बहुत सुखद अनुभूति होती है। मेरे अब तक के लेखन में कहानी, कविता, लेख, उपन्यास, यात्रा वृतांत, पत्रकारिता पर लिखी मेरी पुस्तकें हैं। मैं नहीं जानती कैसे, पर साहित्य की कई विधाओं में मुझसे लिखा गया है। किस विधा के लेखन में सबसे अधिक रुचि है, मैं नहीं कह सकती परन्तु कविता लिखकर मुझे हमेशा ही सकूँ मिला है। काव्य लेखन मेरी प्रिय विधा है। मैंने यह स्वीकार किया है कि कविता अंतर्मन की बेटी है। कविता ईश्वर का आशीर्वाद है और भगवान का प्रसाद है।

प्रश्न: *साढे.पांच बज चुके हैं अब पिताजी आएंगे, देख लेना सबसे पहले मेरी चीज़ लाएंगे*

आपको यह पंक्तियाँ याद हैं। शायद किसी कव्वाली की हैं। और अगर याद हैं तो फिर वह खांसी भी याद होगी।

उत्तर: आपके इस प्रश्न ने मुझे बचपन की याद दिला दी यह पंक्तियां उस समय की है जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती थी और मुझे स्कूल के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना था। मुझे यही कव्वाली गानी थी और कव्वाली की रिहर्सल में मुझे खांसी शुरू हो गई और खांसी के दौरान हमारे हिंदी और संस्कृति की एक टीचर हुआ करती थी उनका नाम चंद्रकांता जी था। मेरी बार-बार खांसी को देखकर उन्होंने टीचर को कहा कि इन्हें इसमें नहीं रखना इन्हें बहुत खांसी आ रही है। घर में जाकर मैंने यह बात बताई तो मेरे नानी जी ने सारे टोटके करें मुझे गर्म पानी के गरारे कराए, देसी घी से गले की मालिश की, देसी घी की पट्टी सारी रात मेरे गले पर बांधे रखी। अगले दिन जब रिहर्सल में भाग लिया तो मुझे खांसी बिलकुल नहीं आई।

प्रश्न: इमली का बूटा, बेरी का पेड़ और पानीपत की वे संकरी गलियां बहुत याद आती होंगी। कुछ यादें हमारे दर्शकों से भी शेयर कीजिए। खासकर नानी जी की।

उत्तर: मेरी नानी जी श्रीमती राम प्यारी अपनी माता जी के पास पानीपत में रहती थी। मैंने अपनी नानी जी माँ को भी अकेले ही वहां रहते देखा था। विधवाओं का अकेले जीवन गुजारना बहुत जोखिम भरा था। मेरी नानी जी मेरे माँ के जन्म के कुछ वर्षों के बाद ही अपने पति की छत्र छाया से मरहूम हो गई थी। पानीपत में ही मेरी माता जी श्रीमती सुदर्शन की शादी हुई, जब मेरे पिता आदरणीय श्री मुल्ख राज जी की सरकारी नौकरी पुलिस में लगी और उनकी तैनाती दिल्ली में हो गयी तब हम लोग दिल्ली में रहने आ गये। मैं अपने बहन भाइयों में सबसे बड़ी हूँ। मेरी एक बहन है जिनका नाम सुषमा है और वे दिल्ली प्रशासन से एस.डी.एम की पोस्ट से सेवानिवृत हुई है, मेरी तीन भाई है, कृष्ण लाल, प्रवीण कुमार और राजेश कुमार, मेरे तीनों भाई दिल्ली पुलिस में अच्छे पदों पर है। मेरे दादाजी गैंदा मल जी और दादी लाजवंती जी शाहबाद के पास रोहटी गांव में रहते थे,. उनके साथ भी बहुत स्मृतियां हैं। अपने नानी जी से बहुत सारी बातें हमने सीखी है और सबसे जरूरी जो मैंने उनसे सीखा है कि जब दुनिया में सब लोग दूर हो जाएं। हम अकेले भी हो तब भी हमें निराश नहीं होना है उन्हें भगवान पर बहुत भरोसा था।

प्रश्न: आपने पत्रकारिता का कोर्स किया है और इस विषय पर कई पुस्तकें भी लिखी है। पहले और आज की पत्रकारिता में आप क्या कुछ बुनियादी फर्क महसूस करती हैं?

उत्तर: पत्रकारिता प्रतिपल बदलती रही है। अगर मैं आजादी से पहले की या आजादी के बाद की पत्रकारिता की बात करूं और फिर आज की बात करूं और पत्रकारिता के विभिन्न रूपों की बात करूँ, मुझे यह कहना है पत्रकारिता निरंतर बदलती रही है। आज पत्रकारिता का स्वरूप शुद्ध4 व्यवसायिकक हो गया है। आजकल बहुत कम पत्रकार ऐसे रह गए हैं जो देश के प्रति, सच्चाई के लिए लड़ना जानते हैं। मेरा मानना है पत्रकारिता में गुलामी नहीं होनी चाहिए जबकि आज पत्रकारिता में गुलामी ने अपना स्थान बना लिया है।

प्रश्न: आप क्या संदेश युवा लेखकों को देना चाहेंगी।

उत्तर: पाठक अच्छा साहित्य खरीद कर पढें ये विशेष अनुरोध है मेरा उनसे। मैं चाहती हूं सदा संस्कार जीवित रहें, मर्यादा और अनुशासन हमारे आधुनिक वर्ग के गुण बने रहें। किसी भी परिस्थिति में मर्यादाओं को तोड़कर लक्ष्य पाने की ओर अग्रसर ना हुआ जाए। मैंने अपने लेखन में सदा ही कोशिश की है समाज में खुशहाली और मेलजोल बना रहे। सहनशीलता और धैर्य को अनिवार्य गुणों की तरह अपनाया जाए। ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध जैसे अवगुण किस प्रकार हमारा विनाश कर सकते हैं ये भी मुझे हमेशा याद रहता है। मेरे पाठकों और समकालीन साहित्यकार मित्रों ने मेरे लेखन को सदा ही साफ सुथरा लेखन कहा है और कुछ कहानियों में बोल्डनेस देखते हुए भी उन्होंने मेरे लेखन को साफ सुथरा लेखन स्वीकार किया है। हर समय मानसिक स्वच्छता हमें कई संकटों से बचा सकती है।

प्रश्न: आपने अनेक देशों की यात्राएं की हैं। कौन-सा देश सबसे अच्छा लगा और क्यों। कोई प्रेरक प्रसंग बताएं।

उत्तर: सबसे पहले मुझे विदेश जाने का अवसर मिला लंदन में छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने का, फिर वर्ल्ड एसोशिएशन ऑफ वैदिक वैदिक स्टडीस के निमंत्रण पर न्यू-यॉर्क(यूएसए) में अपने उपन्यास 18 दिन के बाद पर पर्चा प्रस्तुतीकरण के लिए। बहुत यात्राएं की है, देश में भी और विदेशों में भी। सिंगापुर, नेपाल, पेरिस, दुबई, हाँग काँग, लॉस एंजल्स, मलेशिया में कई बार, देश में भी बहुत सारे स्थलों पर जैसे, मद्रास, कोलकाता, बंगलोर, नेल्लोर, और भी बहुत सारे सम्मेलनों में जाना हुआ है, कई साहित्यिक यात्राएं, वक्तव्य, पर्चा प्रस्तुतीकरण एवं सहभागिता की है, कई साहित्यिक यात्राएं, वक्तव्य, पर्चा प्रस्तुतीकरण एवं सहभागिता की है। ऑस्ट्रिया, जर्मनी, नीदरलैंड, बेल्जियम में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद, द्वारा आयोजित साहित्यिक अनुष्ठान में, हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति के उत्थान के लिए अयोध्या में जाना हुआ, सोशियल मीडिया मैत्री सम्मेलन में भाग लेने के लिए। मुझे यात्राएं बहुत सकून प्रदान करती हैं।

सबसे पहली नज़दीकी विदेश यात्रा मेरी नेपाल की रही और वहां के बहुत अच्छे अनुभव है। वहां के कई पत्रकारों ने मुझ से भेंट की और मुझे उनके घर भी जाने का अवसर मिला। भेंट के दौरान की गई बातचीत को उन्होंने बाद में वहां के समाचार पत्रों में, विराट टाइम्स और दूसरे समाचार पत्रों में प्रकाशित किया। उसके बाद भी कई वर्षों तक पत्राचार बना रहा। अनजान देश, अनजान लोग फिर भी इतना अपनापन, यह केवल साहित्य और कलम के धनी लोग ही कर सकते हैं।

छठे विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान जब लंदन जाना हुआ तो वहां के भी बहुत सुखद अनुभव है। उस सम्मेलन में बहुत महान हस्तियों से मुलाकात हुई। जिसमें से शिवानी जी को आज फिर याद करना अच्छा लग रहा है। जब मैं जर्मनी गई तो मुझे अब वह जगह भी बहुत पसंद आई उसमें मैंने कई ऐतिहासिक स्थान देखें। मैंने वह स्थान भी देखा जहां हिटलर का जन्म हुआ। वह स्थान भी देखा जहां हिटलर बचपन में पेंटिंग बना-बनाकर लोगों से पैसे अर्जित किया करता था और फिर मैंने वह स्थान भी देखा जहां उसने अपनी पार्टी की स्थापना की और उस गैस चैंबर को भी देखा जहां उन्होंने कई निहत्थे लोगों को मौत के घाट उतारा था। हाल ही में मुझे जापान जाने का अवसर मिला और मुझे जापान देश बहुत पसंद आया उसके बहुत सारे कारण है। श्रीलंका को पसंद करने के भी बहुत सारे कारण है। अभी हाल ही में इजिप्ट की यात्रा की है वहां पर भी बहुत सारे ऐतिहासिक स्थानो ने मुझे आकर्षित किया। इस तरह मैंने जिन जिन देशों की यात्रा की है लगभग सभी देशों के कुछ ना कुछ हिस्सों, ने मुझे प्रभावित किया है

प्रश्न: आत्मकेंद्रित नई पीढ़ी के लिए कोई संदेश।

उत्तर: अच्छा साहित्य खरीद कर पढें ये विशेष अनुरोध है मेरा उनसे। मैं चाहती हूं सदा संस्कार जीवित रहें, मर्यादा और अनुशासन हमारे आधुनिक वर्ग के गुण बने रहें। किसी भी परिस्थिति में मर्यादाओं को तोड़कर लक्ष्य पाने की ओर अग्रसर ना हुआ जाए।

एक बात अवश्य कहना चाहती हूँ, साहित्य को मनोरंजन का साधन नहीं बनाया जाए। मनोरंजन के और बहुत सारे तरीके हैं, मैं चाहती हूँ "लेखन गंगा में स्नान करने जैसे हो", साहित्य में किसी भी प्रकार की अश्लीलता को मैं बुरा मानती हूँ। मेरे पिता जी का एक मन्त्र मैं हमेशा याद रखती हूँ, "बेईमान होने से असफल होना ज्यादा अच्छा है।" साहित्य में लेखन की शुद्धता की ईमानदारी को मैं स्वीकार करती हूँ। मैंने अपने लेखन में सदा ही कोशिश की है समाज में खुशहाली और मेलजोल बना रहे। सहनशीलता और धैर्य को अनिवार्य गुणों की तरह अपनाया जाए। ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध जैसे अवगुण किस प्रकार हमारा विनाश कर सकते हैं ये भी मुझे हमेशा याद रहता है। मेरे पाठकों और समकालीन साहित्यकार मित्रों ने मेरे लेखन को सदा ही साफ सुथरा लेखन कहा है और कुछ कहानियों में बोल्डनेस देखते हुए भी उन्होंने मेरे लेखन को साफ सुथरा लेखन स्वीकार किया है। हर समय मानसिक स्वच्छता हमें कई संकटों से बचा सकती है।

डी जी एन की जसलीन ने बच्चों को मैकडॉनल्ड्स से बर्गर और कोल्ड ड्रिंक लेकर दिए। बच्चों को बहुत खुशी हुई और उन्होंने इसे खूब एंजॉय किया।

अब मैं गुलाब नहीं, इंकलाब चाहती हूं

समाज में बदलाव और अखंडता की पुकार
डॉ. क्षमा पाटले "अनंत" की यह सशक्त कविता स्त्री संवेदना, सामाजिक अन्याय और मानवता के विघटन के विरुद्ध एक सशक्त स्वर है। इसमें कवयित्री ने गुलाब की कोमलता से ऊपर उठकर इंकलाब की पुकार दी है — जो अन्याय, विभाजन और हिंसा के विरुद्ध जनजागरण का संदेश देती है।

ज़मीं पर बहते हुए लहू का
हिसाब चाहती हूं,
अब मैं गुलाब नहीं, इंकलाब
चाहती हूं।
खुदा खैर करे, लोगों में
इंसानियत बाकी तो है,
मैं जहां में वफ़ा के नतीजे
लाजवाब चाहती हूं।
मुझे ऐतराज़ नहीं तेरे तख़्तों ताज
से,
मैं बेपनाहों पर रहमत बेहिसाब
चाहती हूं।
लोगों की भीड़ में खुद को तन्हा
सा पाती हूं,
हर तरफ धोखा है, सन्नाटा है
— सोचकर सिहर जाती हूं।
धर्म, जाति, मजहब की दीवारें
बहुत ऊंची हैं "क्षमा",
मैं राष्ट्र में अखंडता का विजय
शंखनाद चाहती हूं!
ज़मीं पर बहते हुए लहू का
हिसाब चाहती हूं,
अब मैं गुलाब नहीं, इंकलाब
चाहती हूं!

डॉ. क्षमा पाटले "अनंत"
(अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार एवं समाजसेवी, जांजगीर-चांपा, छत्तीसगढ़)

जिहादी-मुक्त दिल्ली" के संकल्प के साथ छठ पूजा पर विश्व हिन्दू परिषद इंद्रप्रस्थ प्रांत ने प्रमाणित और शुद्ध पूजा सामग्री और 'सनातन प्रतिष्ठा' स्टिकर अभियान आरम्भ किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली : विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) इंद्रप्रस्थ प्रांत ने जिहादी-मुक्त दिल्ली के संकल्प के साथ छठ पर्व पर विशेष पहल शुरू की है। इस पहल के अंतर्गत दिल्ली के सभी 30 जिलों में अलग-अलग स्थलों पर विहिप के स्टॉल लगाकर भक्तों को प्रमाणित, शुद्ध और उपयोगी पूजा सामग्री उपलब्ध करायी जाएगी।

इसके साथ ही, इच्छुक हिन्दू दुकानदारों, ठेलेवालों और रेहड़ी पटरी वालों को विहिप की ओर से सत्यापन के पश्चात 'सनातन प्रतिष्ठा' का आधिकारिक स्टीकर प्रदान किया जाएगा जिससे भक्त सुविचारित और प्रमाणित स्रोत से पूजा सामग्री प्राप्त कर सकें। विहिप इंद्रप्रस्थ के प्रांत मंत्री सुरेंद्र गुप्ता ने इस विशेष अभियान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इसका उद्देश्य हिन्दू त्योहारों पर भक्तों को शुद्ध, प्रमाणित और पारंपरिक पूजा सामग्री उपलब्ध कराना तथा धार्मिक-सांस्कृतिक स्वाभिमान को मजबूत करना।

सनातन प्रतिष्ठा स्टीकर: इच्छुक हिन्दू दुकानदारों के लिये सत्यापन के बाद यह स्टीकर उपलब्ध कराया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सत्यापन प्रक्रिया में दुकान स्टॉल का पंजीकरण किया जाएगा फिर उसकी पहचान और दस्तावेजों की जाँच के बाद स्थानीय प्रतिनिधि द्वारा निरीक्षण करके प्रमाणन स्टीकर निर्गम जारी किया जाएगा। इसमें गुणवत्ता एवं शुद्धता: प्रत्येक वस्तु की शुद्धता, पैकिंग और परंपरागत स्वरूप पर विशेष ध्यान रखा जाएगा।

गुप्ता ने कहा कि हमारे त्योहार हमारी आत्मा हैं। छठ जैसे पवित्र अवसर पर भक्तों को पारंपरिक, शुद्ध और प्रमाणित पूजा सामग्री उपलब्ध कराना हमारा कर्तव्य है।

साथ ही हम यह सुनिश्चित करेंगे कि जो दुकानें 'सनातन प्रतिष्ठा' का स्टीकर प्राप्त कर रही हैं — वे पारदर्शी और समाज के प्रति जवाबदेह हों। यह पहल किसी के विरुद्ध नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और सनातन मान्यताओं की रक्षा के लिए है। उन्होंने दिल्ली के निवासियों से अपील करते हुए कहा कि भक्तगण केवल प्रमाणित स्टॉलों से ही पूजा सामग्री खरीदें। खरीदारी करते समय 'सनातन प्रतिष्ठा' स्टीकर अवश्य देखें और दुकानदार अपने स्थानीय विश्व हिन्दू परिषद कार्यालय से पंजीकरण व सत्यापन करवाएं।

गुप्ता ने आगे जोड़ते हुए कहा कि विहिप कि यह पहल शांतिपूर्ण, कानूनी और पारदर्शी ढंग से आयोजित की जा रही है। विहिप सभी समुदायों के प्रति सम्मान रखते हुए अपनी संस्कृति और परंपरा की रक्षा का कार्य करता है।

पुल प्रहलादपुर थानाध्यक्ष लाइन हाजिर

दक्षिणी पूर्वी जिले के थाना पुल प्रहलादपुर प्रभारी को इलाके में बढ़ते अपराध के चलते किया लाइन हाजिर।

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दिल्ली ने संगठित अपराध को रोकने के लिए पुलिस उपायुक्त किसी प्रकार को कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं। वहीं, इसी बीच दक्षिणी पूर्वी जिले के थाना प्रभारी मनोज कुमार को लाइन हाज़रि कर दिया है। मिली जानकारी के मुताबिक फरियादियों से दुर्व्यवहार करने, इलाके में बढ़ते अपराध, चोरी, लूट, सट्टा रोक नहीं लगवा पाना और उनका इलाके में गश्त नहीं करने की शिकायत पर एसएचओ मनोज कुमार को लाइन हाजिर कर दिया गया है।

जानकारी के अनुसार थाना प्रभारी मनोज कुमार के डेढ़ साल के कार्यकाल में पुल प्रहलादपुर इलाके में मोबाइल स्नैन्चिंग, चोरी, लूट, सट्टा और अवैध तस्करी के मामले में बढ़ोतरी देखी गई है। बीते दिनों एक महिला पत्रकार के साथ मोबाइल लूट की घटना हुई। लेकिन प्राथमिकी दर्ज़ करने के नाम पर खानापूर्ति कर दी गई। एक युवक ने बताया कि वह किसी घटना का चश्मदीद है, पुलिस उसको थाने लेकर गई और उसके साथ मारपीट कि गई। इस घटना से संबंधित एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। कई मामलों का संज्ञान लेते हुए डीसीपी ने मनोज कुमार को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया। उन्होंने बताया कि आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। लाइन हाजिर होने का मतलब है कि किसी पुलिसकर्मी को उसके मूल कार्यस्थल से हटाकर पुलिस मुख्यालय या पुलिस लाइन में तैनात कर दिया जाता है। ऐसा आमतौर पर किसी शिकायत या आरोप की जांच या अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए किया जाता है, ताकि निष्पक्ष जांच हो सके।

जांच का कारण: जब किसी पुलिसकर्मी पर कोई आरोप लगता है या शिकायत आती है, तो अधिकारी मामले की गंभीरता के आधार पर उसकी जांच करते हैं। इस दौरान, जांच की निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए उस पुलिसकर्मी को उसके मूल थाने या कार्यालय से हटा दिया जाता है।

प्रशासनिक प्रक्रिया: यह पूरी तरह से एक प्रशासनिक प्रक्रिया है। इसका मतलब यह नहीं है कि पुलिसकर्मी दोषी है, बल्कि यह आरोप की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने का एक तरीका है।

कार्य और वेतन: लाइन हाजिर के दौरान पुलिसकर्मी को मुख्यालय में रखा जाता है और उसके काम की प्रकृति को सीमित कर दिया जाता है। उसे किसी बड़े ऑपरेशन या फील्ड कार्य में शामिल नहीं किया जाता है। हालांकि, उसके वेतन में कोई कटौती नहीं होती है।

ड्यूटी: इस दौरान भी पुलिसकर्मी को विभागीय आदेशों के अनुसार मुख्यालय में अपनी ड्यूटी निभानी होती है, जैसे परेड में शामिल होना, लेकिन बड़े या फील्ड वर्क से दूर रखा जाता है।

अवधि: लाइन हाजिर की कोई निश्चित अवधि नहीं होती है। यह जांच पूरी होने या आरोप स्पष्ट होने तक रह सकता है।

कविता- छठ पूजा

छठ पूजा का पावन महोत्सव आया,
ढेरों खुशियाँ जन मानस में ये लाया,
नहाय-धोय उपासक पूजे सूरज देवा,
छठ मैया करे आपकी चित मन सेवा।

सजे भक्ति भाव की ज्योत से तट,
सुंदर सजीले सरोवर नदियाँ पनघट,
दूर होते छठ पूजा से असाध्य कष्ट,
संचित कर्म पाप हो जाते सारे नष्ट।

प्रसन्न हो छठी मैया सूरज देव हमारे,
भक्ति श्रद्धा विश्वास से गूँजे जयकारे,
मनोरथियों के मनोभाव हो पूरे सारे,
'आनंद' मंगल नाम संकीर्तन उच्चारे।

कठिन संकल्प चार दिनों का लिया,
निराहार जप तप व्रत भक्तों ने किया,
यम नियम शुद्धता का पालन किया,
उगते डुबते सूर्य देव को अर्ध्य दिया।

सुख समृद्धि व स्वास्थ्य का हमें वर दो,
वर्तमान व भविष्य को सुरक्षित कर दो,
परिवार में हमारे प्रेम रस भाव भर दो,
अंत:करण में प्रसन्नता उजागर कर दो।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

दिल्ली में छठ पर्व पर सोमवार को सरकारी अवकाश रहेगा, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया ऐलान

दिल्ली में छठ पर्व के लिए 27 अक्टूबर को सरकारी अवकाश रहेगा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इसकी घोषणा की है। यह पर्व सूर्य देव और छठी मैया को समर्पित है। दिल्ली सरकार ने छठ घाटों पर स्वच्छता और सुरक्षा की व्यवस्था की है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: देश में शनिवार को नहाय खाय के साथ छठ महापर्व की श्रीगणेश होने जा रहा है। दिल्ली में लोगों को दीपावली के बाद फिर से एक दिन की छुट्टी मिलने वाली है। दिल्ली के सरकारी दफ्तारों में काम करने वालों और दिल्ली सरकार के स्कूलों में पढ़ने वाले उन बच्चों के लिए खुशखबरी है जो छठ पूजा देखना चाहते थे लेकिन स्कूल और दफ्तर के चलते वो छठ पूजा नहीं देख पाते थे।

सीएम रेखा गुप्ता ने की घोषणा

सीएम रेखा गुप्ता ने बड़ी घोषणा कर दी है जिसके बादअब वो भी छठ पूजा देखने के लिए घाटों पर जा सकते हैं। मुख्यमंत्री ने जानकारी दी कि इस पर्व पर सोमवार को इसलिए अवकाश किया जा रहा है, क्योंकि चार दिन के इस पर्व के तीसरे दिन व्रती सूर्यास्त के समय नदी या तालाब के किनारे जाकर अस्तगामी सूर्य देव को अर्घ्य देते हैं।

क्यों महत्वपूर्ण होता है ये दिन

सीएम ने कहा कि यह छठ पूजा का सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है। इस दिन सुबह से ही तैयारी शुरू हो जाती है और पूरा परिवार किसी ने किसी कार्य को पूरा करने में लगा रहता है। मुख्यमंत्री के अनुसार इसी तथ्य को ध्यान में सरकार ने सोमवार 27 अक्टूबर को सार्वजनिक अवकाश किया गया है।

[To be published in Delhi Gazette Part-IV (Extra-ordinary)]

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT
(CO-ORDINATION BRANCH)
DELHI SECRETARIAT, I. P. ESTATE, NEW DELHI - 110 002

NOTIFICATION

The Lieutenant Governor of the National Capital Territory of Delhi is pleased to declare holiday on Monday, the 27th October, 2025 in all Offices, Autonomous Bodies and Public Sector Undertakings under Government of NCT of Delhi on 'Pratihar Shashthi or Surya Shashthi (Chhat Puja)'.

By order and in the name of the Lieutenant Governor of the National Capital Territory of Delhi

(Pradeep Tayal)
Joint Secretary (GAD)

No.F.53/811/GAD/CN/2025/3794-3833 Dated: 25/10/2025

Copy forwarded for information and necessary action to:-

1. Pr. Secretary to Lieutenant Governor, Raj Niwas, Delhi.
2. Secretary to Chief Minister, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi.
3. Secretary to Speaker, Legislative Assembly of Delhi, Delhi.
4. Secretaries to Council of Ministers, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi
5. Secretary, Ministry of Home Affairs, Government of India, North Block, New Delhi.
6. Secretary, Department of Economic Affairs, Ministry of Finance, Govt. of India, New Delhi.
7. Chief Secretaries to all State Governments/U.T. Administration.
8. All Addl. Chief Secretaries/Commissioner, MCD/Pr. Secretaries/Chairperson, NDMC/Secretaries/HoDs, Govt. of NCT of Delhi, Delhi/New Delhi.
9. Chairman, DSSSB, Vishwas Nagar, Shahdara, Delhi.
10. Chairman, Delhi Transco Ltd., Shakti Sadan, Kotla Marg, New Delhi.
11. MD, DSFC & DC, Ambedkar Bhawan, Institutional Area, Sector-XVI, Rohini, Delhi.
12. MD, Delhi Khadi & Village Industries Board, Nigam Bhawan, Kashmere Gate, Delhi.
13. MD, DTTDC, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
14. MD, Delhi Transport Corporation, New Delhi.
15. MD, DSIIDC, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
16. Director, Dte. of Information & Publicity, Govt. of NCT of Delhi, Delhi.
17. Vice Chairperson, Delhi Agricultural Marketing Board, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi
18. CEO, Delhi Urban Shelter Improvement Board, Punarwas Bhawan, I.P. Estate, New Delhi.
19. Chief Executive Officer, Delhi Cantonment Board, New Delhi.
20. Chief Fire Officer, Delhi Fire Services, Connaught Place, New Delhi
21. All Heads of Autonomous Bodies under Govt. of NCT of Delhi, Delhi/New Delhi.
22. Chairman, Minority Commission for Delhi, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
23. Chairman, Delhi Finance Commission, New Delhi.
24. O/o Hon'ble Lokayukta, G-Block, Vikas Bhawan, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
25. Registrar, High Court of Delhi, New Delhi.
26. Registrar, Delhi University, Delhi.
27. Registrar, DSEU, Delhi
28. Registrar, G.G.S.I.P. University, Delhi.
29. Director-Principal, Maulana Azad Institute of Dental Sciences, MAMC Complex, New Delhi.
30. Member Secretary, Delhi Child Rights Protection Commission, Kashmere Gate, Delhi.
31. Chairperson, Delhi Commission for Women, Block-C, Vikas Bhawan, I.P. Estate, New Delhi.
32. Chairman, Delhi Commission for Safai Karamchari, Raigarpura, Karol Bagh, New Delhi.
33. Chairman, Public Grievances Commission, M-Block, Vikas Bhawan, I.P. Estate, New Delhi.
34. Chairman, Commission for OBC, 5th floor, Vikas Minar, I.P.Estate, New Delhi.
35. Commissioner, Delhi State Election Commission, Old Hindu College, Kashmere Gate, Delhi.
36. Asstt. Director (B&F), Dte. of Printing, Nirman Bhawan, New Delhi.
37. General Manager, HR Management Deptt, Reserve Bank of India, 6, Sansad Marg, New Delhi.
38. Circle Credit & Financial Officer, State Bank of India, 11, Sansad Marg, New Delhi.
39. Manager, Govt. of India Forms Store, Dte. of Printing, 166, Lenin Sarai, Kolkata-700013.
40. Guard file.

(Pradeep Tayal)
Joint Secretary (GAD)

मुख्यमंत्री ने दी शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री ने इस पर्व को लेकर श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दी ओर कहा है कि छठ पर्व्र प्रकृति को समर्पित पर्व है, जिसमें सूर्यदेव और छठी मैया की पूजा होती है। उन्होंने कहा कि छठ पर्व आस्था, श्रद्धा और स्वच्छता का प्रतीक भी है, जो हमें प्रकृति, जल और सूर्य की उपासना के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है।

छठ घाटों पर की गई व्यवस्थाएं

उन्होंने कहा कि यह पर्व लोक आस्था और भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा का उत्सव है, जिसमें परिवार, समाज और समुदाय एक साथ जुड़ते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार ने सभी छठ घाटों पर स्वच्छता, सुरक्षा और सभी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित की है, ताकि श्रद्धालु निश्चिंत होकर पूजन कर सकें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पर्व सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और नई ऊर्जा का संचार करेगा तथा समाज में आपसी भाईचारे और सद्भाव को और सुदृढ़ बनाएगा।

शिक्षा मंत्री के आवास पर सहायक शिक्षक अभ्यर्थियों का प्रदर्शन

अभ्यर्थी सरकार की लचर पैरवी से नाराज और कुंठाग्रस्त

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ। 69000 सहायक शिक्षक भर्ती के आरक्षण पीड़ित कोर्ट याची अभ्यर्थियों ने आज लखनऊ में बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह के आवास पर धरना प्रदर्शन किया तथा मंत्री के आवाज के सामने नारे लगाए तथा प्रदर्शन के दौरान सरकार से गुहार लगाई कि सरकार आगामी 28 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में होने वाली सुनवाई में अपना वकील भेजें और मामले का निस्तारण कराए।

क्योंकि पिछले 15 महीने में 23 से अधिक बार सुप्रीम कोर्ट में तारीख लग चुकी है लेकिन किसी भी तारीख पर उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से पक्ष रखने के लिए सरकारी अधिवक्ता आज तक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा नहीं भेजा गया और यही कारण है कि आज अभ्यर्थी सरकार की लचर पैरवी से नाराज होकर विभिन्न जनपदों से लखनऊ बेसिक शिक्षा मंत्री के आवास पर पहुंचे जहां उन्होंने प्रदर्शन किया लेकिन पुलिस ने उनको हिरासत में लेकर इको गार्डन भेज दिया।

आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थी जगबीर सिंह चौधरी तथा राजन जायसवाल का कहना है की 69000 सहायक शिक्षक भर्ती में ओबीसी वर्ग को 27% की जगह 3.86% तथा एससी वर्ग को 21% की जगह 162% आरक्षण दिया गया है और इस प्रकार इस भर्ती में बेसिक शिक्षा नियमावली 1981 तथा आरक्षण नियमावली 1994 का घोर उल्लंघन करके आरक्षित वर्ग की 19000 सीटों पर आरक्षण का घोटाला किया गया है और यह घोटाला लखनऊ डबल बेंच ने 13 अगस्त 2024 को आदेश देकर सार्वजनिक कर दिया जिसमें उसने कहा कि आरक्षण के नियमों का पालन करते हुए 69000 सहायक शिक्षक भर्ती की लिस्ट को मूल चयन सूची के रूप में दोबारा बनाई जाए लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार ने ना तो लखनऊ डबल बेंच के आदेश को माना और ना ही वर्ष 2020 से कोर्ट में यांची बनकर न्याय की लड़ाई लड़ रहे आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थियों को याची लाभ देकर यह मामला निस्तारित किया जाए इसके लिए कोई कार्य किया।

आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थी शिवशंकर एवं मालू सिंह चौधरी का कहना है कि 69000 सहायक शिक्षक भर्ती आरक्षण के मुद्दे पर 7 दिसंबर 2020 को सब्जेक्ट टू पिटीशन हो चुकी है तथा आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थी वर्ष 2020 से वर्ष 2025 तक सुप्रीम कोर्ट में यांची बनकर न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं तथा आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थियों का कहना है कि याची लाभ देकर इस मामले का निस्तारण कर दिया जाए अब ऐसी स्थिति में उत्तर प्रदेश सरकार को चाहिए कि वह 28 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में याची लाभ का प्रपोजल पेश करें ताकि याची लाभ देकर इस मामले का निस्तारण आसानी से किया जा सके।

महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज 1 नवम्बर से कहेंगे श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कालीदह क्षेत्र स्थित अखण्ड दया धाम में मंगलायतन सेवा ट्रस्ट के द्वारा कार्तिक मास के उपलक्ष्य में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव दिनांक 01 से 07 नवम्बर 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है। जानकारी देते हुए ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत अखण्ड दया धाम के संस्थापक महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी भास्करानंद महाराज

अपने श्रीमुख से 01 से 07 नवम्बर 2025 पर्यन्त अपराह्न 04 बजे से सायं 07 बजे तक देश-विदेश से आए असंख्य भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत की अमृतमयी कथा का रसास्वादन कराएंगे।जिसमें कई प्रख्यात संत, मूर्धन्य विद्वान, तपो मूर्ति, महामंडलेश्वर एवं महापुरूष आदि भाग लेंगे।साथ ही उनके आशीर्वचन भी सभी भक्तों-श्रद्धालुओं को प्राप्त होंगे।उन्होंने बताया कि महोत्सा के अंतर्गत 03 नवम्बर को प्रातः 09 बजे गुरुकुलम का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य भूमि पूजन किया जाएगा। महाराजश्री की परम्कृपापात्र शिष्या साध्वी कृष्णानंद महाराज ने सभी से इस आयोजन में शामिल होने का अनुरोध किया है।

जयंती, गणेश शंकर विद्यार्थी, क़लम में वह शक्ति है जो तलवारों को भी कुंद कर सकती है

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

26 अक्टूबर भारत की पत्रकारिता, समाज और स्वतंत्रता के इतिहास में एक उज्ज्वल तिथि है, क्योंकि इस दिन 1890 को प्रयागराज के अतरसुइया मोहल्ले में वह बालक जन्मा था जिसने आगे चलकर न केवल अंग्रेज़ी साम्राज्य की नींव हिला दी, बल्कि अपने आदर्शों और बलिदान से आने वाली पीढ़ियों के लिए एक नैतिक प्रकाशस्तंभ बन गया,गणेश शंकर विद्यार्थी। आज जब लोकतंत्र में मीडिया अक्सर अपनी भूमिका के प्रश्नों से जूझ रहा है, तब गणेश शंकर विद्यार्थी की जयंती हमें याद दिलाती है कि पत्रकारिता केवल खबरों का व्यापार नहीं बल्कि समाज की आत्मा का दर्पण है। विद्यार्थी जी ने 'प्रताप' पत्र को राजनीति से ऊपर उठाकर जनचेतना की क्रांति का औज़ार बनाया। उन्होंने न दमन से डरना सीखा, न सत्ता के सामने झुकना। उनकी कलम ने गलत को गलत और सही को सही कहने का दुस्साहस दिखाया। यही निर्भीकता उन्हें पाँच बार जेल तक ले गई, पर उनकी लेखनी का संकल्प कभी नहीं टूटा। 1913 में जब 'प्रताप' अस्तित्व में आया, तब वह केवल एक अख़बार नहीं बल्कि स्वतंत्र भारत का घोष-पत्र बन गया। विद्यार्थी जी जानते थे कि कलम में वह शक्ति है जो तलवारों को भी कुंद कर सकती है। इसलिए उन्होंने किसानों, मजदूरों, और समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज को अंग्रेज़ी हुकूमत की बंदिशों के पार पहुंचाया। गांधीजी से लेकर

भगत सिंह तक, हर युग का युवा उनके विचारों से प्रेरित हुआ क्योंकि वे शब्दों में आक्रोश नहीं, उद्देश्य देखना सिखाते थे। विद्यार्थी जी की पत्रकारिता राष्ट्रीयता पर आधारित थी, न कि किसी दल, संप्रदाय या वर्ग पर। यही कारण है कि वे गांधी की अहिंसा को भी पूजते थे और भगत सिंह के साहस को भी नमन करते थे। उन्होंने दिखाया कि देशभक्ति विचारों की सीमाओं में नहीं बँधी होती, उसका आधार सत्य और आत्मबल है। 25 मार्च 1931 को जब कानपुर में दंगे हुए तो विद्यार्थी जी ने न हिंदू देखा न मुसलमान, वे केवल इंसानियत को बचाने चले थे और शांति बहाल करते समय शहीद हो गए। गणेश शंकर विद्यार्थी का जाना भारत की पत्रकारिता का बलिदान दिवस बन गया। गांधीजी ने उनके निधन पर कहा था,काश, मुझे भी ऐसी मृत्यु प्राप्त होती।

26 अक्टूबर की यह जयंती हमें केवल अतीत की याद नहीं दिलाती बल्कि वर्तमान को आत्मनिरीक्षण का अवसर देती है कि कहीं हम उस आदर्श से दूर तो नहीं हो गए, जहाँ पत्रकारिता तनख्वाह का पेशा नहीं बल्कि जनसेवा का व्रत थी। आज जब समाज सच की बजाय सनसनी का शिकार हो रहा है, तब विद्यार्थी जी की विरासत हमें आह्वान करती है कि कलम को पुनः चरित्र की लौ से जोड़ें। गणेश शंकर विद्यार्थी अपने समय के लिए नहीं, हर युग के लिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे बताते हैं कि सच्चे पत्रकार और सच्चे देशभक्त का धर्म एक ही है,अन्याय के विरुद्ध निडर रहना। उनका जीवन हमें यही सिखाता है कि सत्ता बदल सकती है, परिस्थितियाँ बदल सकती हैं, पर सत्य और त्याग की रोशनी कभी नहीं बुझती।

आधुनिकता हमें सुरक्षा नहीं दे सकती है।

आधुनिकता के इस सफर में हर कोई अपने आप को सेफ्टी किट से सुरक्षित करना चाहता है। पर इतना सब कुछ होने के बाद मनुष्य कितना सुरक्षित है? हाल ही में इन्दौर के एबी रोड स्थित पर एक शोरुम के ऊपर बने पेंट हाउस में लगी आग ने एक कारोबारी की धुएं में दम घुटने से मौत हो गई। वहीं उनकी पत्नी व दोनों बेटियों को वह खौफनाक मंजर कभी भी नहीं भूले से ना भुलाया जायेगा। कितनी भी आधुनिक सुख-सुविधाओं से जब हम सुरक्षित नहीं हो पाये तो फिर यहां किस काम की है। आज कल एयरकंडीशन बिल्डिंगों में कांच लगया जाता है पर अगर वह कोई भी अनहोनी हो जाये या आग लग जायें तो आदमी अपनी जान कैसे बचाएंगा। यहां कैसी सुरक्षा है आजकल आधुनिक सुख-सुविधाओं की समझ में नहीं आता है। चलती बस में आग लग जाती है और आदमी वहीं कंकल बन जाते है। ऐसी स्थिति पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है आजकल आधुनिक सुख-सुविधाओं के हम आदि हो चुके हैं इसलिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करते। इन गलत व नाकारात्मक पहलू पर ध्यान देने की बहुत जरूरत है। सुविधाओं के हम आदी हो गए हैं इसलिए जान-माल का ध्यान नहीं देते और स्थिति भयभीत करने वाली हो जाती है। होनी या अनहोनी में हम सुरक्षित रुप से सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें जिससे घटनाओं में जान-माल का नुक़सान व जन हानि कम से कम हो।

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

मां से अवैध संबंधों में बाधक 7 साल के बच्चे की हत्या करने वाला मुठभेड़ में गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। मां से प्रेम बनाम अवैध संबंधों में बाधक बने 7 साल के एक मासूम बच्चे की निर्मम हत्या करने वाले युवक को पुलिस ने मुठभेड़ में गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार युवक द्वारा पूछताछ में पुलिस को दी गई जानकारी के मुताबिक वह अपनी प्रेमिका यानी बच्चों की मां को अपने साथ ले जाना चाहता था, लेकिन वह सात साल के मासूम को छोड़कर जाने को तैयार नहीं थी। इसीलिए उसने उसे मौत के घाट उतार दिया।

यह घटना बर्रा थाना क्षेत्र के हरदेव नगर की है ,जहां 60 सालकी एक बच्चे की हत्या उसकी ही मां के प्रेमी ने गला घोट कर कर दी थी। पुलिस के मुताबिक आरोपित युवक खिलौना दिलाने के बहाने मासूम को अपने साथ ले गया था। काफी देर तक उसके घर न लौटने पर स्वजन ने तलाश की। मासूम का कुछ पता नहीं चलने पर यूपी-112 पर सूचना दी। पुलिस सीसी कैमरे की मदद से पांडु नदी के किनारे तक पहुंची, जहां मासूम का शव नदी के किनारे पड़ा मिला। इसके बाद फोरेंसिक और पुलिस के अधिकारियों को जानकारी दी गई। मौके पर संयुक्त पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था आशुतोष कुमार ने पहुंचकर पड़ताल की। फोरेंसिक टीम के साक्ष्य जुटाने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जिसके बाद हत्यारे की तलाश के लिए पुलिस की तीन टीमें लगा दी गई थीं। दिस इस अराउंड मुखबिर की सटीक सूचना पर उसे मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली गई। उसके पास से तमंचा और कारतूस भी बरामद किए गए हैं।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक

मूलरूप से घाटमपुर के रामसारी गांव निवासी राजमिस्त्री करीब आठ महीने पहले बर्रा निवासी जेएल वर्मा के हरदेव नगर स्थित मकान में किराए पर रहने आया था। परिवार में पत्नी, एक बेटी और दो बेटे थे। छोटा बेटा सात साल का था। मां के मुताबिक दोपहर डेढ़ बजे मकान में ही किराए पर रहने वाला मूलरूप से फतेहपुर का रहने वाला आरोपित शिवम सक्सेना बेटे को खिलौना दिलाने के बहाने घर से ले गया था। दोपहर दो बजे तक दोनों घर नहीं लौटे तो तलाश शुरू की, लेकिन दोनों को कुछ भी पता नहीं चला। आरोपित को फोन करके जानकारी करने का प्रयास किया, लेकिन उसने भी फोन नहीं उठाया। दोपहर करीब 3:30 बजे तक बेटे का कुछ पता नहीं चला तो यूपी-112 को सूचना दी। इसके बाद थाना पुलिस मौके पर पहुंची और सीसी कैमरे की मदद से दोनों की तलाश शुरू की गई। सीसी कैमरे की फुटेज में आरोपित स्नेही चौराहा से आटो में मासूम को ले जाते दिखा। इसके बाद पुलिस सीसी कैमरों की फुटेज खंगालते हुए अर्रा-दो तक पहुंची। पुलिस के अनुसार इस दौरान पांडु नदी के आसपास सर्च अभियान चलाया गया। करीब एक घंटे की तलाश के बाद मासूम का शव नदी के किनारे पड़ा मिला। पुलिस ने बताया कि आरोपी युवक को मुठभेड़ में गिरफ्तार करने के बाद अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

वर्तमान डिजिटल युग में भी दूषित भोजन खाने से होने वाली मौतों, दर्जनों बीमारियों, कौन जिम्मेदार कौन?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

पूरी दुनियाँ क़े डिजिटल युग में जहां भोजन उत्पादन, वितरण और आपूर्ति-शृंखला तेजी से वैश्वरीकृत हो गया है, वहीं "दूषित या असुरक्षि भोजन" के कारण स्वास्थ्य-संकट भी उतने ही तेज स्वर से उत्पन्न हो रहे हैं। वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन के अनुमान के अनुसार, प्रति वर्ष लगभग 60 करोड़ (600 मिलियन) लोग असुरक्षित भोजन खाने के कारण बीमार होते हैं और लगभग 4.2 लाख लोगों की मौत होती है। बच्चों (5 वर्ष से कम उम्र) पर यह बोझ विशेष रूप से भारी है, बच्चों की मृत्यु का लगभग 30 पर्सेंट हिस्सा इसी से संबंधित है। यह संख्या सिर्फ एक स्वस्थ्य-संकट नहीं है, बल्कि सामाजिक-आर्थिकझटका भी है, खासकर उन देशों में जहाँ निगरानी नियामक व्यवस्था और सूचना-प्रौद्योगिकी कमजोर हैं।इस व्यापक समस्याका सामना आजडिजिटल -संचालित दुनियाँ में भी करना पड़ रहा हैः उपभोक्ताओं के पास जानकारी का प्रवाह तो तेजी से है, लेकिन साथ ही वितरण-नेटवर्क, निर्यात- आयात, ऑनलाइन-खरीदारी, ग्रोथिंग आउटसोरसिंग आदि ने खाद्य सुरक्षा की चुनौती को जटिल बना दिया है।इस पृष्ठभूमि में, यह लेख इस अवस्था का विश्लेषण करेगा, समस्या का पैमाना, कारण- विस्तार, डिजिटल युग में चुनौतियाँ, स्वास्थ्य विभागों और शासन की भूमिका तथा जरूरी सख्त कार्यवाही के रुझान पर चर्चा करना इसलिए जरूरी हो गया है, क्योंकि छत्तीसगढ़ के बीजापुर और नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ क्षेत्र में दिनांक 21 अक्टूबर 2025 को दूषित भोजन खाने से 5 लोगों की मौत हो गई अनेकों बीमार है ऐसी जानकारी 24 अक्टूबर 2025 को देर रात्रि मुझे मीडिया के माध्यम से मिली, वहीं, कई अन्य ग्रामीणों की तबीयत बिगड़ गई है, जब ग्रामीणों को अचानक उल्टी, दस्त और पेट दर्द की शिकायतें होने लगीं। ग्रामीणों की हालत बिगड़ने की सूचना मिलते ही जिलाधिकारी और स्वास्थ्य विभाग समेत वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे।टीम ने तुरंत घटनास्थल पहुंचकर प्रभावित लोगों के लिए स्वास्थ्य शिविर लगाया और उपचार शुरू किया।गंभीर बीमार ग्रामीणों को आगे के इलाज के लिए नारायणपुर जिला अस्पताल भेजा गया है।जांच के दौरान प्राथमिक जानकारी में सामने आया कि ग्रामीणों ने संभवतः दूषित भोजन का सेवन किया था। विभाग ने दूषित खाद्य पदार्थों के नमूने लेकर जांच के लिए प्रयोगशाला भेजे हैं। साथ ही, स्वास्थ्य टीम गांवों में ग्रामीणों को स्वच्छ भोजन और उबला हुआ पेयजल उपयोग करने के लिए जागरूक कर रही है।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे वर्तमान डिजिटल युग में भी दूषित भोजन खाने से होने वाली मौतों, दर्जनों बीमारियों, कौन जिम्मेदार कौन?

साथियों बात अगर हम इस समस्या के कारण-विस्तार, क्यों बढ़ रही/बनी हुई है इस समस्या इसको समझने की करें तो, दूषित भोजन से होने वाली बीमारियों और मौतों के पीछे अनेक कारण हैं, इनमें पारंपरिक कारण भी शामिल हैं तथा डिजिटल -आधारित नए कारण भी। नीचे मुख्य कारण दिए गए हैं-(1) उपभोक्ता-आपूर्ति श्रृंखला का जटिलीकरण-विक्रेताओं से लेकर उपभोक्ता तक भोजन पहुँचने की प्रक्रिया आज कई चरणों से होकर गुजरती है, उत्पादन, पैकिंग, प्रसंस्करण, भंडारण, कंटेनर-शिपिंग, लॉजिस्टिक्स, रिटेलिंग (ऑनलाइन/ऑफलाइन) आदि। इस जटिलता के कारण "क्लीन/सेफ" रखने के लिए निगरानी के अवसर बढ़ जाते हैं। उदाहरण के लिए, ठंडे-श्रृंखला टूट जाना, अस्वच्छ परिवहन या वितरण स्टेशन में बैक्टीरिया-वृद्धि का कारण बन सकता है। (2) वैश्वीकरण एवं अन्तरराष्ट्रीय व्यापार-खाद्य सामग्री अब राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर रही है, एक देश में उत्पादित अनाज/फसल, दूसरे देश में प्रसंस्करण, तीसरे में उपभोग। इस वैश्वीकरण ने निगरानी को कठिन बना दिया है क्योंकि गुणवत्ता-मानदंड, नियामक ढांचा, निरीक्षण-रफ्तार विभिन्न देशों में भिन्न हैं। इस चित्र में, यदि किसी देश में नियंत्रण कमजोर हो, तो दूषित खाद्य सामग्री दूसरे देश में भी पहुँच सकती है (3) प्रौद्योगिकी- निर्भर वितरण (ऑनलाइन फ़ूड, होम-डिलीवरी, ग्रोथिंग आउटसोर्सिंग) डिजिटल युग में खाद्य वितरण बहुत तेजी से हो रहा है, ऑनलाइन ऑर्डर, होम-डिलीवरी थ्रू ऐप, ग्रोथिंग केटरिंग-सर्विसेज, क्लाउड- किचन आदि। इन नए मॉडल में तीसरे-पक्ष विक्रेता की भागीदारी अधिक है, जिसका अर्थ है जिम्मेदारी विभाजित हो जाती है और कभी-कभी निगरानी कम हो जाती है। (4) सूचना-कमी एवं निगरानी-दुर्बलता-विशेष तौर पर विकासशील या निम्न-मध्यम -आय वाले देशों में निरीक्षण, खाद्य-चैनल मॉनिटरिंग, खाद्य- सुरक्षा प्रशिक्षण, प्रयोगशाला सुविधाएँ, डेटा-रिपोर्टिंग संरचनाएँ पर्याप्त नहीं हैं।डब्ल्यूएचओ ने यह बताया है कि इन देशों में "राजनीतिक इच्छाशक्ति" कम मिली है। (5) हाइजीन व खान-पकाने की प्रक्रियाओं का अभाव-भोजन तैयार करने, संभालने, भंडारण करने तथा परोसने के दौरान स्वच्छता का अभाव बड़े जोखिमों को जन्म देता है, उदाहरण के लिए कच्चे और पके खाने का मिश्रण, तापमान- नियंत्रण का अभाव, अस्वच्छ हाथ- धोना आदि।(6) उच्च जोखिम-उत्पाद और नए जोखिम-स्रोत स्रोतों में बैक्टीरिया वायरस, परजीवी, टॉक्सिन- उत्पादक फफूंद आदि शामिल हैं। विशेषकर पशु-मूल खाद्य भोजन में जोखिम अधिक पाया गया है (7) जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय दुष्प्रभाव एवं सामाजिक- परिवर्तन, बढ़ते तापमान, अस्थिर मौसम, अधिक नमी और भंडारण सुविधाओं में कमी जैसे कारक खाद्य बोर्न रोगजनकों के लिए अनुकूल वातावरण बना सकते हैं।इसके अलावा, जनसंख्या- घनत्व, शहरीकरण, भोजन- वेस्ट का बढ़ना आदि सामाजिक-परिवर्तन भी योगदान दे रहे हैं।इन कारणों के संयोजन ने इस समस्या को "वर्तमान डिजिटल युग" की नब्ज़ पर अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है, जहाँ सिर्फ उत्पादन बढ़ना नहीं पर्याप्त, बल्कि नियंत्रित, सुरक्षित, समग्र दृष्टिकोण से खाद्यचेन को संभालना जरूरी है।

साथियों बात अगर हम स्वास्थ्य विभागों एवं शासन की चुनौतियों को समझने की करें तो, इस आर्टिकल का यह सबसे महत्वपूर्ण पार्ट है, जब समस्या इतनी व्यापक हो, तब स्वास्थ्य विभागों, नियामक संस्थाओं और शासन- संरचनाओं के सामने कई चुनौतियाँ खड़ी होती हैं। निम्न बिंदुओं में इन चुनौतियों का विवेचन हैः(1) डेटा और निगरानी की कमी- कई देशों में खाद्य बोर्न रोगों का ठोस, नियमित डेटा उपलब्ध नहीं है, जिससे समस्या का दायरा और कारण सही ढंग से नहीं समझे जा पाते। डब्लयु एचओ ने भी इस बात पर प्रकाश डाला है कि वर्तमान अनुमान "संभावित रूप से अंडरएस्टिमेट" हैं।(2) सहयोग -समन्वय का अभाव-खाद्य सुरक्षा एक मल्टी-सेक्टरल कार्य है, इसमें स्वास्थ्य मंत्रालय, कृषि विभाग, वाणिज्यविभाग, आयात-नियंत्रण, उपभोक्ता आयोग आदि मिलकर काम करते हैं।अक्सर इन विभागों में समन्वय की कमी होती है और डिजिटल युग में जानकारी-वितरण एवं प्रतिक्रिया -प्रक्रिया धीमी होती है।(3) नियम -और-नियमन का धीमा कार्यान्वयन -खाद्य सुरक्षा कानूनों का होना पर्याप्त नहीं; उन्हें लागू करना, निरीक्षण करना, उल्लंघनों के लिए पक्रिया तय करना, दोषियों पर कार्यवाही करना आवश्यक है। लेकिन कई जगह संसाधन, प्रशिक्षित कर्मी और राजनीतिक प्रेरणा कम पाई जाती है।(4) इंडस्ट्री अकाउंटेबिलिटी का कम प्रत्याशा-बड़ी खाद्य सप्लायर्स, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, अंतरराष्ट्रीय निर्यात-आयात नेटवर्क में निगरानी कम होने पर "दक्षता, जवाबदेही" कम होजाती है। डिजिटल व्यवस्था में यदि ऑनलाइन-विक्रेता, क्लाउड -किचन आदि शामिल हैं, तो निरीक्षण और प्रमाणन चुनौतीपूर्ण होता है (6) उपभोक्ता -सचेतना का अधूरापन- उपभोक्ताओं को भोजन सुरक्षा, स्वच्छता, पकाने-भंडारण की सरल लेकिन प्रभावी प्रक्रियाएँ जानने कीआवश्यकता है। डिजिटल प्लेटफार्मों पर जानकारी उपलब्ध है, लेकिन उसकी पहुंच, भाषा-समझ, व्यवहार-परिवर्तन की चुनौती बनी हुई है। (7) क्रॉस- बॉर्डर चुनौतियाँ-खाद्य सामग्रियों का आयात-निर्यात तेजी से हो रहा है; यदि किसी देश में नियंत्रण कमजोर है, तो दूषित उत्पाद दूसरे देश में पहुँच सकते हैं। यह डिजिटल युग में सूचना-ट्रैकिंग, रिमोट मॉनिटरिंग आदि के माध्यम से संभव है, लेकिन पर्याप्त संसाधन नहीं हर जगह मौजूद हैं।इन चुनौतियों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि सिर्फ "उत्तम काम कर रहे हैं" कहना पर्याप्त नहीं, सख्त, समन्वित, प्रभावी शासकीय कार्रवाई की आवश्यकता है।

साथियों बात अगर हम सख्त शासकीय कार्यवाही की आवश्यकता और वैश्विक दृष्टिकोण को समझने की करें तो, क्यों शासकीय (राज्य/राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय) स्तरपर सख्त कार्रवाई बेहद जरूरी है, विशेषकर इस डिजिटल युग में। निम्न बिंदुओं में कारण और प्रस्ताव हैं:(1) प्राकृतिक न्याय एवं मानवाधिकार-सम्बंधी दृष्टि भोजन एक मूलभूतमानवाधिकार है, सुरक्षित, पौष्टिक, पर्याप्त भोजन तक पहुँच होना अवधारणा का हिस्सा है। जब लोगों को दूषित भोजन मिल रहा है जिससे बीमारियाँ हो रही हैं या देहांत हो रहे हैं, तो यह सामाजिक न्याय-विषयक समस्या बन जाती है। राज्य की जिम्मेदारी है कि उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करे। (2) प्रिवेंशन (रोकथाम) का लाभदायक निष्पादन-रोग होने के बाद उपचार की तुलना में रोग को रोकना कहीं अधिक किफायती और प्रभावी है। यदि खाद्य सुरक्षा तीव्र हो जाए जैसे निरीक्षण, तापमान-नियंत्रण, क्रॉस- संक्रमण- नियंत्रण, दुष्प्रभाव वाली वस्तुओं की समयपर जाँच और रिमूवल, तो मृत्यु और बीमारी के मामले कम होंगे, साथ ही आर्थिक बोझ भी घटेगा। डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों से यह पता चलता है कि रोगों का बोझ बड़े पैमाने पर है।(3) डिजिटल युग की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदायी व्यवस्था-आज जहाँ खाद्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (ऑनलाइन खाद्य-ऑर्डर, ग्रोथिंग आउटसोर्सिंग, अंतरराष्ट्रीय सप्लायर्स) वितरण में है, वहां पारंपरिक निरीक्षण -प्रक्रिया पर्याप्त नहीं रही। इसलिए, शासकीय व्यवस्था को डेटा- एनेबल्ड, रियल-टाइम मॉनिटरिंग, ट्रेस-एबिलिटी और फूड चेन जिम्मेदारी को कानूनी रूप देना होगा। उदाहरण के लिए: खाद्य उत्पाद को 'खेती' से 'उसके पत्ते में' तक निगरानी करना, ऑनलाइन प्लेटफार्म्स पर विक्रेताओं का लाइसेंसिंग और रेटिंग सिस्टम, अंतरराष्ट्रीय निर्यात-आयात में टेस्टिंग प्रमाणपत्र की अनिवार्यता आदि। (4) सख्त नियामक दंड और जवाबदेही-खाद्य सुरक्षा उल्लंघन करने वाले उद्योगों, वितरकों, विक्रेताओं पर सख्त दंड होना चाहिए, सिर्फ जुर्माना नहीं बल्कि लाइसेंस रद्दीकरण, सार्वजनिक सूचना, दोषी कर्मियों पर कार्यवाही। इससे 'अनजानी भूल' और 'लापरवाही' के बीच फर्क दिखेगा।अन्य देशों में खाद्य प्रसारक कंपनियों को बड़े दंड दिए गए उदाहरण मिलते हैं। डिजिटल युग में जहाँ इनाम और दंड का पाठ सबको दिखता है, वहां कार्रवाई सार्वजनिक होती है तो यह चेतावनी-काम करती है।(5) अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं मानकीकरण-चूँकि खाद्य श्रृंखला अब बहु-देशीय है, इसलिए राष्ट्रीय स्तर की कार्रवाइयाँ पर्याप्त नहीं, देशों के बीच मानकीकरण, सूचना- विनिमय, जोखिम-साझा, रिकॉल नेटवर्क आदि स्थापित होना चाहिए। (6) फोकस्ड शिक्षा-प्रसार एवं उपभोक्ता-सशक्तिकरण-उपभोक्ताओं को यह जानकारी मिलनी चाहिए कि वे कैसे सुरक्षित भोजन-चयन करें, कैसे तैयार करें, कैसे भंडारण करें, कब शिकायत करें। डिजिटल प्लेटफार्म, मोबाइल ऐप्स, सोशल मीडिया-कैम्पेन आदि इस दिशा में उपयोग किए जा सकते हैं। लेकिन अकेले शिक्षा नहीं पर्याप्त इसके साथ-साथ परिस्थिति- सक्षम संसाधन (जैसे सुरक्षित पानी, स्वच्छ रसोई-परिसर, उचित भंडारण) भी उपलब्ध होना चाहिए।

नागरिक परिक्रमा (संजय पराते की राजनैतिक टिप्पणियां)

1. आरएसएस : देशभक्ति के नाम पर गुदा मर्दन

केरल के कोट्टयम में रहने वाले आनंदु अजी की रीयल लाइफ स्टोरी अब सबको पता है। यह वह प्रतिभावान शख्स था, जो पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर था और जिसने पिछले दिनों आत्महत्या कर ली थी। 26 साल के इस नौजवान का शव तिरुवनंतपुरम के थंबानूर के एक लॉज में मिला था। उसने अपना सुसाइड नोट इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है और अपनी मौत के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) को जिम्मेदार ठहराया है।

अब सोशल मीडिया उजागर करने का सशक्त माध्यम बन गया है। कॉर्पोरेट मीडिया और गोदी मीडिया चाहकर भी उन चीजों और तथ्यों को छुपा नहीं पाते, जो उनके लिए असुविधाजनक है या जिसे वे बड़ी कुटिलता से दबा देना चाहते हैं। अब किसी खबर पर कुछ अखबारों के संपादक प्रतिक्रिया नहीं करते, उनकी प्रतिक्रिया से पहले ही लाखों सोशल मीडिया पर मौजूद लाखों पाठक खबर की चीरफाड़ करके अपना संपादकीय कर्तव्य पूरा कर चुके होते हैं। यदि सोशल मीडिया न होता, तो आनंदु अजी का सुसाइड लेटर पुलिस के पास ही दबकर दम तोड़ देता, लेकिन यह सोशल मीडिया है, जिसने आनंदु अजी की पीड़ादायक कहानी को घर-घर की कहानी बना दिया है, क्योंकि आज आरएसएस और उसके लठैतों की पहुंच देश के हर घर में बन चुकी है।

आरएसएस यौन शोषण करने वाली संस्था है, यह बात एक स्थापित तथ्य है और आनंदु अजी एक खत्म न होने वाले सिलसिले की एक नई कड़ी, एक नई कहानी और एक नया शिकार भी है। जिन्होंने भी आरएसएस की संगत की है, उन सबके पास इसका अनुभव है। जो यौन उत्पीड़क होते हैं, वे मजेदार ढंग से और चटखारे लेकर इन कहानियों को बखानते हैं और जो उत्पीड़ित होते हैं, वे शर्म से पूरी जिंदगी जिल्लत झेलते हैं। अधिकांश चुप ही रहे हैं, लेकिन कुछ ने अपने मुंह भी खोले हैं। जिन्होंने भी मुंह खोले हैं, गंदगी का परनाला आरएसएस की ओर ही बहा है।

आनंदु अजी ने बचपन से जवानी तक जिल्लत झेली, ऑब्सेसिव-कंपल्सिव डिसऑर्डर नामक बीमारी का शिकार हुआ, जो यौन शोषण के कारण होती है और आखिर में अपना शोषण बर्दाश्त न कर पाने के कारण अपनी ईहलीला समाप्त कर ली। उसने अपने सुसाइड नोट में बताया है कि किस प्रकार आरएसएस के शिविरों में उसका बचपन से लेकर अब तक यौन शोषण किया जाता रहा है। आनंदु ने लिखा है कि उसके माता पिता ने बचपन में ही उसे संघ की शाखा में डाल दिया था। यहां पड़ोसी एनएम ने तीन साल की उम्र में उसका शोषण किया था। जब भी वह कैंप में जाता, उसका शोषण किया जाता था। इसके साथ ही डंडों से कई बार उसे पीटा भी गया। अपने पत्र में आनंदु ने सभी लोगों को सलाह दी है कि आरएसएस वालों से दोस्ती न करें और अपने पिता, भाई या बेटा को भी इससे दूर रखें। सुसाइड नोट को किसी व्यक्ति का मृत्यु-पूर्व विधिक बयान माना जाता है, जिसके आधार पर आरोपियों पर कानूनी कार्रवाई संस्थित की जाती है।

तो इस मामले में आरोपी कौन है? निश्चित रूप से वह पड़ोसी एनएम, जिसका जिक्र आनंदु ने अपने पत्र में किया है और जिसकी पहचान कर ली गई है और वह संस्था आरएसएस, जिस पर विश्वास करके आनंदु के माता-पिता ने अपने बच्चे को इसके शिविरों में भेजा और निश्चित ही मोहन भागवत भी, जो इस संस्था के इस समय प्रमुख हैं। इतनी बड़ी घटना पर न तो भागवत ने मुंह खोला है, जो अपने संगठन को इस देश का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन बताते हैं, और न ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने, जिन्होंने पिछले दिनों ही आरएसएस की कथित देशभक्ति का यशोगान किया था। इन दोनों की आपराधिक चुप्पी यह बताती है कि आरएसएस ब्रांड की पूरी दाल ही काली है और उन पर मुकदमा चलाने के लिए पर्याप्त रूप से प्रथम दृष्टया साक्ष्य मौजूद है। आरएसएस प्रमुख होने के नाते भागवत अपने संगठन के अंदर चलने वाली आपराधिक गतिविधियों की जिम्मेदारी लेने से इंकार नहीं कर सकते।

आरएसएस जब-तब इस देश के नागरिकों को देशभक्ति का प्रमाणपत्र बांटने का काम करती रहती है। जब इस देश में तमाम संस्थाओं को पंजीकृत करने के निर्देश दिए जा रहे हैं और जिसके बिना, बैंक उनके खाते खोलने से इंकार कर रही है, आरएसएस आज भी एक ऐसी अपंजीकृत संस्था है, जिसका कोई संविधान और नियमावली नहीं है और न ही सरकार का इस पर कोई नियंत्रण है। उसके हर साल के हजारों करोड़ रुपयों के हिसाब-किताब, आय-व्यय में कोई पारदर्शिता नहीं हैं। सभी जानते हैं कि संघी गिरोह विदेशों से हर साल भारी मात्रा में धन जुटाता है। इस पर इसकी कारगुज़ारियों के लिए अतीत में स्वतंत्र भारत में कई बार प्रतिबंध लगे हैं, लेकिन आज इसने एक ऐसी गैर-संविधानेत्तर संस्था का रूप अख्तियार कर लिया है, जो पिछले दरवाजे से केंद्र सरकार चला रही है। भाजपा तो मुखौटा है, असली चेहरा तो आरएसएस ही है। इसलिए भाजपा आरएसएस का यशोगान कर सकती है, उसके खिलाफ कार्यवाही नहीं।

आनंदु अजी के मामले में आरएसएस की जो छीछालेदारी हुई है, उसे दबाने के लिए अब पूरे देश में 'आई लव आरएसएस' अभियान चलाया जा रहा है। जिस आरएसएस को लव से इतना हेट है कि हर साल वेलेंटाइन डे पर प्रेमी जोड़ों पर वह अपनी गुंडा फौज को छुट्टा छोड़ देती है, वही आज 'आई लव आरएसएस' अभियान चलाने के लिए बाध्य है और इसकी शुरुआत कर्नाटक से हो चुकी है। आरएसएस में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है, इसलिए यौन शोषण गुदा मर्दन के रूप में ही होता है। इसके पहले कि यह संस्था पूरे देश का गुदा-मर्दन करें, हम सभी को सचेत हो जाना चाहिए, दिवंगत आनंदु अजी की नेक सलाह मान लेनी चाहिए, कम से कम उसे श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए ही सही और हमारे अपने भविष्य को आत्महत्या से बचाने के लिए भी।

2. और अब सावरकर पर उर्दू में किताब!

इतिहास का एक स्थापित तथ्य यह है कि आरएसएस ने कभी भी स्वतंत्रता के संघर्ष में हिस्सा नहीं लिया, इसलिए उसके कहने को भी कोई स्वाधीनता संग्राम सेनानी नहीं है। हां, इस दौरान उसकी अंग्रेजी भक्ति और स्वाधीनता सेनानियों के खिलाफ मुखबिरी के सैकड़ों ऐतिहासिक तथ्य जरूर उजागर हैं।

आज आरएसएस अपने आपको स्वाधीनता संघर्ष का योद्धा दिखाने के फेर में तरह-तरह के करतबों में जुटी नजर आती है, ताकि आम जनता की नजरों में वैधता प्राप्त कर सके। लेकिन इस मामले में घुमा-फिराकर उनके पास एक ही व्यक्ति है सावरकर, जिसे वे हर तरह के जुए में जोतने की कोशिश में लगे रहते हैं। लेकिन अंग्रेजों के खिलाफ सावरकर की लड़ाई भी उसी समय तक जारी रहती है, जब तक वे कांग्रेसी थे और जब तक एक माफीवीर पेंशनयाफ्ता हिंदू महासभाई के रूप में उनका पदार्पण नहीं होता। आजादी के बाद फिर उनका नाम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या में शामिल एक संदिग्ध व्यक्ति के तौर पर ही उछलता है। उनका पूरा जीवन हिंदुत्व की नफ़रती विचारधारा को ही पालने-पोसने में गुजर गया।

नेशनल कौंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाली एक संस्था है, जिसे उर्दू परिषद के नाम से भी जाना जाता है। संघी गिरोह की उर्दू से हिकारत किसी से छुपी हुई नहीं है और वे इस खूबसूरत और प्यारी भाषा को, जिसका जन्म हमारे देश की मिट्टी में ही हुआ है, को मुल्ला-मौलवी और आतंकवाद पैदा करने वाली भाषा ही मानते हैं। इस परिषद ने, जिस पर केंद्र सरकार का पूरा प्रशासनिक नियंत्रण है, ने हाल ही में सावरकर पर लिखी पुस्तक का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया है। इस पुस्तक के विमोचन समारोह में केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल ने दावा किया है कि यदि सावरकर के बताए मार्ग पर चला जाता, तो भारत को संभावित विभाजन से बचाया जा सकता था। यह इतिहास का विकृतिकरण और मिथ्याकरण करना है, क्योंकि भारत विभाजन की वैचारिक नींव रखने वालों में, वास्तव में, सावरकर का नाम ही प्रमुखता से सामने आता है। बाद में, सावरकर के इस विचार को मुस्लिम लीग ने आगे बढ़ाया।

मूल किताब 2021 में सामने आई थी, जिसका नाम था -- वीर सावरकर : द मैन हू कुड हैव प्रीवेन्टेड पार्टिशन। इसके लेखक उदय माहुरकर और चिरायु पंडित हैं। इसी पुस्तक का उर्दू अनुवाद जामिया मिलिया इस्लामिया के कुलपति प्रोफेसर मज़हर आसिफ ने किया है, जिसका विमोचन पिछले दिनों प्राइम मिनिस्टर म्यूजियम में किया गया था। इसके बावजूद कि पूरी किताब में सावरकर की हिन्दुत्व की विचारधारा का बचाव किया गया है, विमोचन समारोह में माहुरकर ने दावा किया कि सावरकर मुस्लिमों समेत सभी सामाजिक वर्गों की भागीदारी को देश के सर्वांगीण विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण मानते थे और वे भारत विभाजन के सख्त विरोधी थे। उन्होंने यह भी दावा किया कि पुस्तक "एक खास विचारधारा द्वारा फैलाई गलत धारणाओं" का खंडन करती है। सभी समझ सकते हैं कि यह खास विचारधारा कौन-सी है, जिसका किताब में खंडन किया गया है। यह खास विचारधारा वामपंथी विचारधारा है, जिसके खिलाफ वे हवा में तलवार भांज रहे हैं। उल्लेखनीय है कि माहुरकर भारत सरकार के सूचना आयुक्त हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि भारत सरकार को सही सूचनाएं देने के बजाए उन्होंने आम जनता के बीच वैचारिक भ्रम और कुहासा फैलाने की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी ओढ़ ली है। सावरकर के बारे में जो ऐतिहासिक तथ्य हैं, वे दस्तावेजी हैं और वामपंथ ने उसे अपनी कल्पना से गढ़ा नहीं है।

दरअसल, संघी गिरोह को वैज्ञानिकता से, तथ्यों से और ऐतिहासिक सच्चाई से हमेशा से ही परहेज रहा है। आज भाजपा सरकार अपनी सत्ता के ताकत के सहारे सावरकर को लेकर एक नया नैरेटिव गढ़ने की कोशिश कर रही है, जो ऐतिहासिक प्रमाणों के उलट है। इतिहास यही है कि मुस्लिम लीग ने 1940 में द्विराष्ट्र के सिद्धांत को अपनाया था, जबकि सावरकर ने 1937 में ही हिंदू महासभा के समावेश में भाषण देते हुए ने कहा था : "देश में दो राष्ट्र हैं हिंदू और मुस्लिम।" इस प्रकार, मुस्लिम लीग तो केवल हिंदू महासभा की नकल करके बढ़त लेने की कोशिश कर रही थी। इतिहास की सच्चाई यही है कि आजादी के बाद जब सरदार वल्लभभाई पटेल देशी रियासतों को भारत में मिलाने का अभियान चला रहे थे, उस समय त्रावणकोर के दीवान सीपी रामासामी ने भारत से स्वतंत्र होने की घोषणा की थी और सावरकर ने इसका समर्थन किया था, ताकि एक धर्मनिरपेक्ष भारत के गठन को मात दी जा सके। संघी गिरोह स्वाधीन भारत को 'हिंदू राष्ट्र' बनाने का सपना पाले हुए थे और उन्होंने धर्मनिरपेक्ष भारत की स्थापना का पुरजोर विरोध किया था। इसी विरोध का एक दुष्परिणाम था, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या, जिसकी जिम्मेदारी के प्रति सावरकर और हिंदू महासभा हमेशा संदिग्ध रहे हैं।

ऐसे विवादास्पद राजनीतिक हस्तियों पर कोई किताब प्रकाशित करने का उर्दू परिषद का इससे पहले कभी कोई इतिहास नहीं रहा है। लेकिन यदि अब ऐसा हो रहा है, तो साफ है कि उर्दू परिषद जैसी साहित्यिक संस्था का भी अपनी राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए भाजपा दुरूपयोग कर रही है। उर्दू परिषद की स्वायत्तता का हरण आज का सबसे बड़ा समाचार है।

(टिप्पणीकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

बिहार चुनाव - जातीय जुगलबंदी और आरक्षित वर्गों की सोच प्रभाव डालेगी

शिवानन्द मिश्रा

आसन्न बिहार चुनाव केंद्र में सत्तारूढ़ दल के लिए फांस बन गया है। अल्पमत के कारण अत्यंत छोटी पार्टियों को भी खुश करने की नौबत आ गई है। बीजेपी की केंद्रीय मजबूरी हो गई है कि किसी को नाराज नहीं कर सकती वरना केंद्र की सरकार अल्पमत में आ सकती है।

चिराग में ऐसे कौन से सुरखाब के पर लगे हैं कि बीजेपी ने अपने घनिष्ठ साथियों को नाराज कर चिराग ही चिराग रौशन कर डाले ?

सबसे बड़ी नाराजगी तो नीतीश कुमार की है जिन्हें बीजेपी से ज्यादा सीटें नहीं मिल पाई। जीतनराम माझी भी खासे नाराज हैं। चिराग का कद 29 सीट देने का तो बिल्कुल नहीं। राजग में संतोष बनाए रखने के लिए उन्हें अधिकतम 20 सीटें मिलनी चाहिए थी। तब नीतीश और बीजेपी को अधिक सीटें मिल जाती। माझी और कुशवाहा भी खुश हो जाते। चिराग पासवान पिछली बार अकेले लड़े थे। तब एक भी सीट नहीं जीत पाए थे। यह ठीक है बिहार में करीब 20% दलित मतदाता हैं लेकिन वे सारे चिराग के पास हैं, यह किसने कह दिया ? बीजेपी, जेडीयू, कांग्रेस और राजद के पास दलित वोट नहीं हैं क्या ? केवल 1.5 % वोट ही चिराग़ के पास है बस।

राजनीति में जातिवाद और आरक्षण के कारण राजनीतिक दलीय संतुलन गड़बड़ा गया है। छोटी छोटी पार्टियां जातीय राजनीति की आड में बड़े दलों को खासा ब्लैकमेल कर रही हैं। जाति प्रथा का अंत मुश्किल है। कभी हो भी हो जाए तो आरक्षण कहीं जाने वाला नहीं।

मसला साफ है कि चिराग जैसों की पूछ तो बनी रहेगी, चुनावी दादागिरी चलती रहेगी। बड़े राजनैतिक दलों की मजबूरी है यह जातीय संतुलन और राजनीति में भी आरक्षित कोटा।

उम्मीदवार से सबसे अधिक दोहन करने वाली अभी भारत में यही पार्टी है।

सभी दलों को इसका पालन करना पड़ता है। देश की राजनीति ही जातीय गणित पर निर्भर हो चली है। बात बिहार की हो रही है तो समझ लीजिए कि बिहार तो जातिवाद और क्षेत्रीय दलों का जनक ही माना जाता है। यूपी, बिहार और तमिलनाडु से बड़े जातीय ओलम्पिक भला देश में और कहां हुए हैं ? लालू, मुलायम और करुणानिधि क्षेत्रवाद के जन्मदाता हैं।

तो फिर देखिए बिहार और देखिए बिहार के घोर जातिवादी नेताओं की धार ?

बिहार में राजनीति का पेंच टुकड़ों टुकड़ों में फंस गया है। बेशक चुनाव ऊपर से एनडीए बनाम इंडी एलाइंस लगेगा लेकिन चार बड़े दलों का भविष्य छोटे छोटे दलों की जातीय गोलबंदी पर टिका हुआ है। यह कहना बिल्कुल आसान नहीं कि कौन बनेगा मुख्यमंत्री ? केंद्र में अल्पमत रहने के कारण छुटभैये पार्टी, परिवार पार्टी की अहमियत बढ़ गई है। इसका खामियाजा बीजेपी को बिहार चुनाव में स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है।

खासकर पीके एक ऐसे एंगल से राजनीति में उतरे हैं कि सभी दलों की मुसीबत बन सकते हैं। राजनीति में उन्हें हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। खास बात यह कि वे सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़कर सभी को घात पहुंचा रहे हैं। प्रशांत किशोर एक कुशल चुनाव रणनीतिकार की भूमिका में रहे हैं। उन्होंने अब तक तमाम बड़े दलों के लिए चुनाव कैंपेन चलाए हैं, चुनाव भी जिताए हैं। 2014 में बीजेपी की इलेक्शन कैंपेन भी पीके ने चलाई थी लेकिन दूसरों के पैसों से दूसरों को जिताना उतना मुश्किल नहीं जितना अपने पैसों से खुद को जिताना ? वैसे पीके का सीधा निशाना तेजस्वी पर है, अतः इसका लाभ एनडीए को मिल सकता है। बहरहाल यह जनता का चुनाव है, जातीय जुगलबंदी और आरक्षित वर्गों की सोच खासा प्रभाव परिणामों पर डालेगी।

क्या सिद्धारमैया शिवकुमार के बजाय जारकीहोली को अपना उत्तराधिकारी बनायेंगे ?

रामस्वरूप रावतसरे

कर्नाटक की राजनीति में एक बार फिर हलचल मच गई है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के बेटे और एमएलसी यतींद्र सिद्धारमैया के एक बयान ने पूरे राज्य में सियासी तापमान बढ़ा दिया है। यतींद्र ने कहा कि उनके पिता अब राजनीति के आखिरी दौर में हैं और 2028 का चुनाव नहीं लड़ेंगे। इतना ही नहीं, यतींद्र ने यह भी कहा कि सिद्धारमैया की विरासत आगे लोक निर्माण मंत्री सतीश जारकीहोली को संभालनी चाहिए। इस बयान ने कॉन्ग्रेस में नए समीकरणों की चर्चा तेज कर दी है, खासकर तब जब डीके शिवकुमार पहले से ही सिद्धारमैया के बाद मुख्यमंत्री पद के सबसे बड़े दावेदार माने जाते हैं।

कर्नाटक में कॉन्ग्रेस सरकार बनने के बाद से ही सत्ता में 'ढाई-ढाई साल के मुख्यमंत्री' फॉर्मूले की चर्चा चल रही है। माना जाता है कि सिद्धारमैया और डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार के बीच समझौता हुआ था कि दोनों आधा-आधा कार्यकाल संभालेंगे लेकिन अब यतींद्र का बयान इस राजनीतिक समझौते पर नए सवाल खड़े कर रहा है।

राज्य की राजनीति पहले ही मुख्यमंत्री की कुर्सी को लेकर दो खेमों में बँटी हुई थी। एक तरफ सिद्धारमैया का 'आहिंदा गुट' और दूसरी तरफ शिवकुमार का 'वोक्कालिगा गुट'। यतींद्र के बयान ने इन दोनों गुटों के बीच तनाव और गहराने का संकेत दे दिया है।

जानकारी के अनुसार यतींद्र सिद्धारमैया ने एक कार्यक्रम में कहा कि उनके पिता अब अपने राजनीतिक जीवन के आखिरी पड़ाव पर हैं और 2028 का चुनाव नहीं लड़ेंगे। यतींद्र ने कहा, "मेरे पिता को अब सतीश जारकीहोली जैसे नेताओं का मार्गदर्शन करना चाहिए। वे मजबूत विचारधारा और सामाजिक न्याय की राजनीति में यकीन रखते हैं।" यतींद्र ने आगे कहा, "सतीश जारकीहोली में निश्चित रूप से मेरे पिता की जगह लेने की क्षमता है। वे अगले मुख्यमंत्री बन सकते हैं।" इस बयान ने ऐसा माहौल बना दिया जैसे सिद्धारमैया अपने उत्तराधिकारी का नाम खुद तय कर चुके हों जिससे डीके शिवकुमार की दावेदारी पर सीधा असर पड़ सकता है।

जानकारी के अनुसार, सतीश जारकीहोली इस समय कर्नाटक के लोक निर्माण मंत्री हैं। वे उत्तर कर्नाटक के बेलगावी जिले के यमकनमर्दी विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं। 63 वर्षीय जारकीहोली अनुसूचित जाति के वाल्मीकि समुदाय से आते हैं और लंबे समय से सामाजिक न्याय और पिछड़े वर्गों के हक की लड़ाई लड़ते रहे हैं। वे मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के 'आहिंदा' (अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग और दलित) गठबंधन के मजबूत स्तंभ माने जाते हैं। इस गठबंधन की राजनीति ही सिद्धारमैया की सबसे बड़ी ताकत बताई जा रही है।

सतीश जारकीहोली राजनीतिक रूप से बेहद प्रभावशाली परिवार से हैं। उनके भाई रमेश जारकीहोली पहले कॉन्ग्रेस में थे लेकिन 2018 में भाजपा में चले गए और मंत्री बने। वहीं, उनकी बेटी प्रियंका जारकीहोली कॉन्ग्रेस की सांसद हैं। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि सिद्धारमैया गुट किसी ऐसे नेता को आगे बढ़ाना चाहता है जो उनकी विचारधारा और सामाजिक एजेंडे को आगे ले जा सके। जारकीहोली इस प्रोफाइल में पूरी तरह फिट बैठते हैं।

यतींद्र के बयान के बाद पत्रकारों ने जब डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार से सवाल किया, तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि मुख्यमंत्री बदलने का कोई सवाल ही नहीं है। शिवकुमार ने कहा, "सिद्धारमैया हमारे नेता हैं। वे पूरा कार्यकाल मुख्यमंत्री रहेंगे। पार्टी में नेतृत्व परिवर्तन को लेकर कोई चर्चा नहीं हुई है। जो भी फैसला होगा, वह हाईकमान लेगा।"

शिवकुमार का यह बयान यह दिखाने की कोशिश थी कि वे आलाकमान के प्रति वफादार हैं और जल्दबाजी में कोई प्रतिक्रिया नहीं देना चाहते हालाँकि, कॉन्ग्रेस के अंदर यह माना जा रहा है कि यतींद्र का बयान कहीं न कहीं शिवकुमार गुट के लिए 'राजनीतिक चेतावनी' की तरह है। बयान पर विवाद बढ़ने के बाद यतींद्र सिद्धारमैया ने सफाई दी। यतींद्र ने कहा कि उनका मतलब मुख्यमंत्री बदलने या किसी को हटाने से नहीं था। उन्होंने कहा, "नेतृत्व परिवर्तन की बात गलत है। मैंने सिर्फ इतना कहा था कि कॉन्ग्रेस को विचारधारा वाले नेताओं को आगे बढ़ाना चाहिए। मेरे पिता 2028 तक एक्टिव रहेंगे और पूरा कार्यकाल पूरा करेंगे।"

यतींद्र ने यह भी कहा कि मुख्यमंत्री बदलने पर कोई चर्चा नहीं हुई है। अगर कभी बदलाव होता है तो वह फैसला पार्टी आलाकमान और विधायक मिलकर लेंगे। यतींद्र की यह सफाई तो आई लेकिन तब तक राजनीतिक हलकों में यह चर्चा शुरू हो चुकी थी कि सिद्धारमैया गुट भविष्य की तैयारी कर रहा है।

जानकारों के अनुसार डीके शिवकुमार लंबे समय से मुख्यमंत्री बनने की इच्छा रखते हैं। वे कर्नाटक के शक्तिशाली वोक्कालिगा समुदाय से आते हैं और दक्षिण कर्नाटक में उनका मजबूत जनाधार है। कॉन्ग्रेस की सरकार बनने से पहले भी उन्होंने सिद्धारमैया को समर्थन देने में अहम भूमिका निभाई थी लेकिन अब वे उम्मीद कर रहे थे कि 2025 के बाद उन्हें सीएम बनने का मौका मिलेगा। यतींद्र का यह बयान इस उम्मीद पर पानी फेरने जैसा है। सिद्धारमैया गुट का झुकाव किसी दलित नेता की ओर दिखाना यह संकेत है कि सत्ता का संतुलन बदल सकता है।

राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि अगर सिद्धारमैया जारकीहोली को आगे बढ़ाते हैं, तो वे अपने 'आहिंदा वोट बैंक' को मजबूत रखना चाहेंगे, जबकि शिवकुमार का आधार मुख्य रूप से दक्षिणी जिलों में सीमित है।

जानकारों के अनुसार 'आहिंदा' शब्द कन्नड़ के तीन शब्दों से बना है- अल्पसंख्यक (ए), हिंदू पिछड़ा वर्ग (एचआई), और दलित (डीए)। इस मॉडल की सोच सबसे पहले पूर्व मुख्यमंत्री देवराज उर्स ने दी थी लेकिन इसे आधुनिक दौर में सिद्धारमैया ने मजबूत किया। उनकी राजनीति का फोकस सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता रहा है। सतीश जारकीहोली उसी राजनीतिक विचारधारा से आते हैं। वे लगातार सामाजिक मुद्दों पर सक्रिय रहते हैं और सिद्धारमैया के करीबी नेताओं में शामिल हैं। इसलिए जब यतींद्र ने उन्हें 'अगला मुख्यमंत्री' बताया तो इसे सिर्फ एक बयान नहीं बल्कि एक राजनीतिक संकेत माना गया।

यतींद्र सिद्धारमैया का बयान भले ही 'गलतफहमी' के रूप में पेश किया गया हो, लेकिन इसने कॉन्ग्रेस के भीतर के समीकरणों को उजागर कर दिया है। कर्नाटक की सत्ता अब दो रास्तों पर खड़ी है- एक तरफ 'आहिंदा राजनीति' का चेहरा सतीश जारकीहोली और दूसरी तरफ 'वोक्कालिगा शक्ति' के प्रतीक डीके शिवकुमार है। अब यह तय माना जा रहा है कि आने वाले महीनों में कर्नाटक की राजनीति और भी दिलचस्प मोड़ लेने वाली है।

केवल सरकारी सख्ती से नहीं मिटेगा नक्सलवाद

राजेश जैन

नक्सलवाद सिर्फ कानून-व्यवस्था की समस्या नहीं है, यह एक सामाजिक असंतोष का चेहरा भी है। सरकारी सख्ती जरूरी है, लेकिन भरोसा और इंसाफ़ उससे भी ज्यादा जरूरी है।

साल था 1967। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग ज़िले का एक छोटा-सा गांव — नक्सलबाड़ी। वहीं से उठी थी नक्सलवाद की चिंगारी। किसानों और मज़दूरों के हक़ की लड़ाई के नाम पर शुरू हुआ यह आंदोलन धीरे-धीरे हथियारबंद विद्रोह में बदल गया। इसका असर पश्चिम बंगाल से निकलकर बिहार, झारखंड, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र तक फैल गया। माओवादियों ने दावा किया कि वे समाज में हाशिये पर खड़े लोगों — आदिवासियों और भूमिहीन किसानों — की आवाज़ हैं लेकिन बंदूक की आवाज़ ने धीरे-धीरे उस आवाज़ को भी दबा दिया जिसके लिए यह आंदोलन शुरू हुआ था। सरकार ने बीते वर्षों में इस पर सख्ती बढ़ाई है। 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त करने का लक्ष्य तय किया गया है। कई ज़िलों में हालात बदले हैं। बड़ी संख्या में माओवादी आत्मसमर्पण कर रहे हैं लेकिन सवाल अब भी वही है — क्या सिर्फ सरकारी सख्ती से नक्सलवाद खत्म हो जाएगा?

अधूरे सपनों की कहानी में हैं इस आंदोलन की जड़ें

आज़ादी के बाद लोकतंत्र ने हर नागरिक को समानता और न्याय का सपना दिखाया लेकिन हर सपना हर किसी के हिस्से में नहीं आया। देश के दूरदराज़ इलाकों में रहने वाले आदिवासी, भूमिहीन किसान और वंचित तबके के लोग विकास की दौड़ में बहुत पीछे छूट गए। उन्हें न शिक्षा मिली, न रोज़गार, न न्याय की सुनवाई। इन्हीं अधूरे सपनों और टूटी उम्मीदों से निकला वह लावा जिसने नक्सल आंदोलन को जन्म दिया। यहां एक फर्क समझना ज़रूरी है कि संगठन और विचारधारा दो अलग चीज़ें हैं। संगठन को तो सुरक्षा बलों से खत्म किया जा सकता है लेकिन उस विचार को कैसे मिटाया जाएगा जो अन्याय और असमानता के खिलाफ खड़ा होता है? आज माओवादी संगठन बिखर चुके हैं, उनके ठिकाने उजड़ गए हैं लेकिन उनके समर्थक विचार अब भी उन जगहों में जिंदा हैं जहां लोग कहते हैं — "हमें आज भी सुना नहीं गया।"

आदर्श और असलियत के बीच की दूरी

शुरुआती नक्सली नेताओं — चारु मजूमदार, कनु सान्याल जैसे लोगों ने बदलाव के लिए लोकतांत्रिक रास्ते की बजाय सशस्त्र क्रांति को चुना। उनकी प्रेरणा थी चीन की माओ त्से तुंग की कृषक क्रांति जिसने बंदूक के दम पर सत्ता पलट दी थी लेकिन भारत चीन नहीं था। यहां लोकतंत्र था, पंचायतों की जड़ें थीं, मीडिया और शिक्षा की पहुंच थी। फिर भी, देश के कई ऐसे इलाके थे जहां सरकार की मौजूदगी सिर्फ कागज़ों पर थी. वहीं नक्सल विचारधारा ने जड़ें जमाईं।

दुश्मन बदले, पीड़ित वही रहे

शुरुआत में ज़मींदार और साहूकार नक्सलियों के निशाने पर थे लेकिन 1990 के बाद जब देश में उदारीकरण आया, अर्थव्यवस्था बदली और बड़ी कंपनियों का रुख जंगलों और खनन क्षेत्रों की ओर हुआ तो संघर्ष का चेहरा बदल गया। झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश में कई गांवों को खनन परियोजनाओं ने उखाड़ फेंका। विस्थापितों को मुआवजा नहीं मिला, न नया ठिकाना। नक्सली इस खालीपन में घुस आए। उनका कहना था-हम तुम्हारे हक़ की लड़ाई लड़ेंगे लेकिन बंदूक से विकास का रास्ता नहीं निकलता। जिस बंदूक से उन्होंने न्याय मांगा, उसी बंदूक ने गांवों को उजाड़ा और पीढ़ियों को हिंसा के दलदल में धकेल दिया।

2004: जब आंदोलन ने नया चेहरा लिया

लंबे समय तक बिखरे गुटों में बंटे नक्सलियों ने 2004 में एकजुट होकर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (माओइस्ट) बनाई। पीपुल्स वार ग्रुप और माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर के विलय के बाद संगठन ने राष्ट्रीय ढांचा खड़ा किया — सेंट्रल कमेटी, पोलित ब्यूरो और पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी जैसी सैन्य इकाइयां बनीं। इस दौर में उनका नेटवर्क करीब 90 ज़िलों तक फैला। कई इलाकों में "जन न्यायालय" और "जन सरकार" जैसे समानांतर तंत्र खड़े किए गए। कहीं भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई हुई तो कहीं निर्दोषों की हत्या और अपहरण। यही वह मोड़ था, जब एक "विचार" धीरे-धीरे "युद्ध" बन गया।

आम आदमी ने चुकाई सबसे बड़ी कीमत

हर संघर्ष की सबसे बड़ी मार वही झेलता है जो सबसे कमज़ोर होता है। नक्सल प्रभावित जिलों के गांवों में स्कूल बंद हो गए, शिक्षक और डॉक्टर नहीं पहुंचे क्योंकि सुरक्षा नहीं थी। महिलाएं और बच्चे लगातार भय में जीते रहे। किसान अपनी ज़मीन छोड़ने पर मजबूर हुए, रोज़गार ठप पड़ा और सबसे दर्दनाक — भरोसा खत्म हो गया। लोग नहीं जानते थे कि असली दुश्मन कौन है — सरकार या नक्सली। जब दोनों ओर से बंदूकें तनी हों तो किसी पर भी भरोसा करना कठिन हो जाता है।

सरकार की नई रणनीति — बंदूक के साथ विकास

पिछले एक दशक में तस्वीर बदली है। 2020 के बाद से ऑपरेशन समर्पण, ऑपरेशन प्रहार और ऑपरेशन स्टील जैसे अभियानों ने नक्सलियों की कमर तोड़ दी है। ड्रोन, सैटेलाइट, मोबाइल ट्रैकिंग और आधुनिक इंटेलिजेंस नेटवर्क ने गुरिल्ला युद्ध को लगभग अप्रभावी बना दिया। 2023-24 में माओवादी संगठनों ने स्वीकार किया कि उन्होंने 350 से अधिक कैडर खोए हैं। नेतृत्व कमजोर हुआ, नई भर्ती रुकी, जनता का समर्थन घटा है।

इसके साथ ही सरकार ने विकास को हथियार बनाया। पहली बार सड़कों, बिजली, मोबाइल टावर, बैंकिंग और रोजगार योजनाओं को "रेड जोन" तक ले जाया गया। कई आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों को पुनर्वास और रोज़गार मिला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2026 तक नक्सलवाद को समाप्त करने का लक्ष्य तय किया है। निश्चित रूप से यह अब तक की सबसे संगठित रणनीति है लेकिन यह पूरी कहानी नहीं है।

क्या नक्सलवाद वास्तव में खत्म हो जाएगा?

इतिहास कहता है कि किसी विचार को गोली से नहीं मारा जा सकता। नक्सल आंदोलन तब खत्म नहीं होगा जब आख़िरी माओवादी मारा जाएगा बल्कि तब जब कोई यह महसूस होगा कि बंदूक नहीं, शिक्षा और वोट ही बदलाव की ताक़त हैं। दरअसल, जब समाज में न्याय नहीं होता, तब विद्रोह जन्म लेता है और जब वह विद्रोह हिंसा में बदलता है, तो सबसे ज़्यादा नुकसान भी उसी समाज को झेलना पड़ता है। आज के युवाओं को बंदूक नहीं, बेहतर भविष्य चाहिए। अगर असमानता और शोषण बना रहा, तो यह आंदोलन किसी और नाम से, किसी और रूप में लौट आएगा।

परीक्षा में नवाचार के समांतर चुनौतियां

विजय गर्ग

मूल रूप से शिक्षा चेतना के निर्माण का कार्य करती है। तभी आज भी हम अक्सर जगह-जगह लिखा पाते हैं- 'सा विद्या या विमुक्तये', अर्थात वह विद्या, मुक्त होने का रास्ता दिखाए। कोई भी विद्या तभी यह मार्ग दिखा पाएगी, जब वह चेतना में परिवर्तन का काम करे। और चेतना उर्ध्वगामी तब बनती है, यानी चेतना का विकास तब होता है, जब कल्पनाशीलता, विश्लेषण करने की क्षमता, ज्ञानेंद्रियों का विकास, विवेक और संवेदनशीलता का विकास छात्र के भीतर हो शायद इसलिए हमें प्राचीन इतिहास में होने वाली परीक्षाओं का संबंध जीवन के व्यावहारिक ज्ञान मिलता है।

परीक्षा के मानकों और जटिलताओं के मसले पर पिछले लंबे समय से बहस होती रही है। इसमें यह सवाल भी उठता रहा है कि क्या हमारी मौजूदा परीक्षा प्रणाली किसी विद्यार्थी के भीतर की संभावनाओं और क्षमता का आकलन कर पाने में तरह सक्षम ह होती है। परीक्षा क्यों ली जाती है? इसका मापदंड क्या सिर्फ पढ़े हुए विषय का आकलन भर है ? अगर हम भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में परीक्षा से जुड़े तथ्यों को ध्यान से पढ़ें तो पता चलता है कि परीक्षा सिर्फ विषय ज्ञान का मूल्यांकन करना मात्र नहीं होती परीक्षा शिक्षा पाने के क्रम में व्यक्तित्व के विकास के आकलन का एक माध्यम भी है। तब शिक्षक परीक्षा के दौरान सिर्फ विषयों की जानकारी आधारित आकलन नहीं करते थे। वे इस बात का भी मूल्यांकन करते थे कि उनके शिष्य का विवेक किस स्तर का है और किसी भी परिस्थिति में बौद्धिक, व्यावहारिक एवं नैतिक रूप विश्लेषण करने की उनकी क्षमता कितनी है। परीक्षा के माध्यम से वे शिष्य को हर कसौटी जांचते-परखते थे और यह भी देखते थे कि उनकी चेतना में किन गुणों का कितना विकास हो पाया है।

मूल रूप से शिक्षा चेतना के निर्माण का कार्य करती है। तभी आज भी हम अक्सर जगह-जगह लिखा पाते हैं- 'सा विद्या या विमुक्तये', अर्थात वह विद्या, मुक्त होने का रास्ता दिखाए। कोई भी विद्या तभी यह मार्ग दिखा पाएगी, जब वह चेतना में परिवर्तन का काम करे। और चेतना उर्ध्वगामी तब बनती है, यानी चेतना का विकास तब होता है, जब कल्पनाशीलता, विश्लेषण करने की क्षमता, ज्ञानेंद्रियों का विकास, विवेक और संवेदनशीलता का विकास छात्र के भीतर हो शायद इसलिए हमें प्राचीन इतिहास में होने वाली परीक्षाओं का संबंध जीवन के व्यावहारिक ज्ञान मिलता है। अब चाहे वह । अब चाहे वह विज्ञान, गणित या फिर सामाजिक ज्ञान हो, या पारंपरिक हनर यह वह विज्ञन हुनर का ज्ञान हो। वास्तव यह एक तरह से खुली किताब वाली ही परीक्षा थी, जहां जीवन को एक किताब के रूप में खोल कर उत्तर देने की अनुमति थी। तब ज्ञान बंद किताब तक सीमित नहीं था, बल्कि किताबों का ज्ञान जीवन की ओर उन्मुख था।

साधारण अर्थों में खुली किताब वाली परीक्षा का मतलब है वैसी परीक्षा जहां छात्र किताबें खोल कर उत्तर लिखने को स्वतंत्र हों, उसे नकल नहीं माना जाएगा। एक संदर्भ के साथ इस पर बात की जा सकती है। है। दिल्ली के एक विश्वविद्यालय में में स्नातकोत्तर की प्रथम परीक्षा में एक प्राध्यापक ने 'ओपन बुक एग्जाम' रखा, यानी खुली किताब वाली परीक्षा । उसमें एक विषय के पहले सत्र की पहली परीक्षा में छात्रों को प्रश्न देते हुए कहा गया कि आप स्वतंत्र हैं, किसी भी किताब को खोल कर प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। प्रश्न मुश्किल से छह रहे होंगे और उनमें से छात्रों को सिर्फ दो या तीन प्रश्न हल करने थे। छात्रों ने प्रश्न देखा और किताबें खोलने लगे। प्राध्यापक मुस्कुरा रहे थे, छात्रों को किताबों में झांकते हुए देख कर छोटे शहरों से आए छात्र छात्राओं के लिए खुली किताब वाली परीक्षा देने का यह प्रथम अवसर था। इससे पहले खुली किताब वाली परीक्षा मतलब नकल, यही जाना और सुना गया था। परीक्षा में सवाल ऐसे थे कि उनका उत्तर सिर्फ किताबों से देख कर नहीं उतारा जा सकता था। उसके लिए विवेक, कल्पनाशीलता और विश्लेषण करने की क्षमता की आवश्यकता थी।

आज जिस तरह की परीक्षाएं होती हैं, उनमें विश्लेषण का शायद ही कोई स्थान होता है, वह सिर्फ तथ्य आधारित होती हैं। पिछले दिनों सीबीएसई ने एक महत्त्वपूर्ण फैसला किया, जिसमें शैक्षणिक सत्र 2026-27 से नौवीं कक्षा का 'ओपन बुक एग्जाम' यानी खुली किताब वाली परीक्षा होगी। शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में यह एक बड़ा कदम हो सकता है। मगर तभी संभव होगा, जब उस विधि से पढ़ाने की पर्याप्त तैयारी होगी और इसके लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों को अपनी कल्पनाशीलता और विवेक का इस्तेमाल करने की स्वतंत्रता होगी। पढ़ने और पढ़ाने का ऐसा तरीका हो, जहां विद्यार्थी के विश्लेषण, आलोचनात्मक दृष्टि एवं सोच की शक्ति को दबाया न जाए, बल्कि विकसित किया जाए। प्रश्न के रटे-रटाये उत्तर नहीं देने पर अनुत्तीर्ण हो जाने का डर विद्यार्थी को न सताए । कोन । दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अगर शिक्षक "ओपन बुक एग्जाम' कला को को जानता ही न हो, या उसके मर्म को समझता ही न हो, तो इस परीक्षा की जो विशेषता है, वह मर जाएगी और उसका उल्टा असर होगा। खुली किताब वाली परीक्षा में ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं, जिसका उत्तर किसी किताब या नोट बुक से सीधे नहीं उतारा जा सकता। इसके लिए विद्यार्थियों को पढ़े विषय की जानकारी का इस्तेमाल अपने विवेक से करते हुए उसे ज्ञान में तब्दील कर उत्तर लिखना होता है। कोई भी शिक्षा जब विवेक, बुद्धि और कल्पना के साथ व्यवहार में लाई जाती है, तो वह ज्ञान में परिवर्तित हो जाती है। खुली किताब वाली परीक्षा इसका एक माध्यम हो सकती है। वास्तव में शिक्षा में जब संवाद का स्थान बने, तभी खुली किताब वाली परीक्षा का कोई मतलब बनता है।

की उस एक शिक्षक जब संवाद स्थापित करने में सफल होता है, तो सीधे- सोधे रटी-रटाई पद्धति पर प्रश्न पूछना कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी के योगदान का वर्णन करें, इसके बजाय यह पूछा जाना महत्त्वपूर्ण है कि आज के समय में अगर महात्मा गांधी होते तो वे किस तरह के बदलाव का प्रयास करते। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए एक विद्यार्थी न सिर्फ महात्मा गांधी के काम का विश्लेषण करने में सक्षम होता, बल्कि वह देश की वर्तमान स्थिति को भी समझने का प्रयास करता और उसके भीतर वर्तमान में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता के महत्त्व की समझ भी विकसित होती साथ उसके भीतर एक नागरिक होने की जिम्मेदारी का बोध भी आता। जहां तक खुली किताब वाली परीक्षा का संदर्भ है, तो अगर इस प्रश्न का उत्तर देना हो कि 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी के योगदान का वर्णन करें, तो खुली किताब से विद्यार्थी हूबहू उत्तर उतार सकता है और वह नकल ही कहलाएगी। ही खुला

ऐसे में हमें तय करना होगा कि हम बच्चों में नकल या कापी करने की योग्यता का विकास करना चाहते हैं या फिर विश्लेषण, अवलोकन, कल्पनाशीलता, आलोचनात्मक विश्लेषण की क्षमता और विवेक का विकास चाहते हैं। इसमें दोराय नहीं कि नौवीं कक्षा में खुली किताब वाली परीक्षा 'की' पहल शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम साबित हो सकता है, लेकिन इसके लिए हर स्तर पर व्यापक तैयारी की जरूरत है। पठन-पाठन से लेकर शिक्षकों और विद्यार्थियों को इसके लिए नए तरीके से तैयार करना होगा। किताबी ज्ञान के साथ- साथ विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को केंद्र में रखना होगा। शिक्षकों को भी इसके लिए प्रशिक्षित करने की जरूरत है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह विद्यार्थियों को नकलची बनाने या किताब की प्रतिलिपि निकालने वाली मशीन की तरह बनाने जैसा ही होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

सेवानिवृत्ति पुनः आविष्कार: वरिष्ठ उद्यमी, प्रशिक्षक और शिक्षार्थी

विजय गर्ग

भारत में सेवानिवृत्ति लंबे समय से विश्राम का पर्याय रहा है - दशकों की समर्पित सेवा के बाद पीछे हटने का समय। हालाँकि, परिदृश्य बदल रहा है। दीर्घायु, स्वचालन और डिजिटल अर्थव्यवस्था द्वारा परिभाषित युग में "रिटायरमेंट" की अवधारणा को पुनः परिभाषित किया जा रहा है। वृद्ध भारतीयों की बढ़ती संख्या सेवानिवृत्ति के बाद अपने वर्षों को नियंत्रण में ले रही है, उन्हें अंत नहीं बल्कि एक रोमांचक नया अध्याय मानते हैं जो पुनर्विकास, उद्यमशीलता और जीवन भर सीखने पर केंद्रित है।

दीर्घायु लाभांश की प्रतिबद्धता : भारत की जनसांख्यिकीय कहानी अधिकांश लोगों से अधिक तेजी से बदल रही है। बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और लंबे जीवन प्रत्याशा के साथ - अब औसतन 71 वर्ष - लाखों लोग एक सक्रिय "तीसरी उम्र" में प्रवेश कर रहे हैं, शारीरिक रूप से फिट और मानसिक रूप से चपल। फिर भी, सेवानिवृत्ति के बाद केवल एक अंश ही आर्थिक या सामाजिक रूप से संलग्न रहता है।

पारंपरिक मॉडल - युवावस्था में अध्ययन, मध्य आयु तक काम करना, 60 के दशक में सेवानिवृत्त होना - अब एक सदी की उम्र के लिए उपयुक्त नहीं है। चुनौती स्पष्ट है: जैसे-जैसे लोग अधिक समय तक रहते हैं, उन्हें लंबे समय तक सीखने की भी आवश्यकता होती है। विश्व आर्थिक मंच इसे "100 वर्ष की जीवन अर्थव्यवस्था" कहता है, जहां न केवल रोजगार के लिए बल्कि उद्देश्य और मानसिक कल्याण के लिए निरंतर पुनः प्रशिक्षण आवश्यक है।

वैश्विक पाठ : दक्षिण कोरिया और जापान जैसे देशों ने पहले ही इस जनसांख्यिकीय अवसर को स्वीकार कर लिया है। दक्षिण कोरिया के "सीनियर कॉलेज" और जापान के "सिल्वर जिंजाई सेंटर" डिजिटल मार्केटिंग से लेकर देखभाल और सामाजिक उद्यमशीलता तक के क्षेत्रों में कम लागत वाली रीक्लेनिंग प्रदान करते हैं। सियोल में, सीओडामुन सिल्वर लर्निंग सेंटर हर साल 10,000 से अधिक सेवानिवृत्त लोगों को प्रशिक्षित करता है, जिससे कई लोग कार्यबल में पुनः प्रवेश कर सकते हैं या सामुदायिक उद्यम शुरू कर सकते हैं। ये मॉडल दिखाते हैं कि वरिष्ठ सीखने के बुनियादी ढांचे में निवेश करना धर्मार्थ नहीं है - यह स्मार्ट अर्थव्यवस्था है। 2023 की OECD रिपोर्ट में पाया गया कि वरिष्ठ श्रम भागीदारी वाले देशों में स्वास्थ्य देखभाल लागत कम और सामाजिक सामंजस्य अधिक है।

एक खोया हुआ अवसर : भारत में इसकी संभावना बहुत बड़ी है, लेकिन इसका उपयोग काफी हद तक नहीं किया गया। नीति आयोग के अनुसार, लगभग 4.5 करोड़ भारतीय वर्तमान में 60 वर्ष से अधिक आयु वाले हैं और अर्थपूर्ण कार्यों में भाग लेने की आर्थिक क्षमता रखते हैं। हालांकि, सेवानिवृत्ति के बाद संरचित पुनः कौशल प्राप्त करने के लिए बहुत कम रास्ते हैं।

जबकि UpGrad, Coursera और Unacademy जैसी एडटेक फर्में ने आजीवन शिक्षा पाठ्यक्रम प्रदान करना शुरू कर दिया है, उनका विपणन मुख्य रूप से युवा पेशेवरों को लक्षित करता है। इस बीच, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) मुख्य रूप से युवा रोजगार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वरिष्ठ समावेशन पर नहीं। हालांकि, कुछ प्रारंभिक प्रयोग आशाजनक हैं। टाटा स्ट्राइव पहल ने सामुदायिक कॉलेजों के साथ साझेदारी में शहरी केंद्रों में सेवानिवृत्त पेशेवरों के लिए "अधिक करियर" कार्यक्रम शुरू किए हैं। इसी तरह, केरल के कुदुम्बश्री मिशन ने महिला उद्यमियों के लिए प्रशिक्षकों के रूप में सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों को शामिल करना शुरू कर दिया है।

पुनः कौशल : आर्थिक तर्क के अलावा, आजीवन शिक्षा गहरे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक लाभ प्रदान करती है। हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ द्वारा किए गए अध्ययन अवसाद और संज्ञानात्मक गिरावट का 30% कम जोखिम के साथ जीवन में सक्रिय भागीदारी को जोड़ते हैं। नई कौशल सीखना भी पीढ़ी-पीढ़ी के बीच संबंध को बढ़ावा देता है - जहां वरिष्ठ युवा श्रमिकों की सलाह देते हैं या डिजिटल प्लेटफार्मों पर सहयोग करते हैं। इसके अलावा, जब भारत युवा बेरोजगारी से जूझ रहा है, तो पुनर्व्यवसायिक विशेषज्ञता वाले रिटायरेंट छोटे व्यवसायों, स्टार्टअप और सामाजिक उद्यमों में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन और सलाहकार भूमिकाएं निभा सकते हैं - उत्पादकता और उद्देश्य दोनों को बढ़ाते हुए।

जीवन भर सीखने की पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

भारत को वरिष्ठ प्रशिक्षण को राष्ट्रीय नीति में एकीकृत करने की आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण को वास्तविक बनाने के लिए तीन कदम उठाए जा सकते हैं: पहले, सामुदायिक शिक्षण केंद्र - सार्वजनिक पुस्तकालयों, डाकघरों और पंचायत भवनों को डिजिटल पहुंच से लैस वरिष्ठ शिक्षा केन्द्रों में परिवर्तित किया जा सकता है। दूसरा, प्रोत्साहन प्राप्त एडटेक समावेशन - सरकार वरिष्ठ-अनुकूल शिक्षण मॉड्यूल डिजाइन करने वाली निजी संस्थानों को कर छूट या सीएसआर क्रेडिट दे सकती है - जो उद्यमशीलता, डिजिटल साक्षरता या सौंदर्य और स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी को कवर करती हैं।

तीसरा, सार्वजनिक-निजी मार्गदर्शन नेटवर्क - सेवानिवृत्त पेशेवरों को राष्ट्रीय सलाहकार प्लेटफार्मों के माध्यम से युवा स्टार्टअप्स से जोड़ा जा सकता है - नवाचार के साथ अनुभव को जोड़ना।

आश्रितों से योगदानकर्ताओं तक

नई सेवानिवृत्ति की कहानी निर्भरता के बारे में नहीं है बल्कि योगदान के बारे में है। भारत के सेवानिवृत्त लोग कोई बोझ नहीं हैं - वे बुद्धि, कौशल और लचीलापन का एक अछूता भंडार हैं। सही पारिस्थितिकी तंत्र के साथ, वे अर्थव्यवस्था के अगले चरण में सक्रिय खिलाड़ी बन सकते हैं - शिक्षक, प्रशिक्षक, उद्यमी और सामाजिक नवाचारकर्ता।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

बांस: प्लास्टिक का एक शानदार स्थायी विकल्प

विजय गर्ग

बांस पारंपरिक प्लास्टिक के लिए एक शानदार और व्यवहार्य विकल्प के रूप में उभर रहा है, जो कई पर्यावरणीय और कार्यात्मक लाभ प्रदान करता है। जैसे-जैसे प्लास्टिक प्रदूषण का वैश्विक संकट तीव्र होता जा रहा है, यह तेजी से बढ़ता हुआ, अत्यधिक नवीकरणीय संसाधन विभिन्न उद्योगों में गति प्राप्त कर रहा है, दैनिक वस्तुओं से लेकर उन्नत सामग्रियों तक। बाम्बू एक गेम चेंजर क्यों है प्लास्टिक प्रतिस्थापन के रूप में बांबू की उपयुक्तता इसकी अद्वितीय प्राकृतिक गुणों और इसे संसाधित करने के अभिनव तरीकों से उत्पन्न होती है

अंतिम नवीकरणीय संसाधन

तेजी से विकास: बांबू पृथ्वी पर सबसे तेजी से बढ़ते पौधों में से एक है, जिसमें कुछ प्रजातियां प्रतिदिन कई फीट बढ़ती हैं। इससे यह अविश्वसनीय रूप से नवीकरणीय हो जाता है और इसका मतलब है कि इसे पुनः रोपण की आवश्यकता के बिना बार-बार काटा जा सकता है, क्योंकि इसकी जड़ प्रणाली बरकरार रहती है।

कम इनपुट खेती: इसमें पनपने के लिए न्यूनतम पानी, खाद या कीटनाशकों की आवश्यकता होती है। यह मिट्टी की गुणवत्ता में भी सुधार करता है और इसमें कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन की उच्च क्षमता होती है, जो एक शक्तिशाली कार्बन सिंक के रूप में कार्य करती है।

उच्च भौतिक गुण

शक्ति और स्थायित्व: प्राकृतिक बांस में असाधारण ताकत होती है, जिसमें कई पारंपरिक सामग्रियों से काफी अधिक तन्यता होती है, जिनमें कुछ मामलों में स्टील भी शामिल होता है।

उत्पाद में बहुमुखी प्रतिभा: बांस का उपयोग पारंपरिक रूप से प्लास्टिक से बने उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला बनाने के लिए किया जा रहा है, जिसमें रसोई उपकरण (कपियाँ, कटोरे, कटरी), पैकेजिंग, कपड़ा, फर्नीचर और यहां तक कि निर्माण सामग्री भी शामिल हैं। बायोडिग्रेडेबिलिटी और पारिस्थितिक अनुकूलता

पूरी तरह से बायोडिग्रेडेबल: पारंपरिक प्लास्टिक के विपरीत, जिसे विघटित होने में सैकड़ों वर्ष लगते हैं, शुद्ध बांबू एक जैविक सामग्री है जो पर्यावरण में स्वाभाविक रूप से टूट जाती है और इसमें कोई विषैले अवशेष या माइक्रोप्लास्टिक नहीं रहता।

गैर विषैले: बांबू उत्पाद स्वाभाविक रूप से प्लास्टिक में पाए जाने वाले हानिकारक रसायनों से मुक्त होते हैं, जैसे बीपीए और फाथालेट। नवीन बांबू-आधारित सामग्री प्लास्टिक को बदलने की गति बांस आधारित सामग्री के दो मुख्य प्रकारों के माध्यम से आगे बढ़ रही है 1। बांबू प्लास्टिक कम्पोजिट (बीपीसी बीपीसी एक हाइब्रिड सामग्री है जो बांस फाइबर या पाउडर को प्लास्टिक पॉलिमर (जैसे पॉलीएथिलीन या polypropylene) के साथ मिलाकर बनाई जाती है।

उद्देश्य: इन कम्पोजिट का उद्देश्य प्लास्टिक की स्थायित्व और मोल्डबिलिटी को बनाए रखना है तथा तेजी से बढ़ती प्राकृतिक फिलर का उपयोग करके समग्र प्लास्टिक सामग्री को कम करना है।

अनुप्रयोग: उनका उपयोग अक्सर बाहरी डेकिंग, फर्नीचर और अन्य वस्तुओं के लिए किया जाता है जिन्हें उच्च शक्ति और मौसम प्रतिरोध की आवश्यकता होती है।

चुनौती: कई बीपीसी में अभी भी प्लास्टिक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, जो पूर्ण बायोडिग्रेडेबिलिटी को रोकता है और रीसाइक्लिंग को जटिल बनाता है, जिससे पूरी तरह से टिकाऊ समाधान का लक्ष्य कमजोर हो जाता है।

पूरी तरह से बायोडिग्रेडेबल बांबू आणविक प्लास्टिक हालिया प्रगति, विशेष रूप से चीन में, वास्तव में टिकाऊ बायोप्लास्टिक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

प्रक्रिया: शोधकर्ताओं ने गैर-विषैले विलायक का उपयोग करके बांस सेल्युलोज को आणविक स्तर तक भंग करने और फिर अणुओं को एक कठोर, प्लास्टिक जैसी सामग्री में पुनः इकट्ठा करने के तरीके विकसित किए हैं।

प्रदर्शन: यह नई सामग्री तन्यता, आकार और थर्मल स्थिरता के मामले में पारंपरिक तेल आधारित प्लास्टिक से मेल खाती है या इससे भी बेहतर काम करती है।

सफलता: महत्वपूर्ण बात यह है कि इस उन्नत बांस प्लास्टिक ने 50 दिनों के भीतर मिट्टी में पूरी तरह से बायोडिग्रेड करने या बंद लूप प्रणाली में प्रभावी ढंग से पुनर्चक्रित होने की क्षमता प्रदर्शित की है, जिससे यह वास्तव में टिकाऊ औद्योगिक सामग्री का एक आकर्षक उम्मीदवार बन गया है। ग्लोबल एक्शन: प्लास्टिक के लिए बांबू पहल इसकी क्षमता को पहचानते हुए, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं और सरकारें बांस के उपयोग को बढ़ावा दे रही हैं। चीनी सरकार के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय बांबू और रतन केंद्र (INBAR) द्वारा शुरू की गई बांस प्लास्टिक के विकल्प (BASP) पहल का उद्देश्य है

प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए बांस का लाभ उठाएं।

बांस आधारित उत्पादों के लिए एक औद्योगिक प्रणाली स्थापित करें।

जलवायु परिवर्तन को कम करने और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में योगदान देना। निष्कर्ष बांस वैश्विक प्लास्टिक संकट के लिए सबसे आशाजनक प्राकृतिक समाधानों में से एक प्रस्तुत करता है। इसकी त्वरित नवीकरणीयता, पर्यावरणीय लाभ और अंतर्निहित शक्ति इसे एक आदर्श आधार सामग्री बनाती है। जबकि प्रारंभिक बांस-प्लास्टिक कंपोजिट में पूर्ण बायोडिग्रेडेबिलिटी के संबंध में सीमाएं थीं, नई आणविक इंजीनियरिंग रणनीतियाँ उच्च प्रदर्शन वाली, पूरी तरह से बायोडिग्रेड योग्य बांस आधारित प्लास्टिक प्रदान कर रही हैं जो उद्योगों को क्रांतिकारी बनाने और पेट्रोलियम-आधारित पॉलिमर पर हमारी निर्भरता को काफी कम करने के लिए तैयार हैं। प्लास्टिक से बांस में परिवर्तन केवल एक पर्यावरण-अनुकूल प्रवृत्ति नहीं है - यह स्थायी भविष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

मेरा प्रेरक प्रिंसिपल...

एसपी सिंग

हृदय से प्रशंसा व्यक्त करना बहुत गर्व और सम्मान की बात है विजय गर्ग एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और सेवानिवृत्त प्रिंसिपल , जिनकी सेवा की असाधारण यात्रा पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का दीपक है। अपने पूरे करियर में और यहां तक कि सेवानिवृत्ति के बाद भी, श। गार्ग ने अपने आप को छात्रों के उत्थान और शिक्षा के उद्देश्य के लिए अथक रूप से समर्पित किया है।

ज्ञान को लोकतांत्रिक बनाने के उनके दृष्टिकोण ने डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना में उल्लेखनीय अभिव्यक्ति पाई, जो सीखने का खजाना है जिसने अनगिनत आकांक्षी लोगों के लिए उन्नत शिक्षा के द्वार खोल दिए। दुर्लभ उदारता के साथ उन्होंने न केवल अकादमिक संसाधनों तक पहुंच प्रदान की, बल्कि व्यक्तिगत रूप से जेईई, नीट, एम्स और अन्य प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं को व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से साझा किया। टेलीग्राम चैनल यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय पृष्ठभूमि के बावजूद कोई भी छात्र मार्गदर्शन से वंचित नहीं हो। इस महान पहल ने ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच अंतर को पूरा किया है तथा हजारों लोगों के लिए सफलता का मार्ग उजागर करना जारी रखता है।

यह भी प्रशंसनीय है श. लिखित शब्द में गर्ग की महारत। उनकी कलम विचार, नीति और जागरूकता को आकार देने में एक शक्तिशाली उपकरण रही है। उनके अकादमिक निबंध और अंतर्दृष्टिपूर्ण लेख प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं, जिससे उन्हें उत्कृष्ट विद्वान-लेखक के रूप में व्यापक मान्यता मिली है। उनके शब्दों का समर्थन गहरी ज्ञान और अभिव्यक्ति की स्पष्टता से होता है, वे बौद्धिक वजन और नैतिक विश्वास दोनों रखते हैं।

उनकी विरासत में उनके प्रकाशित पुस्तकें भी शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक शैक्षिक साहित्य के भंडार में योगदान देती है। ये कार्य न केवल उनकी अकादमिक बुद्धि को मजबूत करते हैं, बल्कि समाज और सीखने के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता की स्थायी स्मारक भी बनते हैं।

विजय गर्ग हमें एक दूरदर्शी शिक्षक, सहानुभूतिपूर्ण मार्गदर्शिका, डिजिटल अग्रणी और उत्पादक लेखक का दुर्लभ संयोजन मिलता है। उनका जीवन इस विचार की गवाही है कि शिक्षा केवल एक पेशे नहीं बल्कि मानवता के लिए एक पवित्र कर्तव्य और निरंतर सेवा है।

मैं व्यक्तिगत रूप से उनके अथक समर्पण को सलाम करता हूं, उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाता हूं और शिक्षा तथा समग्र समाज में उनके अंतहीन योगदान के लिए गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

एसपी सिंग श्री अमृतसर साहब।

नियंत्रण या निगरानी : असम के नए कानूनों का व्यापक संदेश

कानून ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और समान नागरिक अधिकारों पर नई बहस छेड़ दी है। समर्थक इसे सामाजिक सुधार मानते हैं, जबकि आलोचक इसे राज्य द्वारा निजी जीवन में हस्तक्षेप बताते हैं। भारत में जनसंख्या नियंत्रण के वास्तविक उपाय शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण से आते हैं, न कि कठोर कानूनों से। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है जब नागरिकों को नियंत्रित नहीं, बल्कि सक्षम बनाया जाए।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत जैसे विविध और बहुधार्मिक देश में जब कोई राज्य व्यक्तिगत जीवन से जुड़े विषयों पर नीति बनाता है, तो उसका असर सीमित नहीं रहता। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा द्वारा प्रस्तावित विवाह और जनसंख्या नियंत्रण कानून इसी तरह की राष्ट्रीय बहस को जन्म दे रहे हैं। राज्य सरकार का कहना है कि यह कदम "सामाजिक संतुलन" और "अवैध जनसंख्या वृद्धि" पर रोक लगाने की दिशा में है, जबकि आलोचकों का मानना है कि यह नागरिक स्वतंत्रता और धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप है। यही विरोधाभास आज की राजनीति और समाज की सबसे बड़ी परीक्षा बन गया है।

असम लंबे समय से प्रवासन, जनसंख्या असमानता और सांप्रदायिक तनाव के मुद्दों से जूझता रहा है। सीमावर्ती राज्य होने के कारण यहाँ बांग्लादेश से आने वाले अवैध प्रवासियों की समस्या पर राजनीति हमेशा सक्रिय रही है। इस पृष्ठभूमि में जनसंख्या नियंत्रण कानून की चर्चा सिर्फ सामाजिक नहीं, बल्कि राजनीतिक रणनीति का भी हिस्सा प्रतीत होती है। मुख्यमंत्री सरमा का कहना है कि राज्य में कुछ समुदायों में जनसंख्या वृद्धि दर बहुत अधिक है, जिससे सामाजिक और आर्थिक असंतुलन पैदा होता है। उनके अनुसार, यदि राज्य में शैक्षिक और आर्थिक समानता लानी है, तो ऐसे कठोर कदम आवश्यक हैं।

लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून ही सबसे उपयुक्त उपाय है? भारत में पहले भी ऐसे प्रयास किए गए हैं — इमरजेंसी के दौरान जबरन नसबंदी अभियान इसका उदाहरण है। उस अनुभव ने दिखाया कि जनसंख्या नियंत्रण केवल कानून या दंड से नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक जागरूकता से हासिल किया जा सकता है। असम का प्रस्तावित कानून अगर विवाह आयु, बहुपतित्व या धर्मांतरण जैसे निजी विषयों को नियंत्रित करने की दिशा में जाता है, तो यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समान नागरिक अधिकारों पर प्रश्नचिह्न खड़ा करेगा।

संविधान नागरिकों को अपने धर्म और जीवनशैली की स्वतंत्रता देता है। विवाह और परिवार व्यक्ति की निजता का हिस्सा हैं। अनुच्छेद २१ के अंतर्गत 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार' इन विषयों को भी सम्मिलित करता है। यदि कोई सरकार यह तय करने लगे कि कौन किससे और कैसे विवाह करे या कितने बच्चे हों, तो यह राज्य और व्यक्ति के बीच की सीमाओं को धुंधला कर देता है। यही कारण है कि कई सामाजिक कार्यकर्ता इसे एक "निगरानीवादी नीति" कह रहे हैं, न कि "सुधारवादी कदम"।

भारत में समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code) पर पहले से बहस जारी है। असम का यह कानून उस बहस को और तीव्र कर सकता है। सरकार का तर्क यह हो सकता है कि सभी नागरिकों के लिए समान नियम होना चाहिए, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो। परंतु इस समानता की अवधारणा तभी सार्थक है जब यह स्वैच्छिक और परामर्श आधारित हो, न कि भय और नियंत्रण पर आधारित। यदि किसी एक समुदाय को लक्ष्य बनाकर नीति बनाई जाती है, तो वह सुधार के बजाय विभाजन का कारण बनती है।

सामाजिक दृष्टि से देखें तो जनसंख्या वृद्धि केवल धार्मिक या सांस्कृतिक कारणों से नहीं होती। यह शिक्षा की कमी, गरीबी, स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता और लैंगिक असमानता से अधिक प्रभावित होती है। जब तक महिलाओं को पर्याप्त शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने की शक्ति नहीं दी जाएगी, तब तक परिवार नियोजन के कानून केवल कागज़ों पर रह जाएंगे। भारत के दक्षिणी राज्यों ने जनसंख्या स्थिरीकरण का जो उदाहरण पेश किया है, वह शिक्षा और स्वास्थ्य निवेश का परिणाम है, न कि किसी कठोर कानून का।

असम जैसे राज्य में जहाँ साक्षरता दर अभी भी राष्ट्रीय औसत से कम है और ग्रामीण स्वास्थ्य ढांचा कमजोर है, वहाँ नए कानूनों के बजाय सामाजिक सशक्तिकरण की आवश्यकता अधिक है। यदि सरकार उन क्षेत्रों में निवेश करे जहाँ महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ पिछड़ी हुई हैं, तो जनसंख्या वृद्धि स्वत: नियंत्रित हो सकती है। इसके विपरीत, यदि सरकार नियंत्रण के नाम पर कठोरता दिखाती है, तो यह अविश्वास और भय का वातावरण बना सकती है।

राजनीतिक स्तर पर यह मुद्दा विपक्ष और सत्तापक्ष दोनों के लिए अवसर लेकर आया है। सत्तापक्ष इसे "सुधार की दिशा में साहसिक कदम" बता रहा है, जबकि विपक्ष इसे "राजनीतिक ध्रुवीकरण" का प्रयास मान रहा है। असम में चुनावी समीकरण हमेशा से जातीय और धार्मिक पहचान पर आधारित रहे हैं। इसलिए यह नीति किसी एक वर्ग को साधने और दूसरे को असुरक्षित महसूस कराने का साधन बन सकती है। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्तर पर भी यह मुद्दा तेजी से फैल रहा है।

मीडिया और सार्वजनिक मंचों पर इस विषय को "लव जिहाद", "बहुपतित्व" और "जनसंख्या विस्फोट" जैसे विवादास्पद शब्दों से जोड़ा जा रहा है। परंतु यह समझना आवश्यक है कि जनसंख्या नियंत्रण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक नीति का विषय है। यदि इसे धर्म के चश्मे से देखा जाएगा, तो समस्या सुलझने के बजाय और गहरी हो जाएगी।

असम सरकार का यह दावा है कि इस कानून का उद्देश्य किसी विशेष समुदाय को निशाना बनाना नहीं है, बल्कि समाज में संतुलन स्थापित करना है। परंतु व्यवहारिक रूप से ऐसे कानूनों के लागू होने के तरीके में पक्षपात की संभावना बनी रहती है। उदाहरण के लिए, यदि प्रशासनिक स्तर पर यह तय किया जाए कि किसे "बहुपतित्व" या "अवैध विवाह" के तहत दंडित किया जाए, तो यह निर्णय अधिकारी की व्यक्तिगत धारणा पर भी निर्भर करेगा। यही वह बिंदु है जहाँ लोकतांत्रिक शासन को पारदर्शिता और जवाबदेही की सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है — कानूनों का क्रियान्वयन। भारत में पहले से ही कई जनकल्याणकारी कानून बने हैं, पर उनका प्रभाव सीमित रहा है क्योंकि उन्हें लागू करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति कमजोर रही है। यदि असम सरकार नया कानून बनाती है लेकिन उसका कार्यान्वयन पक्षपाती या ढीला रहता है, तो यह सिर्फ दिखावे का कदम रह जाएगा। इसलिए, किसी भी नीति का मूल्यांकन उसके उद्देश्य से अधिक, उसके कार्यान्वयन से किया जाना चाहिए।

इस पूरे विवाद का एक मनोवैज्ञानिक पहलू भी है। जब किसी राज्य में नागरिकों को यह महसूस होता है कि सरकार उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप कर रही है, तो नागरिक और राज्य के बीच विश्वास की दीवार कमजोर होती है। लोकतंत्र का आधार वही विश्वास है। भारत की राजनीति पहले से ही विश्वास संकट से गुजर रही है — संस्थाओं पर भरोसा घट रहा है, संवाद की जगह आरोप-प्रत्यारोप ने ले ली है। ऐसे में यदि नीतियाँ लोगों को और बाँटने लगें, तो लोकतांत्रिक समाज में अस्थिरता बढ़ना स्वाभाविक है।

इस विषय का वैश्विक संदर्भ भी दिलचस्प है। चीन ने दशकों तक "एक बच्चे की नीति" अपनाई थी, जिसके दुष्परिणाम अब सामने हैं — वृद्ध आबादी बढ़ी, कार्यबल घटा, और लैंगिक असंतुलन पैदा हुआ। बाद में चीन को अपनी नीति पलटनी पड़ी। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि जनसंख्या नियंत्रण यदि कठोर रूप से लागू किया जाए, तो वह सामाजिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। भारत जैसे लोकतंत्र में तो ऐसा कदम और भी संवेदनशील है क्योंकि यहाँ विविधता उसकी सबसे बड़ी ताकत है।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि सरकारें नियंत्रण नहीं, बल्कि सशक्तिकरण की दिशा में सोचें। जनसंख्या नियंत्रण का सबसे प्रभावी तरीका शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और समान अवसर हैं। जब नागरिकों के पास विकल्प और जागरूकता होती है, तो वे स्वाभाविक रूप से छोटे और स्वस्थ परिवार की ओर बढ़ते हैं। यह परिवर्तन कानून से नहीं, चेतना से आता है।

असम के इस प्रस्ताव को यदि वास्तव में सुधारवादी बनाना है, तो उसे राजनीतिक नारों से हटाकर व्यावहारिक योजनाओं से जोड़ना होगा। जनसंख्या नीति का लक्ष्य केवल संख्या घटाना नहीं होना चाहिए, बल्कि जीवन की गुणवत्ता बढ़ाना होना चाहिए। राज्य को यह समझना होगा कि अनुशासन कानून से नहीं, बल्कि विश्वास से आता है।

अंतत: यह बहस केवल असम तक सीमित नहीं रहेगी। यह उस रास्ते का संकेत है जिस पर भारत आगे बढ़ सकता है — या तो नियंत्रण के राज्य की ओर, जहाँ सरकारें नागरिकों के जीवन के हर पहलू को निर्धारित करेंगी; या फिर जागरूकता आधारित समाज की ओर, जहाँ नागरिक स्वयं अपने निर्णयों के लिए जिम्मेदार होंगे। लोकतंत्र का अर्थ तभी पूरा होता है जब राज्य मार्गदर्शक बने, मालिक नहीं।

असम की पहल शायद ईमानदार चिंता से उत्पन्न हो, पर इसका रूप और परिणाम सावधानी से तय किया जाना चाहिए। एक संवेदनशील लोकतंत्र में हर नीति का मूल्यांकन उसके प्रभाव से होना चाहिए, न कि उसके नारे से। जनसंख्या नियंत्रण की असली कसौटी यही है कि क्या वह समाज को अधिक स्वतंत्र, शिक्षित और सक्षम बनाता है — या उसे संदेह और नियंत्रण के जाल में फँसा देता है। भारत को वह रास्ता चुनना होगा जो विकास के साथ सम्मान भी दे।

पर्यावरण पाठशाला — स्थानीय हरियाली की पुकार

डॉ. अंकुर शरण

फरीदाबाद, जो कभी हरियाली और औद्योगिक विकास के संतुलन का प्रतीक माना जाता था, आज एक बार फिर हरियाली के संघर्ष से गुजर रहा है। प्रशासन के प्रयासों और नागरिकों की भागीदारी से शहर में कई जगह हरित पट्टियों (Green Belts) का निर्माण हुआ। बंगल शूटिंग चौक के पास वर्ष 2024 में लाखों रुपये की लागत से वृक्षारोपण और ट्री गार्ड लगाए गए थे। उद्देश्य स्पष्ट था — शहर को प्रदूषण मुक्त बनाना और लोगों को स्वच्छ हवा उपलब्ध कराना।

परंतु दुखद सच्चाई यह है कि कुछ ही महीनों में इन ट्री गार्ड्स को तोड़कर उनकी सरिया चोरी कर ली गई। दशहरा से लेकर दीपावली तक उत्सवों की आड़ में स्थानीय स्तर पर हरित पट्टी को भारी नुकसान पहुंचाया गया। जहां एक वर्ष पहले तक नन्हे पौधे उम्मीद का प्रतीक थे, वहीं अब लोहे के टुकड़े और सूखी मिट्टी दिखाई देती है। यह केवल हरियाली की हानि नहीं है, यह हमारे संस्कारों की परीक्षा भी है।

उच्च अधिकारियों और डीसी कार्यालय, फरीदाबाद में इस विषय पर शिकायत दर्ज कराई गई है, पर अब समय है कि स्थानीय नागरिक, आरडब्ल्यूए (RWA) और समाज के जागरूक लोग आगे आएं। सरकार अपना काम करती रहेगी, पर समाज की जागरूकता ही किसी भी आंदोलन की आत्मा होती है। एक पेड़ के कटने पर, एक ट्री गार्ड के टूटने पर यदि आस-पास के लोग चुप रहते हैं, तो वह मौन सहमति बन जाती है।

हमारे बच्चे आज जिस हवा में सांस ले रहे हैं, उसका भविष्य इन्हीं पेड़ों पर निर्भर है। पर्यावरण पाठशाला के माध्यम से यह समझना बेहद आवश्यक है कि प्रकृति की रक्षा केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का धर्म है। जैसे घर की दीवारों की सुरक्षा के लिए हम चौकसी रखते हैं, वैसे ही शहर की हरियाली की रक्षा के लिए भी हमें सजग रहना चाहिए।

'Be Vocal for Local Trees' — यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक संस्कृति होनी चाहिए। अगर हमारे मोहल्ले का एक पेड़ टूटे, एक पौधा सूखे, तो हर नागरिक को ऐसा महसूस हो जैसे उसके अपने आंगन की दीवार गिर गई हो।

आज आवश्यकता है कि सभी आरडब्ल्यूए, विद्यालय, स्वयंसेवी संगठन, और नागरिक समाज मिलकर स्थानीय हरित पट्टियों को गोद लें। हर ग्रीन बेल्ट का एक संरक्षक तय हो — जो उसकी देखभाल, निगरानी और रखरखाव की जिम्मेदारी निभाए। साथ ही, शहर के युवा वर्ग को भी इस दिशा में सक्रिय किया जाए, ताकि वे हरियाली के रक्षक बन सकें।

डॉ. अंकुर शरण के नेतृत्व में पर्यावरण पाठशाला इस बात को निरंतर दोहरा रही है कि "प्रकृति केवल देखने की वस्तु नहीं, जीने की परंपरा है।"

आज अगर हमने अपने पेड़ों की रक्षा नहीं की, तो कल छाया, हवा और जीवन तीनों से समझौता करना पड़ेगा।

आइए, इस दीपावली एक संकल्प लें —

"हम अपने शहर के हर पेड़ के प्रहरी बनेंगे।"

क्योंकि जब समाज साथ खड़ा होता है, तब ही हरियाली लौटती है और पर्यावरण मुस्कुराता है।

पति-पत्नी चिन्तन

कस्तूरी दिनेश

हिन्दुस्तान में पति बेचारा एक किस्म का नर मधुमक्खी होता है. ।अक्सर वह पत्नी रूपी रानी मधुमक्खी के आगे-पीछे चक्कर काटते हुए पचास-साठ साल की अल्प-अवस्था में ही मोक्ष-अवस्था को प्राप्त कर लेता है। वह दिन भर धूप, आंधी पानी बरसात में मारा-मारा घूम-घूमकर जंगल-झाड़ी के काँटों की परवाह किये बिना फूलों से रस इकट्ठा करता है और शाम को थका-हारा, निढाल लौटकर उसे रानी मधुमक्खी के हवाले कर देता है। मूरख सोचता है कि रानी मक्खी उसे प्यार-दुलार करेगी, उसे शाबासी देगी परन्तु रानी के चेहरे पर बाल बिखराए, श्रृंगार विहीना कोप-भवन की कैकेयी क्रीडा करती दिखाई पड़ती है !

पत्नी किसी रेलगाड़ी का सुंदर-रंगीन डीजल इंजिन है तो पति उसका खटारा मालवाहक डब्बा ! पति विरोधी दल का वह तेज तर्रार संसद सदस्य होता है जिसके मुंह पर घर में तो बड़ा सा मजबूत अलीगढ़ी ताला ठुका रहता है लेकिन संसद में जिसकी गर्जना से सत्ता-पक्ष की कुर्सियों की चूलें हिली रहती हैं ! वह बेचारा घर में चूल्हा सुलगाने में काम आता माचिस की अदनी तीली है लेकिन संसद में सत्तापक्ष के हर अच्छे-बुरे निर्णय पर विरोध की आग भड़काने को तैयार पेट्रोल का परम मित्र, पूरा का पूरा माचिस !

वह निशुल्क बंधुवा मजदूर है जिसे सात फेरे के साथ कोई तन्वंगी, मांग में एक चुटकी सिन्दूर के नाम पर आजीवन अपनी और अपने च्याऊ-माऊ की सेवा के लिए उपहार स्वरूप प्राप्त करती है ! वह अगर सेवा में जरा भी कमी करता है तो ट्रम्प रूपी पत्नी उस पर टैरिफ पर टैरिफ लगाती चली जाती है ! उसकी जेब की रोज तलाशी के साथ माल जब्ती एक अनिवार्य संवैधानिक विवाह-प्रक्रिया होती है ! कुटुंब-जांच ब्यूरो को जेबों की तलाशी के साथ उसके मोबाइल का भी गूढ़ और सूक्ष्म-निरीक्षण करने का अधिकार होता है ताकि पता लगाया जा सके कि कहीं बाहर में वह किसी कमलनयनी-पिकबयनी के हनी-ट्रैप का शिकार तो नहीं ? वह बेचारा कितना भी ईमानदार क्यों न हो, उसे भारतीय इलेक्शन कमीशन की तरह कोई भी अल्लू-खल्लू, "भ्रष्ट-शिरोमणि" की सम्मानित उपाधि से महिमा-मंडित कर सकता है ! पत्नी विपक्षी पार्टियों के समान विवाह-संविधान की परम रक्षक होती हैं और पति बेचारा सत्ता-पक्ष की तरह संविधान हन्ता !

पति-पत्नी का रिश्ता हूबहू गठबन्धन सरकार के समान होता है ! परिवार के सारे सदस्य "पत्नी-जनक्रांति-पार्टी" के रुतबे और दबदबे से भयाक्रांत हो, उसके साथ गठबन्धन के लिए एक पाँव में खड़े रहते हैं. फलतःचुनाव में सारी सीटें और सारे उम्मीदवार उसी के होते हैं ! नतीजा यह होता है कि सरकार सदा "पत्नी-जनक्रांति-पार्टी" की ही बनती है ! सरकार बनने के बाद संविधान के अनुसार "पत्नी-जनक्रांति पार्टी" की मुखिया होने के कारण परम आदरणीया पत्नी जी ही घर के सत्ता-सिंहासन पर शान-मान और ऐंठ के साथ ,इठलाती हुई विराजमान होती हैं। प्रधान-मंत्री भी वही, गृहमंत्री भी वही, वित्त और सुरक्षा मंत्रालय का प्रभार भी उन्हीं का ! कौटुम्बिक बहुमत के कारण उनका ही निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होता है ! बेचारा पति ,अपनी पार्टी "पति-जनता-दल" की तरफ से जब भी गाहे-बगाहे अपने पक्ष की आवाज उठाने के लिए परिवार-सभा में खड़ा होता है तो उसे बुरी तरह हूट कर बैठा दिया जाता है ! अंत में पति बेचारे को श्रद्धांजलि देते हुए यही कहा जा सकता है— "हे पति, तेरी दुखद कहानी, भर उमंग तू बना था दूल्हा, याद आ रही अब क्यों नानी !" ॐ शान्ति...शान्ति... शान्ति !

संस्कारशाला — "संविधान की समझ और पढ़ने की कला — विश्वगुरु भारत की ओर एक कदम"

डॉ. अंकुर शरण

हमारा भारत सिर्फ एक भूगोल नहीं, बल्कि एक जीवंत सभ्यता है, जिसकी आत्मा उसके संविधान, संस्कृति और संस्कारों में बसती है। हम गर्व से कहते हैं कि भारत विश्वगुरु रहा है — एक ऐसा राष्ट्र जिसने पूरी दुनिया को ज्ञान, करुणा, और मानवता का संदेश दिया। लेकिन आज के युग में यह सवाल उठाना ज़रूरी है कि क्या हम अपने उस गौरवशाली मार्ग पर चल रहे हैं? क्या आज की पीढ़ी उस ज्ञान की शक्ति को समझ पा रही है जिसने हमारे देश को युगों तक अग्रणी बनाए रखा? इसका उत्तर तभी 'हाँ' होगा जब हमारी युवा पीढ़ी अपने संविधान को समझे, पढ़ने की आदत डाले, और अपने देश के मूल विचारों से जुड़े।

IN संविधान — राष्ट्र की आत्मा

भारतीय संविधान केवल कानूनों का संकलन नहीं है, यह हमारी राष्ट्र आत्मा का सजीव दस्तावेज है। यह हमें बताता है कि भारत का मूल स्वरूप क्या है और हमें किस दिशा में बढ़ना है। इसमें हर शब्द, हर अनुच्छेद हमारे पूर्वजों की दृष्टि, त्याग और अनुभव का प्रतीक है। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जब संविधान का निर्माण किया, तब उन्होंने सिर्फ एक प्रशासनिक ढांचा नहीं बनाया, बल्कि एक ऐसी जीवन पद्धति दी जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के सिद्धांतों पर आधारित है।

आज की युवा पीढ़ी के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वह संविधान को सिर्फ एक 'विषय' के रूप में न देखे, बल्कि उसे जीवन का दर्शन समझे। जब कोई युवा अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझता है, तो वह न केवल एक सजग नागरिक बनता है, बल्कि अपने राष्ट्र के विकास का सक्रिय भागीदार भी बनता है।

पढ़ने की कला — आत्मज्ञान की पहली सीढ़ी

पढ़ना सिर्फ अक्षरों को जोड़ना नहीं है, यह मनुष्य को विचारशील, संवेदनशील और विवेकशील बनाता है।

किताबें हमें सोचने की दिशा देती हैं, दृष्टि को व्यापक बनाती हैं, और हमें अपनी जड़ों से जोड़ती हैं।

आज जब दुनिया डिजिटल जानकारी से भरी हुई है, तब ज्ञान और सूचना के बीच फर्क समझना जरूरी है।

सूचना हमें तात्कालिक रूप से प्रभावित करती है, पर ज्ञान हमें स्थायी रूप से बदल देता है — और यह ज्ञान केवल पढ़ने, समझने और आत्मसात करने से ही आता है।

भारत ने सदियों तक 'ग्रंथों की भूमि' के रूप में विश्व को दिशा दी।

हमारे वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, चाणक्य नीति, नालंदा और तक्षशिला जैसे ज्ञानपीठ, इस बात के प्रमाण हैं कि भारत में शिक्षा केवल जीविका का साधन नहीं थी, बल्कि आत्मा के उत्थान का मार्ग थी।

लेकिन आधुनिक जीवन की तेज़ रफ्तार ने पढ़ने की इस परंपरा को पीछे छोड़ दिया है।

आज ज़रूरत है कि हम फिर से पढ़ने की कला को अपनाएं।

पढ़ना मतलब केवल परीक्षा की तैयारी नहीं, बल्कि स्वयं को और समाज को समझने की कोशिश।

हर युवा को हर दिन कुछ समय किताबों, विचारों और संविधान के सिद्धांतों को पढ़ने में लगाना चाहिए।

यही आदत उसे आत्मनिर्भर, संवेदनशील और विचारशील नागरिक बनाएगी।

पढ़ने से जुड़ती हैं हमारी जड़ें

भारत का भविष्य तभी उज्ज्वल हो सकता है

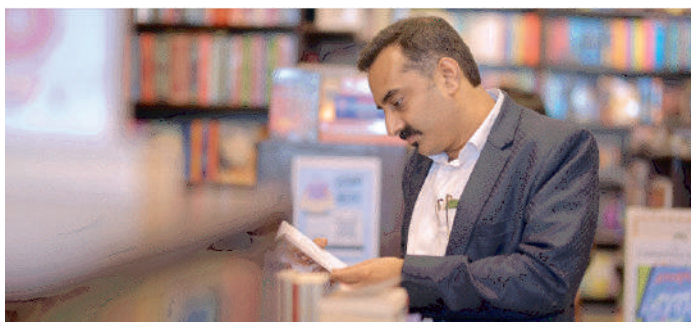

जब उसकी जड़ें मजबूत हों।

हमारी जड़ें हमारे संस्कारों, परंपराओं और ज्ञान में हैं।

जब कोई युवा रामायण पढ़ता है, तो वह केवल श्रीराम की कथा नहीं, बल्कि धैर्य, मर्यादा और कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ता है।

जब वह भगवद् गीता पढ़ता है, तो वह समझता है कि जीवन कर्म का मार्ग है, और जब वह संविधान पढ़ता है, तो उसे यह एहसास होता है कि हर नागरिक समान है और हर व्यक्ति की आवाज मायने रखती है।

इस तरह, पढ़ना केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन का सृजन है।

जो पढ़ता है, वह सोचता है; जो सोचता है, वह सवाल करता है; और जो सवाल करता है, वही परिवर्तन लाता है।

भारत को विश्वगुरु बनाना है तो हर युवा को 'पढ़ने वाला नागरिक' बनना होगा — ऐसा नागरिक जो परंपरा को समझे और आधुनिकता को आत्मसात करे।

संविधान और युवा — परिवर्तन की दिशा

संविधान को समझने वाला युवा समाज का सबसे बड़ा परिवर्तनकारी होता है।

वह जानता है कि अधिकार पाने से पहले कर्तव्य निभाना जरूरी है।

वह जानता है कि लोकतंत्र का असली अर्थ वोट डालना नहीं, बल्कि जागरूक रहना है।

वह यह भी समझता है कि किसी भी राष्ट्र की ताकत उसकी सेना या अर्थव्यवस्था में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों की नैतिकता और ज्ञान में होती है।

आज भारत विश्व मंच पर एक नई पहचान बना रहा है — विज्ञान, तकनीक, नवाचार और वैश्विक सहयोग के क्षेत्र में।

लेकिन यदि हमें वास्तविक विश्वगुरु बनना है, तो हमें न केवल तकनीकी रूप से, बल्कि विचारों और मूल्यों के स्तर पर भी श्रेष्ठ बनना होगा।

यह श्रेष्ठता तभी संभव है जब हमारे युवा अपने संविधान के आदर्शों — समानता, न्याय और करुणा — को अपने आचरण का हिस्सा बनाएं।

विश्वगुरु भारत की दिशा में

'विश्वगुरु' शब्द केवल एक नारा नहीं है, यह हमारी आध्यात्मिक और बौद्धिक परंपरा का प्रतीक है।

भारत ने हमेशा दूसरों पर शासन नहीं किया, बल्कि दुनिया को मार्ग दिखाया —

बुद्ध के करुणा के संदेश से लेकर गांधी के सत्य और अहिंसा के दर्शन तक,

वेदों के विज्ञान से लेकर संविधान के लोकतांत्रिक मूल्य तक —

हमने हमेशा 'ज्ञान' और 'संस्कार' से नेतृत्व किया है।

आज फिर वही समय है जब दुनिया एक स्थिर और नैतिक नेतृत्व की खोज में है।

भारत के पास यह नेतृत्व देने की क्षमता है, बशर्ते हम अपनी नींव को पहचानें —

और वह नींव है संविधान की समझ और ज्ञान की साधना।

संस्कारशाला का संदेश

संस्कारशाला का उद्देश्य केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन का शिक्षण है।

यह युवाओं को याद दिलाता है कि असली शिक्षा वही है जो हमें अपने कर्तव्यों, अपनी परंपराओं और अपने राष्ट्र से जोड़ती है।

संविधान की समझ और पढ़ने की कला — ये दोनों मिलकर न केवल अच्छे नागरिक बनाते हैं, बल्कि अच्छे इंसान भी।

हर युवा को यह संकल्प लेना चाहिए —

"मैं अपने संविधान को जानूंगा, किताबों को अपना मित्र बनाऊंगा,

अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी निभाऊंगा,

और अपने भारत को विश्वगुरु बनाने में अपना योगदान दूंगा।"

जब हर युवा यह सोच अपनाएगा, तब सच में भारत फिर से जगत का गुरु बनेगा —

एक ऐसा गुरु जो सिखाएगा कि कैसे संस्कार, संविधान और अध्ययन से दुनिया को दिशा दी जा सकती है।

जय हिन्द!

— डॉ. अंकुर शरण

संस्कारशाला श्रृंखला

माकपा नुआपाड़ा उपचुनाब में कांग्रेस का समर्थन करेगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: नुआपाड़ा उपचुनाव के लिए तीन पार्टियों ने हाथ मिला लिया है। सीपीआई (एम) चुनाव में कांग्रेस का समर्थन करेगी। सीपीआई (एम) ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी घोषणा की। सीपीआई (एम) पार्टी ने कहा है कि आगामी नुआपाड़ा उपचुनाव केवल उम्मीदवारों के बीच मुकाबला नहीं है, बल्कि यह हमारे संविधान, धर्मनिरपेक्षता और ओडिशा में सभी समुदायों के लोकतांत्रिक अधिकारों के भविष्य पर एक जनमत सर्वेक्षण है। इसलिए, माकपा ओडिशा राज्य समिति नुआपाड़ा की जनता, लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ताकतों, मज़दूरों, किसानों, युवाओं, महिलाओं, दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और सभी जागरूक नागरिकों से अपील करती है कि वे एकजुट होकर कांग्रेस उम्मीदवार को वोट दें ताकि भाजपा की सांप्रदायिक-हिंदूवादी राजनीति को परास्त और ध्वस्त किया जा सके। भाजपा और उसके सहयोगी संगठन हिंदुत्व की राजनीति के लिए सामाजिक ताने-बाने और समाज को विभाजित करने का प्रयास कर रहे हैं। माकपा का मानना है कि इसे हराना और सांप्रदायिक ताने-बाने और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा करना आवश्यक है।

कफ सीरप मामले के बाद बढ़ी सतर्कता...

भोपाल। विषाक्त कफ सीरप से मध्य प्रदेश के तीन जिलों- छिंदवाड़ा, पांडुर्ना और बैतूल में 24 बच्चों की जान जाने के बाद औषधि प्रशासन विभाग दवाओं की गुणवत्ता की जांच के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग शुरू करने जा रहा है। औषधि निरीक्षकों को हैंडहेल्ड डिवाइस दी जाएंगी, जिसे दवा के ऊपर रखते ही पता चल जाएगा कि उसमें पाउडर यानी दवा का मुख्य तत्व कम तो नहीं है। जिन दवाओं में यह कम रहेगा, उनके सैंपल जांच के लिए भेजे जाएंगे, ताकि वैधानिक कार्यवाही की जा सके। सभी प्रमुख दवाओं की जांच इस डिवाइस से की जाएगी। सरकारी और निजी दोनों क्षेत्र में इसका उपयोग किया जाएगा। अभी सिर्फ महाराष्ट्र में ऐसी डिवाइस का उपयोग किया जाता है। खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि 211 करोड़ रुपये से औषधि प्रयोगशालाओं का सुदृढ़ीकरण किया जाना है। इसके लिए केंद्र से भी आर्थिक सहायता मांगी जा रही है। दवाओं की जांच के लिए आठ हैंड हेल्ड डिवाइस खरीदी जाएंगी। एक की कीमत लगभग 50 लाख रुपये है। इस तरह चार करोड़ रुपये खर्च होंगे। लगभग 800 औषधियों का डाटा पहले से डिवाइस में दर्ज है कि किस दवा में मुख्य तत्व कितना प्रतिशत होना चाहिए। डिवाइस में सेंसर लगा रहता है, इस कारण दवा के ऊपर रखते ही पाउडर की मात्रा का स्तर पता चल जाता है। अभी एक वर्ष में लगभग पांच हजार सैंपलों की जांच हो पाती है। अब इसे 20 हजार तक ले जाने का लक्ष्य है। इसके लिए उपकरण व मानव संसाधन बढ़ाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि एक वर्ष पहले तक एक मात्र लैब भोपाल में थी।

स्वराज और समानता के प्रणेता: गणेश शंकर विद्यार्थी

गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता के इतिहास में अमर है। 26 अक्टूबर 1890 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) में जन्मे इस युगपुरुष ने अपने जीवन को सत्य, न्याय और मानवता के लिए समर्पित कर दिया। उनकी लेखनी, विचार और कर्म न केवल अपने समय में क्रांतिकारी थे, बल्कि आज भी समाज को जागृत करने और नैतिक पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं। पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक के रूप में उन्होंने एक ऐसी मिसाल कायम की, जो हमें सिखाती है कि सच्चाई और न्याय के लिए निरंतर संघर्ष ही जीवन का सच्चा मोल है। उनकी जयंती हमें उनके योगदान को याद करने और उनके आदर्शों को जीवन में उतारने का संदेश देती है।

गणेश शंकर विद्यार्थी की पत्रकारिता उस दौर में एक सशक्त हथियार थी, जब ब्रिटिश शासन प्रेस की स्वतंत्रता को कुचलने पर आमादा था। 'प्रताप' जैसी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने स्वराज की ज्योति जन-जन तक पहुँचाई। उनकी लेखनी में तथ्यों की निर्मम स्पष्टता थी, जो साहस और दृढ़ता का प्रतीक बनी। उनके संपादकीय लेखों ने ब्रिटिश शासन की कुटिल नीतियों को बेनकाब किया और जनता को उनके अधिकारों के प्रति सजग किया। विद्यार्थी मानते थे कि पत्रकारिता का लक्ष्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि समाज में परिवर्तन लाना और अन्याय के खिलाफ डटकर मुकाबला करना है। उनकी यह दृष्टि उस दौर की पत्रकारिता को नई दिशा दे रही थी, जब अधिकांश समाचार पत्र या तो औपनिवेशिक दबाव में दबे थे या सीमित दायरे में सिमटे थे। उनकी लेखनी ने असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे स्वतंत्रता संग्राम के प्रयासों को जन-आंदोलन का रूप दिया। उनके लेखों में वह ज्वाला थी, जो लोगों के हृदय में स्वतंत्रता की लालसा को और प्रचंड कर देती थी।

गणेश शंकर विद्यार्थी का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान केवल लेखनी तक सीमित नहीं था; वे एक कर्मठ स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने अपने कार्यों से इतिहास रचा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी ने जनता में आत्मविश्वास और संगठन की भावना को प्रज्वलित किया। उनके नेतृत्व में चले आंदोलनों ने जन-जन में स्वतंत्रता की ललक को और सशक्त किया। ब्रिटिश शासन की यातनाओं और बार-बार की जेल यात्राओं ने भी उनके अटल संकल्प को डिगा न सका। जेल की सलाखों के पीछे भी उनकी लेखनी ने स्वतंत्रता की अलख जगाए रखी। पत्रों और लेखों के माध्यम से उन्होंने आंदोलन को गति दी, यह सिद्ध करते हुए कि वे न केवल कलम के सिपाही थे, बल्कि कर्म के भी योद्धा थे, जो हर मोर्चे पर स्वतंत्रता के लिए जूझ रहे थे।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में गणेश शंकर विद्यार्थी का योगदान भी अद्वितीय था। उन्होंने समाज में गहरे पैठी कुरीतियों—जातिवाद, अशिक्षा और महिलाओं के प्रति भेदभाव—के खिलाफ अपनी लेखनी और वाणी को हथियार बनाया। उनका दृढ़ विश्वास था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी साकार होगी, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित, जागरूक और समानता के अधिकार से युक्त हो। शिक्षा को उन्होंने समाज की प्रगति का मूलमंत्र माना और इसके प्रसार के लिए अथक प्रयास किए। विशेष रूप से, महिलाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों की पैरवी कर उन्होंने उस रूढ़िग्रस्त समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की नींव रखी। अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से उन्होंने बार-बार यह संदेश दिया कि सामाजिक सुधार के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी है। यह दूरदर्शी दृष्टिकोण उन्हें न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी, बल्कि एक प्रबुद्ध समाज सुधारक के रूप में भी अमर बनाता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी की पत्रकारिता शैली आज भी पत्रकारिता जगत में एक स्वर्णिम मापदंड है। उनकी लेखनी में तथ्यों की सटीकता, तर्कों की गहराई और नैतिकता की अटलता का अनुपम समन्वय था। ब्रिटिश शासन के कठोर नियंत्रण और प्रेस पर लगाम के बावजूद उन्होंने निष्पक्षता और साहस के साथ पत्रकारिता की मशाल जलाए रखी। उनके संपादकीय और लेख आज भी पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत हैं। उन्होंने पत्रकारिता को न केवल एक पेशा, बल्कि एक शक्तिशाली हथियार बनाया, जो अन्याय के खिलाफ लड़ता था और समाज को जागृत व संगठित करने में अग्रणी भूमिका निभाता था। उनकी यह शैली आधुनिक पत्रकारों को सिखाती है कि सत्य और निष्पक्षता ही पत्रकारिता की आत्मा हैं।

गणेश शंकर विद्यार्थी के जीवन का सबसे प्रेरक पहलू उनका सर्वोच्च बलिदान है। 1931 में कानपुर के सांप्रदायिक दंगों की भयावह आग में, जब समाज हिंसा की चपेट में था, विद्यार्थी ने अपनी जान की परवाह किए बिना शांति का संदेश लेकर सड़कों पर कदम रखा। लोगों को समझाने और हिंसा रोकने के इस प्रयास में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनका यह बलिदान न केवल उनके सत्य, अहिंसा और मानवता के प्रति अटूट समर्पण का प्रतीक है, बल्कि यह भी सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो संकट की घड़ी में समाज के लिए सर्वस्व न्योछावर करने से न डरे। उनका यह त्याग हमें आज भी मानवता और एकता के लिए जीने की प्रेरणा देता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी की जयंती, 26 अक्टूबर, केवल उनके जन्म का स्मरण नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीवंत रखने का एक पवित्र अवसर है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक बेड़ियों से मुक्ति नहीं, बल्कि समाज से अन्याय, अशिक्षा और असमानता का उन्मूलन भी है। आज के दौर में, जब समाज फिर से विभाजन और असमानता की खाई में फँसता दिख रहा है, विद्यार्थी के विचार और कर्म हमें प्रेरित करते हैं कि साहस, सत्य और समाज सेवा के बल पर ही एक न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है। उनकी लेखनी और बलिदान की गूँज आज भी हमें अपने कर्तव्यों के प्रति जागृत करती है, हमें समाज के लिए सार्थक योगदान देने को प्रेरित करती है।

गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन एक प्रज्वलित मशाल है, जो अंधकार में भी मार्गदर्शन करती है। उनकी पत्रकारिता, उनके विचार और उनका सर्वोच्च बलिदान हमें सिखाते हैं कि सत्य और न्याय के लिए संघर्ष ही जीवन का सच्चा उद्देश्य है। उनकी जयंती पर हमें यह प्रण लेना होगा कि उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए हम समाज में जागरूकता, समानता और सत्य की स्थापना के लिए अथक प्रयास करेंगे। उनका जीवन यह दर्शाता है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल हों, सत्य और मानवता के लिए समर्पित जीवन ही वास्तव में अर्थपूर्ण है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

'मोंथा' तूफान आंध्र प्रदेश में दस्तक देगा, 28 तारीख तक यह भीषण चक्रवाती तूफान में तब्दील हो जाएगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: चक्रवात 'मोंथा' आंध्र प्रदेश में दस्तक देगा। यह और भी तेज़ हो जाएगा और 27 तारीख की सुबह दक्षिण-पश्चिम और उससे सटे पश्चिम-मध्य चक्रवाती तूफान में बदल जाएगा। यह उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ेगा और आंध्र प्रदेश के तट की ओर बढ़ेगा। 28 तारीख तक 'मोंथा' एक भीषण चक्रवाती तूफान में बदल जाएगा। 28 तारीख की शाम और रात के आसपास, जब काकीनाडा मछलीपट्टनम-कलिंगपट्टनम होते हुए लैंडफॉल करेगा, तब तूफान के लैंडफॉल की संभावना है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, लैंडफॉल के समय हवा की गति 90 से 100 किमी प्रति घंटा, जो बढ़कर 110 किमी प्रति घंटा तक पहुँच सकती है, रहने की संभावना है। मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी गई है। हालांकि, तूफान का ओडिशा पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। 27 से 29 तारीख तक ओडिशा के विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश होने की संभावना है। खासकर 27 और 29 तारीख के बीच मलकानगिरी और कोरापुट में भारी से बहुत भारी बारिश और दक्षिण व तटीय ओडिशा में मध्यम से भारी बारिश की संभावना है। मौसम विज्ञानी बिस्वजीत साहू ने इसकी जानकारी दी है।

27 तारीख को गंजम, गजपति और रायगढ़ में बहुत भारी बारिश के चलते ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इसके अलावा, केंद्रपाड़ा, जगतसिंहपुर, कटक, नयागढ़, खोरधा, पुरी, कोरापुट, नवरंगपुर, कालाहांडी, कंधमाल, नुआपाड़ा, बलांगीर, बौध, सोनपुर, मलकानगिरी में भारी बारिश के चलते येलो अलर्ट जारी किया गया है, जबकि पूरे राज्य में हल्की बारिश की चेतावनी जारी की गई है।

28 तारीख को 10 तटीय और दक्षिणी जिलों में ऑरेंज अलर्ट और 13 जिलों में येलो अलर्ट जारी किया गया है। 28 तारीख को केंद्रपाड़ा, कटक, जगतसिंहपुर, खोरधा, पुरी, गंजम, गजपति, रायगढ़, कोरापुट और मलकानगिरी में बहुत भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इसके साथ ही, 14 तटीय जिलों में भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है।

बोकारो के बाद कडोरमा में डीएमएफटी फंड घोटाला जांच कराएं मुख्यमंत्री: बाबूलाल- नेता प्रतिपक्ष

डीसी आदित्य रंजन –प्राजंल मोदी के रिश्तों एवं स्कील डेवलपमेंट ,तितली फाउंडेशन के नाम हुई लूट उजागर हो

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, प्रदेश अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी सह नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने प्रदेश झारखंड सरकार पुन आरोप लगाया है। मरांडी ने आरोप लगाते हुए कहा कि राज्यभर में डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन ट्रस्ट फंड घोटाला हुआ है। इस घोटाले में बोकारो सिर्फ एक झांकी है, असल में यह भ्रष्टाचार पूरे झारखंड में फैला है। अब कोडरमा और धनबाद से भी घोटाले के नए तथ्य सामने आ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि मिली जानकारी के अनुसार, कोडरमा में डीसी रहते हुए आदित्य रंजन ने डीएमएफटी फंड से स्किल डेवलपमेंट के नाम पर एमईपीएससी और तितली फाउंडेशन के साथ मिलकर जमकर लूट मचाई। अब जब वे धनबाद के डीसी बने हैं, तो वही खेल दोबारा शुरू हो गया है। एमईपीएससी और तितली फाउंडेशन के साथ सांठगांठ कर डीएमएफटी फंड को फिर से लूटा जा रहा है। इस लूट की स्क्रिप्ट इतनी चालाकी से लिखी गई है कि टेंडर की शर्तों में बदलाव कर मनचाही कंपनियों को फायदा पहुंचाया जा रहा है।

बाबूलाल मरांडी ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से आग्रह है कि कोडरमा में वर्ष 2022–24 के दौरान डीएमएफटी फंड के उपयोग की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। साथ ही, आदित्य रंजन और प्रांजल मोदी के बीच के रिश्तों की भी पड़ताल की जाए। उन्होंने मांग की कि धनबाद में डीएमएफटी फंड से जुड़ी सभी चल रही टेंडर प्रक्रियाओं को तत्काल रोककर निष्पक्ष जांच सुनिश्चित की जाए।

सोशल मीडिया - बिहार चुनाव 2025 का खूनी डिजिटल युद्धक्षेत्र – वोटरों के खून-पसीने से रची तलवार, या सांप्रदायिक आग का प्रलयंकारी तांडव या कृत्रिम भ्रमजाल -- डॉ राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

पटना: गंगा के लहू-रंगे तट से चीखती आवाज – सुनो, ऐ बिहार ! तेरी पवित्र धरती, जहां बुद्ध की शांति ने कभी शांति का संदेश दिया था, आज एक खतरनाक डिजिटल तूफान में लोकतंत्र डूब रही,जनता की आवाज डूब रही है ! विधानसभा चुनाव 2025 का रणांगण अब पोस्टरों और सभाओं का नहीं, बल्कि सोशल मीडिया के समुद्र में तैरते वायरल रील्स और एआई की जहरीली साजिशों का अखाड़ा बन चुका है ! जाति की पुरानी दुश्मनी अब स्क्रीन पर उछल रही है – एक क्लिक में गांव जल उठते हैं, एक शेयर में परिवार बंट बिखर जाते हैं ! वैश्विक आंकड़े चिल्लाकर कह रहे हैं: सोशल वीडियो की भूख 52% से 65% उछल चुकी, और बिहार के युवा ? वे तो 72% से भी ज्यादा इस जाल में फंसे, जहां मनोरंजन की आड़ में सक्रियता का खून बह रहा ! क्या यह लोकतंत्र की चमकती तलवार है, जो वोटरों को मुक्त करेगी ? या फिर ध्रुवीकरण का काला नाग, जो बिहार में लोकतंत्र को स्वतः निगल लेगा ? आइये, इस प्रलयंकारी महायुद्ध की आग में झांकें व इसका विश्लेषण करें – जहां हर लाइक एक गोली, हर कमेंट एक चाकू ! और हर शेयर एक नफरत की दीवार

सशक्तिकरण का उन्मादी नृत्य - युवाओं का विद्रोही उदय, या उलझता फंसता जाल ?

बिहार के बागी तेवर वाले युवाओं ! सोशल मीडिया ने तुम्हें देवता बना दिया – टिकटॉक की रील्स में लालू की विरासत गूंज रही, नीतीश का 'विकास' इंस्टाग्राम पर चमक रहा ! 42% योद्धा चिल्ला रहे: "यह हमारा हथियार है – राजनीति में कूदने का !" ग्रामीण व्हाट्सएप ग्रुप्स में जाति की जंगें नई जान पा रही, आरजेडी-जेडीयू के एआई ऐड्स जाति-उम्र-गांव के हिसाब से जहर उगल रहे ! पटना की गलियों में एक छात्र चीखा -₹रैली ? वह तो कल की बात थी ! अब एक रील ही मेरी सभा है – वोट का फैसला उसी में !" यह नृत्य है सशक्तिकरण का – नई पीढ़ी सियासत की आग में कूद रही, मोबिलाइजेशन का ज्वार उफान मार रहा ! लेकिन सावधान ! यह उन्माद कहीं विद्रोह न बन जाए क्षतिकारक ना बन जाए – जहां हर शेयर एक क्रांति, हर वायरल एक तख्तापलट !

प्रलय की काली परछाईं: मिसइन्फॉर्मेशन का राक्षसी जाल, ध्रुवीकरण का खूनी तांडव !

अब सुनो वह भयानक गुर्राहट ! एल्गोरिदम्स के दानव इको चैंबर्स रच रहे – जातिगत रील्स वायरल होकर सांप्रदायिक आग व उन्माद भड़का रही ! बिहार पुलिस के द्वारा रणनीतिक चेतावनी- "प्रोवोकेटिव कास्ट गाने ? सजा मिलेगी ध्यान रहे –कहीं गांव न जल उठें !₹ चुनाव आयोग का गरजदार फरमान- एआई कंटेंट लेबल करो, डीपफेक का दुष्ट खेल बंद करो, फर्जी ऐड्स उखाड़ फेंको ! मगर 49 मिलियन फर्जी भूत – एशिया के सिम फार्म्स से उभरे – विमर्श को चीर रहे, 'फेक न्यूज' की बाढ़ अविश्वास का महासागर रच रही ! बिहार का डिजिटल युद्धक्षेत्र ? व्हाट्सएप बॉट्स और एआई का 'पॉलिटिक्स 3.0' – युवा अधिभार से चूर, वोट से भाग रहे !

टफ्ट्स की चीख: "सूचना का जहर वोट को मार डालता है !₹ जाति की पुरानी चिंगारियां अब ऑनलाइन भड़क रही – एक रील, और पूरा गांव लहूलुहान ! विचार रक्तरंजीत !

2025 का उन्मादी परिवर्तन -वीडियो का राजसिंहासन, एआई का राक्षसी अवतरण !

इस चुनावी प्रलय में, खबरों का राजा सोशल वीडियो और पॉडकास्ट्स – त्वरित, व्यक्तित्वों का उन्माद ! एनवाईयू का भयावह आगाज: "डिजिटल आजादी गेटकीपर्स को कुचलती, लेकिन इको का दानव जन्म लेता !"बिहार में नैरेटिव्स टूट-फूट रहे, एआई उत्तर और बॉट कथाएं ध्रुवीकरण को पंख दे रही ! एक एक्स की गर्जना: "बिहार 2025 गरज रहा ! एआई ऐड्स, बॉट्स और सोशल वॉर्स – सेंटर स्टेज पर खूनी नाटक लगातार बेधड़क !"

ऐ बिहार, - सोशल मीडिया ने राजनीति को आकाश छू लिया, लेकिन लोकतंत्र को खून से नहला भी दिया ! मीडिया साक्षरता का तीर चला, प्लेटफॉर्म्स को बांध – वरना बॉट्स की सेना असली आवाजों को कुचल डालेगी ! चुनावी घड़ी का काल आरंभ हो गया टिक-टिक... टिक-टिक... निर्णय तेरे हाथ में, ऐ बिहार ! ऐ बिहार के जनसमुद्र क्या इस तांडव से जीत सकोगे ? या जलकर राख हो जाएगा लोकतंत्र ? उठो, जागो, दौड़ो,चीखो, लड़ो और जीतो क्योंकि वक्त आ गया ! लोकतंत्र के असली जीत का बिहार के विजय ! बिहारीयों के जय का !

घाटशिला में तीन पंचायत के लोगों ने किया वोट बहिष्कार का ऐलान

वनोपज पर आश्रित, बुनियादी सुविधाओं से वंचित, वोटरों ने नेताओं का बखिया उधेड़ा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, घाटशिला विधानसभा क्षेत्र के गुड़ाबांदा प्रखंड के तीन ग्रामीण क्षेत्र -राजाबासा, पावडाडीह और मूटकामकोचा-के निवासियों ने आगामी 11 नवंबर को होने वाले उपचुनाव में सामूहिक वोट बहिष्कार का निर्णय लिया है. ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र से नक्सल समस्या समाप्त हुए वर्षों बीत चुके हैं, लेकिन सरकार और जनप्रतिनिधियों की अनदेखी के कारण आज भी वे बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं.

गांव के रास्ते, स्वास्थ्य और जल आपूर्ति जैसी सुविधाओं का बेहद अभाव है. चिरुगोड़ा से पावडाडीह तक 4 किलोमीटर सड़क नहीं है और मार्ग में पाँच पहाड़ी नाले जानलेवा साबित हो चुके हैं. बारिश के दिनों में इन नालों को पार करना लोगों के लिए जान जोखिम में डालना होता है, जिससे अब तक तीन ग्रामीण अपनी जान गंवा चुके हैं. इसी प्रकार, विद्यालय में बच्चों के लिए पेयजल की व्यवस्था नहीं है—एक मात्र जलमीनार पिछले डेढ़ साल से बंद पड़ा है. बच्चों को खेत के बहते पानी का सहारा लेना पड़ता है. स्वास्थ्य से लेकर आवास योजनाओं तक स्थानीय प्रशासन की लापरवाही दिखती है, जिससे 250 से 300 वोटर अब भी विकास की मुख्यधारा से दूर हैं.

ग्रामीणों का आरोप है कि सरकार और नेता हर चुनाव से पहले वादे करते हैं, परन्तु चुनाव के बाद स्थिति जस की तस रहती है. जंगल से उपज मिलने पर ही चूल्हा जलता है और सरकारी राशन बहुत दूर जाकर लाना पड़ता है, जो जरूरत के अनुसार पूरा नहीं पड़ता. कई बार शिकायत के बावजूद कोई समाधान नहीं हुआ.

राजाबासा, पावडाडीह और मूटकामकोचा के ग्रामीणों ने 'विकास नहीं तो वोट नहीं' की तख्ती लेकर सरकार, मंत्री, सांसद और विधायकों के प्रति नाराजगी जताई है. ग्रामीण प्रधानों एवं स्थानीय लोगों ने स्पष्ट कहा कि जब तक रोड, पुल, पानी जैसी सुविधाएँ नहीं मिलेंगी, वे वोट नहीं देंगे.

अमृतसर में दो आईईडीज़ और एक पिस्तौल सहित आतंकवादी मॉड्यूल का मुख्य संचालक गिरफ्तार

गिरफ्तार किया गया आरोपी पाकिस्तान स्थित मास्टरमाइंड से जुड़े आर्मेनिया, यूके और जर्मनी आधारित आपने हैंडलरों के इशारों पर काम कर रहा था : डीजीपी गौरव यादव

जांच के अनुसार पाकिस्तान-आधारित हैंडलर ने जब्त की गई खेप अजनाला सेक्टर में ड्रोन के माध्यम से भेजी थी : एआईजी एसएसओसी अमृतसर सुखमिंदर मान

अमृतसर, 25 अक्टूबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के तहत पंजाब को एक सुरक्षित राज्य बनाने के अभियान के दौरान बड़ी सफलता हासिल करते हुए, स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल (एसएसओसी) अमृतसर ने एक आतंकवादी मॉड्यूल के मुख्य संचालक को गिरफ्तार करके उसके कब्जे से लगभग 2.5-2.5 किलोग्राम वज़न वाले दो इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आइइडीज़), जो हाई-ग्रेड आरडीएक्स से धातु के कन्टेनरों में पैक किए गए थे और धमाके के लिये टाइमरों से लैस थे, तथा एक आधुनिक .30 बोर पिस्तौल और गोला-बारूद बरामद किए गए हैं। यह जानकारी आज यहां पंजाब पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान मनप्रीत सिंह उर्फ टिड्डी, निवासी गांव कोटला तरखाना, अमृतसर के रूप में हुई है। यह व्यक्ति आपराधिक पृष्ठभूमि वाला है और इसके खिलाफ थाना सदर बटाला और कलानौर में दो आपराधिक मामले दर्ज हैं। गुरदासपुर और अमृतसर की जेलों में लगभग डेढ़ साल की सज़ा पूरी करने के बाद इसे फरवरी 2025 में रिहा किया गया था और जेल से बाहर आने के बाद उसने फिर से आपराधिक गतिविधियां शुरू कर दीं। डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच में खुलासा हुआ है कि यह आरोपी आर्मेनिया, यूनाइटेड किंगडम (यूके) और जर्मनी में स्थित अपने हैंडलरों के निर्देशों पर काम कर रहा था, जिन्हें एक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन के पाकिस्तान-स्थित मास्टरमाइंड से आदेश मिल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस मामले के अन्य संबंधों का पता लगाने और पूरे नेटवर्क को उजागर करने के लिए आगे की जांच जारी है।

इस ऑपरेशन के बारे में जानकारी देते हुए एआईजी एसएसओसी अमृतसर सुखमिंदर सिंह मान ने बताया कि गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए टीम ने संदिग्ध मनप्रीत सिंह उर्फ टिड्डी को गिरफ्तार किया और उसके पास से .30 बोर की पिस्तौल और कारतूस बरामद किए। आरोपी के खुलासे पर गांव कोटला तरखाना क्षेत्र से दो आइइडीज़ भी बरामद की गईं, जो हाई-ग्रेड आरडीएक्स से धातु के कन्टेनरों में पैक की गयी थीं और धमाके के लिये टाइमरों से लैस थीं।

एआईजी ने बताया कि जांच में यह भी सामने आया कि लगभग दो हफ्ते पहले, जब्त की गयी यह खेप पाकिस्तान-आधारित हैंडलर द्वारा अजनाला सेक्टर में ड्रोन के जरिए भेजी गई थी। गिरफ्तार व्यक्ति ने यह खेप प्राप्त कर अपने गांव कोटला तरखाना के पास एक नहर के किनारे छिपा दी थी। उसके हैंडलरों ने उसे सतर्क रहने और इन आइइडीज़ को इच्छित प्रयोग के लिये किसी अन्य व्यक्ति को सौंपने के लिए अगले आदेशों की प्रतीक्षा करने को कहा था। इस संबंध में एफआईआर नंबर 63, दिनांक 25.10.2025 को आर्म्स एक्ट की धारा 25, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 3, 4 और 5, तथा भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 111 और 61(2) के तहत थाना एसएसओसी अमृतसर में दर्ज की गई है।

चाईबासा में थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चे को चढ़ाया गया लाईलाज एड्स का खून

बदले की भावना से ग्रस्त होकर चढ़ाया गया एचआईवी खून :माधव कुंकल, जीप सदस्य

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा, झारखंड में संक्रमित एच आईबी खून चढ़ाने का एक मामला पुनः उभरा है । अब पश्चिमी सिंहभूम में एक सात वर्षीय थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चे के माता-पिता ने चाईबासा ब्लड बैंक द्वारा एचआईवी संक्रमित रक्त बच्चे को चढ़ाने का आरोप लगाया। इसके बाद मामला तुल पकड़ने से हड़कंप मचा हुआ है ।

अधिकारी ने बताया कि आरोप की जांच के लिए तीन सदस्यीय सरकारी टीम का गठन किया गया है। एचआईवी संक्रमण से एड्स जैसी लाइलाज और जानलेवा बीमारी होती है।

जिला सिविल सर्जन डॉ. सुशांतो माझी के अनुसार ''पीड़ित को ब्लड बैंक आने के बाद से 25 यूनिट रक्त चढ़ाया जा चुका है। ब्लड बैंक सभी थैलेसीमिया रोगियों को निःशुल्क रक्त उपलब्ध कराता है। हालांकि, एक सप्ताह पहले उसके एचआईवी से संक्रमित होने की पुष्टि हुई। उसके माता-पिता ने ब्लड बैंक पर संक्रमित रक्त चढ़ाने का आरोप लगाया है।''

आरोप की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है।

उन्होंने बताया कि टीम गहन जांच के बाद जल्द ही अपनी रिपोर्ट देगी। आगे उन्होंने कहा कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले हर उस रक्तदाता की जांच की जाएगी जिसका रक्त पीड़ित को चढ़ाया गया है।

उधर मंझारी प्रखंड के जिला परिषद सदस्य माधव चंद्र कुंकल ने आरोप लगाया कि जिस बच्चे को एचआईवी पाजिटिव रक्त चढ़ाया गया, उसी की बुआ के साथ एक साल पहले ब्लड बैंक कर्मचारी मनोज कुमार द्वारा दुर्व्यवहार किया गया था।

इस मामले में सदर थाना में केस भी दर्ज किया गया था और मामला अदालत में चल रहा है। उन्होंने दावा किया कि बदले की भावना से यह घटना हुई है और मांग की कि उच्च स्तरीय जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

हेमंत सोरेन को पंजाब के मंत्रियों ने गुरू तेग बहादुर शहीद दिवस पर किया आमंत्रित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में पंजाब के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ० बलबीर सिंह तथा राजस्व, पुनर्वास एवं आपदा प्रबंधन मंत्री हरदीप सिंह मुंडियां ने सौजन्य मुलाकात की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री को पंजाब सरकार के दोनों मंत्रियों ने 9वें सिख गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले विशेष कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु सादर आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री को उन्होंने अवगत कराया कि यह आयोजन गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान, समर्पण, त्याग, आदर्श एवं जनकल्याण के प्रति उनके संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन में देशभर के संत महात्माओं सहित विभिन्न राज्यों के गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित किया गया है। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने पंजाब सरकार की ओर से मिले आमंत्रण हेतु दोनों मंत्रियों के प्रति धन्यवाद प्रकट किया तथा आयोजन की सफलता के लिए उन्हें अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की ।

धन धन बाबा दंदू राम बैरागी जी के पवित्र डेरे में महंत बलदेव राज बैरागी जी का जन्मदिन बड़े ही आदर, सत्कार और धार्मिक उत्साह के साथ मनाया गया

अमृतसर 25 अक्टूबर (साहिल बेरी)

इस पावन अवसर पर संगतों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर भाग लिया।समारोह के दौरान महंत बलदेव राज बैरागी जी ने संगतों के साथ मिलकर केक काटा और अपने जन्मदिन की खुशी सभी के साथ साझा की। संगतों ने महंत जी की लंबी उम्र, अच्छे स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अरदास की।इस अवसर पर बोलते हुए महंत बलदेव राज बैरागी जी ने कहा कि डेरे का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना, आपसी प्रेम और एकता का संदेश देना है। उन्होंने कहा कि संगतों का प्रेम और सहयोग ही उनके लिए सबसे बड़ा उपहार है।समारोह के दौरान डेरे के सेवादारों की ओर से लंगर का विशेष प्रबंध किया गया, जिसमें संगतों ने प्रसाद ग्रहण किया। सभी उपस्थित श्रद्धालुओं ने महंत जी को शुभकामनाएँ दीं और डेरे द्वारा चलाई जा रही सेवाओं की सराहना

सरायकेला के सुरम्य परिवेश पर अवैध उत्खनन, विभाग ने जप्त किये एक्सकेवेटर ,ड्रीलर, पत्थर

मिरगीचीडा से कंटंगा तक प्रकृतिक परिवेश व वन्यजीवों को कब मिलेगा सुरक्षा ?

कार्तिक, कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। इस अंचल स्थित संप्रति मुडकुम पंचायत जो पूर्व में जोरहीहा पंचायत रहा, वहां के खरखाई नदी तट पर मौजा जोरडिहा में जारी वैध -अवैध लघु खनीज संपदा कारोबार पर डीसी के निर्देश में जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी ने बड़ी कारवाई की है । अब सवाल आता है वन्यजीवों के आश्रय स्थली पर खनन, उद्योग क्यों ?

विगत दो दशकों में जारी पत्थर उत्खनन कार्य में मौजा – जोरडीहा (मुड़कुम) में अवैध पत्थर खनन, भंडारण एवं परिवहन के विरुद्ध औचक निरीक्षण अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान उक्त स्थल पर दो हाइड्रोलिक एक्सकैवेटर, दो ड्रिलिंग मशीन तथा लगभग 32,500 घनफीट पत्थर खनिज पाया गया। स्थल पर वैध कागजात प्रस्तुत नहीं किए जाने पर सभी जब्त खनिज एवं यंत्रों को विधिवत जब्त कर सरायकेला थाना को सुपुर्द किया गया।

सनद रहे कि इस इलाके से लेकर राजनगर अंचल अधीन खरखाई नदी तट पर कभी बड़े पैमाने पर अवैध पत्थर उत्खनन चलाता था । 2010 के इस पास रांची में बैठे अर्थललुप अधिकारियो द्वारा व्यवसायी एवं माफिआओं को अनेक कीमती पहाड़ लीज पर दी गयी, प्राकृतिक परिवेश को नष्ट किया गया । जहां उनके जरिये हैवी ब्लास्टिंग की गयी । परिणाम यह रहा कि राजे राजबडे समय से संरक्षित रहने वाले तेंदुआ ,बाघ आदि अनेक वन्यजीव भी भागने पर मजबूर हो गये । यह मनोरम इलाका राजनगर के कटंगा , धोलाडीह पंचायत से सरायकेला के निकट मिरगीचिंडा तक व्याप्त था । अब प्रश्न उठता है जब निकट स्थित सारंडा एवं मयूरभंज के शिमलीपाल अभ्यारण घोषित किया जा सकता है , पर्यटन को प्रोत्साहन दी जा रहि है तो यहां सुरम्य वादियों में खरखाई नदी को प्रदुषित क्यों किया जा रहा है ?यहां अतीत से रह रहे वन्यजीवों को संरक्षण क्यों नहीं दिया जा रहा ?

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023